सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 48, नई दिल्ली । सेमवार, 28 अप्रैल 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

सहनशील होना अच्छी बात है, पर अन्याय का विरोध करना उससे भी उत्तम है।

03 यदि दुश्मन की कमर तोड़नी है तो....

06 पारग्रही जीवन के संकेतों की तलाश में बड़ा कदम

08 पुलिस के पीछा करने पर दो पिकअप ट्रक पलटे, चालक की मौत, तीन गायें मरीं

"परिवहन विशेष" हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के द्वितीय सम्मान समारोह में सम्मान प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए गूगल फार्म को भरकर जमा करे। आपके फार्म जमा करने के बाद जूरी द्वारा जांच कर आपको ईमेल/व्हाट्सएप से सम्मान समारोह का निमंत्रण भेजा जाएगा।

https://docs.google.com/forms/d/e/1FAIpQLSeK5Go2e5KD4m1v82E-oGAISA7BAXqX5hTm31j9OLZG4fifCA/viewform?usp=dialog

सम्मान हेतु योग्यता।।

परिवहन, सड़क सुरक्षा, प्रदुषण नियंत्रण, महिला सुरक्षा एवं अन्य किसी भी श्रेणी/क्षेत्र में आप जनहित में कार्य कर रहे है या करते है तो आप परिवहन विशेष हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के द्वितीय सम्मान समारोह में अपना सम्मान प्राप्त करने के लिए... अपना परिचय, कार्य शैली, कार्य क्षेत्र एवं किस आधार पर सम्मान प्राप्त करने में योग्य हैं।

transportvisheshcontent@gmail.com Switch account

The name, email, and photo associated with your Google account will be recorded when you upload files and submit this form

* Indicates required question

अधिकृत मानदंड *

- नाम
- संस्था
- ट्रस्ट
- अन्य
- Other:

आपका या संस्थान परिचय *

Your answer

सम्मान श्रेणियां *

- परिवहन
- महिला सुरक्षा
- सड़क सुरक्षा
- प्रदूषण नियंत्रण
- लेखाकार
- कवि
- कवित्री
- प्रदूषण मुक्त वाहन निर्माता (इलेक्ट्रिक वाहन)
- सुरक्षा नियंत्रित उपकरण निर्माता
- वाहन स्क्रैप डीलर
- उग्रवाद सुरक्षा जागृति
- पत्रकार
- ऐंकर
- Other:

परिचय पत्र (आधार अंक या पंजीकरण प्रमाण पत्र) *

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

आपके द्वारा लागू किया जा रहे मानदंडों को साबित करने के लिए साक्ष्य *

Upload 1 supported file. Max 10 MB.

Add file

परिवहन सम्मान श्रेणियां *

- सार्वजनिक सेवा
- छात्र वाहन सेवा
- यात्री बस सेवा
- यात्री कार सेवा
- लॉजिस्टिक सेवा
- ड्राइवर कल्याण सेवा
- बस कल्याण सेवा
- लॉजिस्टिक्स कल्याण सेवा
- N.A. (अगर आप किसी ओर श्रेणी से भाग ले रहे हैं)
- Other:

Submit Clear form

क्या परिवहन आयुक्त झुलझूली के लिए नए कॉन्ट्रैक्टर का टैंडर खुलने के बाद भी पुराने कॉन्ट्रैक्टर का एक बार फिर कॉन्ट्रैक्ट को एक्सटेंशन देंगे

संजय बाटला

नई दिल्ली। हम आपको पहली भी कई बार बता चुका हैं की परिवहन आयुक्त झुलझूली वाहन जांच केंद्र के कॉन्ट्रैक्टर के ऑपरेशन और मेंटेनेंस के कॉन्ट्रैक्ट के खत्म होने के बाद से ही बार बार कॉन्ट्रैक्ट का एक्सटेंशन करते आ रहे है। इस बार फिर से यह सवाल जोरो पर जिस कॉन्ट्रैक्टर को भरपूर फायदा पहुंचाने के उद्देश्य से दिल्ली के व्यवसायिक वाहन मालिकों तक को परेशानी में डाल कर और बेखौफ होकर कॉन्ट्रैक्ट का एक्सटेंशन कर रहे हैं को ही फिर से एक्सटेंशन देने के इच्छुक है?

आपकी जानकारी के लिए बता दें की पिछले महीने ही एक अन्य कॉन्ट्रैक्टर द्वारा टैंडर प्रक्रिया में झुलझूली वाहन जांच केंद्र की मशीनों के ऑपरेशन और मेंटेनेंस के कॉन्ट्रैक्ट में सफलता हासिल कर ली थी पर आज तक उसको अवॉर्ड पत्र जारी नही किया गया।

सत्यता की जांच करने पर पता चला की पहले जब झुलझूली के कॉन्ट्रैक्टर का टैंडर खत्म होने वाला था तब भी परिवहन विभाग द्वारा टैंडर प्रक्रिया की गई थी और उसमें कोई अन्य कॉन्ट्रैक्टर टैंडर प्राप्त करने में सफल हुआ था पर परिवहन आयुक्त ने उस कंपनी को अवार्ड लेटर जारी नही किया था और नई टैंडर प्रक्रिया पूरी होने के बाद उस कंपनी द्वारा दिल्ली उच्च न्यायालय में केस डाला गया है जिसका बहाना लेकर परिवहन आयुक्त नई कंपनी को अवार्ड लेटर जारी नही कर रहे।

आज फ़िर वही स्थिति है की परिवहन आयुक्त द्वार टेंडर में सफल हुई कंपनी को अवार्ड पत्र जारी नही किया गया। और विश्वस्त सूत्रों की माने तो 31 अप्रैल को पुर्व में जारी किया गया एक्सटेंशन समाप्त हो जाएगा। अभी तक परिवहन आयुक्त ने नई सफल कंपनी को अवार्ड पत्र जारी नही किया है इसका अर्थ माना जाए की "**परिवहन आयुक्त**" फिर से पूर्व से चल रही कंपनी को ही एक्सटेंशन जारी करेंगे और सफल नई कंपनी को अवार्ड पत्र जारी नही कर पूर्व कंपनी को ही फायदा पहुंचाएंगे। **आखिर क्यों है दिल्ली परिवहन आयुक्त को इस कंपनी से इतना लगाव** जिसके प्रति वाहनों की जांच की क्षमता से भी कई गुणा अधिक वाहन मालिकों को अपने वाहन वही से जांच कराने के आदेश तक जारी कर रखे हैं।

राजधानी दिल्ली में रोड़ एक्सीडेंट में सबसे ज्यादा जान गंवाते हैं पैदल चलने वाले...

दिल्ली में पैदल चलने वालों की सुरक्षा खतरे में है। इस साल के शुरुआती तीन महीनों में 148 पैदल यात्रियों की सड़क दुर्घटनाओं में मौत हो गई। लापरवाही से वाहन चलाना और लोगों का गलत तरीके से सड़क पार करना मुख्य कारण हैं। फुटपाथ पर अतिक्रमण खराब लाइटिंग और पेड़ों की छंटाई न होने से भी हादसे बढ़ रहे हैं। `दिल्ली दुर्घटना` एक गंभीर समस्या है।

नई दिल्ली। शासन-प्रशासन के तमाम दावों, वादों और इंतजामों के बाद भी दिल्ली की सड़कों पर पैदल चलने वाले लोग सुरक्षित नहीं हैं। हादसों में सड़क पर दम तोड़ने वालों में सर्वाधिक पैदल यात्री ही हैं। इसके बाद दोपहिया वाहन चालकों का नंबर आता है।

आंकड़ों के मुताबिक, राजधानी में इस वर्ष के शुरुआती तीन महीनों में पैदल चलने वाले 148 लोगों की वाहनों की चपेट में आने से मौत हुई है, जबकि बीते वर्ष समान अवधि में पैदल चलने वाले 144 लोगों ने सड़कों पर दम तोड़ा था।

दोपहिया वाहन सवारों की संख्या में क्यों आई कमी?

जानकारों के अनुसार, पैदल यात्रियों की मौत के मामले में वाहन चालकों की लापरवाही के साथ ही शॉर्टकट तरीके से पैदल यात्रियों द्वारा सड़क पार करने का प्रयास भी बड़ा कारण है।

आंकड़ों के मुताबिक, इस वर्ष मार्च तक दोपहिया वाहन सवारों की संख्या में कमी दर्ज हुई है। जहां बीते वर्ष इसी अवधि में 166 दोपहिया वाहन सवारों की मौत हुई थी, वह इस वर्ष घटकर 126 हो गई है। इसके अलावा कार सवारों की मौत की संख्या भी जो बीते वर्ष 12 थी, इस वर्ष घटकर नौ रह गई है।

इन कारणों से पैदल यात्री हो रहे हादसों का शिकार

फुटपाथ पर रेहड़ी-पटरी विक्रेताओं का अतिक्रमण, सड़क पर चलना मजबूरी

रात में सड़कों पर लाइटिंग की व्यवस्था ठीक न होना

पेड़ों की छंटाई न होने से भी लोगों को फुटपाथ पर चलने में समस्या आती है

कई जगह रोड इंजीनियरिंग में कमी भी हादसों की वजह बनती है

सड़कों पर शॉर्ट कट है मौत का सबब

पैदल यात्रियों की मौत के मामले में वाहन चालकों की लापरवाही के साथ ही लोगों का सड़कों पर बेतरतीब शॉर्ट कट लेना भी हादसों का कारण है।

सड़कों के डिवाइडर पर किसी प्रकार ग्रिल कट जाने या टूट जाने से या फिर डिवाइडर के बीच में बने कट से निकलकर पैदल यात्री जान हथेली पर रख रोड क्रॉस करते हैं। इस तरह वह तेज रफ्तार वाहन चालकों की चपेट में आते हैं।

तीन माह में हादसों में हुई मौतें

इस वर्ष - बीते वर्ष

पैदल यात्री - 148 - 144

दोपहिया वाहन सवार - 126 - 166

कार सवार - 9 - 12

नोट : आंकड़े एक जनवरी से 31 मार्च तक के हैं।

भुवनेश्वर में 8 विमानों की इमरजेंसी लैंडिंग, यात्रियों में फ्लाइट को लेकर तनाव

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भुबनेश्वर : कोलकाता में काल बैसाखी। भुवनेश्वर अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर 8 विमानों की आपातकालीन लैंडिंग हुई। कोलकाता में काल बैसाखी के प्रभाव के कारण सभी आठ उड़ानों को भुवनेश्वर बीजू पटनायक हवाई अड्डे पर आपातकालीन लैंडिंग करानी पड़ी। यात्री 12 घंटे से अपने गंतव्य तक नहीं पहुंच पा रहे हैं।परिणामस्वरूप यात्रियों में असंतोष पैदा हो गया है। भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर तनाव की खबरें मिली हैं। रिपोर्ट के अनुसार, विमान दिल्ली से कोलकाता जा रहा था। हालाँकि, बाला वैशाखी के कारण कोलकाता में मौसम विमान के उतरने के लिए अनुकूल नहीं था। इस कारण शनिवार रात को भुवनेश्वर के बीजू पटनायक अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर सभी उड़ानें रोक दी गईं। हालांकि, शनिवार रात से लेकर आज तक सभी यात्री भुवनेश्वर हवाई अड्डे पर फंसे हुए हैं। इससे

यात्रियों में असंतोष पैदा हो गया है। हवाई अड्डे के गेट के सामने 25 से अधिक यात्री चिल्ला रहे थे और जयकारे लगा रहे थे। उनकी शिकायत यह है कि मौसम सुधरने के बाद भी विमानों को उनके गंतव्य तक नहीं भेजा जा रहा है। जिसके आधार पर हवाईअड्डे ने बताया कि शनिवार रात भुवनेश्वर में 8 उड़ानें उतरीं। इनमें से छह विमान पहले ही अपने गंतव्यों के लिए रवाना हो चुके हैं। अन्य दो उड़ानों में भी यात्री हैं। उन्हें भी शीघ्र ही उनके गंतव्य स्थान पर भेज दिया जाएगा।

आत्मा की सात अवस्थाएं

पंच केदार का अर्थ भगवान शिव के उन पांच मंदिरों से है, जहां भोलेनाथ ने पांडवों को दर्शन दिए थे। ये पंच केदार मंदिर केदारनाथ, तुंगनाथ, रुद्रनाथ, मध्यमहेश्वर और कल्पेश्वर है...

वेद अनुसार जन्म और मृत्यु के बीच और फिर मृत्यु से जन्म के बीच तीन अवस्थाएं ऐसी हैं जो अनवरत और निरंतर चलती रहती हैं। वह तीन अवस्थाएं हैं : जागृत, स्वप्न और सुषुप्ति। उक्त तीन अवस्थाओं से बाहर निकलने की विधि का नाम ही है हिन्दू धर्म। यह क्रम इस प्रकार चलता है- जागा हुआ व्यक्ति जब पलंग पर सोता है तो पहले स्वप्निक अवस्था में चला जाता है फिर जब नींद गहरी होती है तो वह सुषुप्ति अवस्था में होता है। इसी के उल्टे क्रम में वह सवेरा होने पर पुनः जागृत हो जाता है। व्यक्ति एक ही समय में उक्त तीनों अवस्था में भी रहता है। कुछ लोग जागते हुए भी स्वप्न देख लेते हैं अर्थात वे गहरी कल्पना में चले जाते हैं। जो व्यक्ति उक्त तीनों अवस्था से बाहर निकलकर खुद का अस्तित्व कायम कर लेता है वही मोक्ष के, मुक्ति के और ईश्वर के सच्चे मार्ग पर है। उक्त तीन अवस्था से क्रमशः बाहर निकला जाता है। इसके लिए निरंतर ध्यान करते हुए साक्षी भाव में रहना पड़ता है तब हासिल होती है : तुरीय अवस्था, तुरीयातीत अवस्था, भगवत चेतना और ब्राह्मी चेतना।

1. जागृत अवस्था अभी यह आलेख पढ़ रहे हो तो जागृत अवस्था में ही पढ़ रहे हो? ठीक-ठीक वर्तमान में रहना ही चेतना की जागृत अवस्था है लेकिन अधिकतर लोग ठीक-ठीक वर्तमान में भी नहीं रहते। जागते हुए कल्पना और विचार में खोए रहना ही तो स्वप्न की अवस्था है। जब हम भविष्य की कोई योजना बना रहे होते हैं, तो वर्तमान में नहीं रहकर कल्पना-लोक में चले जाते हैं। कल्पना का यह लोक यथार्थ नहीं एक प्रकार का स्वप्न-लोक होता है। जब हम अतीत की किसी याद में खो जाते हैं, तो हम स्मृति-लोक में चले जाते हैं। यह भी एक-दूसरे प्रकार का स्वप्न-लोक ही है। अधिकतर लोग स्वप्न लोक में जीकर ही मर जाते हैं, वे वर्तमान में अपने जीवन का सिर्फ 10 प्रतिशत ही जी पाते हैं, तो ठीक-ठीक वर्तमान में रहना ही चेतना की जागृत अवस्था है।

2. स्वप्न अवस्था जागृति और निद्रा के बीच की अवस्था को स्वप्न अवस्था कहते हैं। निद्रा में डूब जाना अर्थात सुषुप्ति अवस्था कहलाती है। स्वप्न में व्यक्ति थोड़ा जागा और थोड़ा सोया रहता है। इसमें अस्पष्ट अनुभवों और भावों का ताल मेल रहता है इसलिए व्यक्ति कब कैसे स्वप्न देख ले कोई भरोसा नहीं। यह ऐसा है कि भीड़ भरे इलाके से सारी ट्रेफिक लाइटें और पुलिस को हटाकर स्ट्रीट लाइटें बंद कर देना। ऐसे में व्यक्ति को झाड़ का हिलना भी भूत के होने को दर्शाएगा या रस्सी का हिलना सांप के पीछे लगने जैसा होगा। हमारे स्वप्न दिनभर के हमारे जीवन, विचार, भाव और सुख-दुख पर आधारित होते हैं। यह किसी भी तरह का संसार रच सकते हैं,

3. सुषुप्ति अवस्था गहरी नींद को सुषुप्ति कहते हैं। इस अवस्था में पांच ज्ञानेंद्रियां और पांच कर्मेंद्रियां सहित चेतना (हम स्वयं) विश्राम करते हैं। पांच ज्ञानेंद्रियां- चक्षु, श्रोत्र, रसना, घ्राण और त्वचा। पांच कर्मेंन्द्रियां- वाक, हस्त, पैर, उपस्थ और पायु। सुषुप्ति की अवस्था चेतना की निष्क्रिय अवस्था है। यह अवस्था सुख-दुःख के अनुभवों से मुक्त होती है। इस अवस्था में किसी प्रकार के कष्ट या किसी प्रकार की पीड़ा का अनुभव नहीं होता। इस अवस्था में न तो क्रिया होती है, न क्रिया की संभावना। मृत्यु काल में अधिकतर लोग इससे और गहरी अवस्था में चले जाते हैं।

4. तुरीय अवस्था चेतना की चौथी अवस्था को तुरीय चेतना कहते हैं। यह अवस्था व्यक्ति के प्रयासों से प्राप्त होती है। चेतना की इस अवस्था का न तो कोई गुण है, न ही कोई रूप। यह निर्गुण है, निराकार है। इसमें न जागृति है, न स्वप्न और न सुषुप्ति। यह निर्विचार और अतीत व भविष्य की कल्पना से परे पूर्ण जागृति है। यह उस साफ और शांत जल की तरह है जिसका तल दिखाई देता है। तुरीय का अर्थ होता है चौथी। इसके बारे में कुछ कहने की सुविधा के लिए इसे संख्या से संबोधित करते हैं। यह पारदर्शी कांच या सिनेमा के सफेद पर्दे की तरह है जिसके ऊपर कुछ भी प्रोजेक्ट नहीं हो रहा। जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति आदि चेतनाएं तुरीय के पर्दे पर ही घटित होती हैं और जैसी घटित होती हैं, तुरीय चेतना उन्हें हू-ब-हू हमारे अनुभव को प्रक्षेपित कर देती है। यह आधार-चेतना है। यहीं से शुरू होती है आध्यात्मिक यात्रा, क्योंकि तुरीय के इस पार संसार के दुःख तो उस पार मोक्ष का आनंद होता है। बस, छलांग लगाने की जरूरत है।

5. तुरीयातीत अवस्था तुरीय अवस्था के पार पहला कदम तुरीयातीत अनुभव का। यह अवस्था तुरीय का अनुभव स्थाई हो जाने के बाद आती है। चेतना की इसी अवस्था को प्राप्त व्यक्ति को योगी या योगस्थ कहा जाता है। इस अवस्था में अधिष्ठित व्यक्ति निरंतर कर्म करते हुए भी थकता नहीं। इस अवस्था में काम और आराम एक ही बिंदु पर मिल जाते हैं। इस अवस्था को प्राप्त कर लिया, तो हो गए जीवन रहते जीवन-मुक्त। इस अवस्था में व्यक्ति को स्थूल शरीर या इंद्रियों की आवश्यकता नहीं रहती। वह इनके बगैर भी सबकुछ कर सकता है। चेतना की तुरीयातीत अवस्था को ही सहज-समाधि भी कहते हैं।

6. भगवत चेतना तुरीयातीत की अवस्था में रहते-रहते भगवत चेतना की अवस्था बिना किसी साधना के प्राप्त हो जाती है। इसके बाद का विकास सहज, स्वाभाविक और निस्प्रयास हो जाता है।इस अवस्था में व्यक्ति से कुछ भी छुपा नहीं रहता और वह संपूर्ण जगत को भगवान की सत्ता मानने लगता है। यह एक महान सिद्ध योगी की अवस्था है।

7. ब्राह्मी चेतना भगवत चेतना के बाद व्यक्ति में ब्राह्मी चेतना का उदय होता है अर्थात कमल का पूर्ण रूप से खिल जाना। भक्त और भगवान का भेद मिट जाना। अहम् ब्रह्मास्मि और तत्वमसि अर्थात मैं ही ब्रह्म हूं और यह संपूर्ण जगत ही मुझे ब्रह्म नजर आता है।

इस अवस्था को ही योग में समाधि की अवस्था कहा गया है मतलब जीते-जी मोक्ष।

(((ॐ शान्ति)))

हम आपको पराकर्मी नागों के पृथ्वी पर जन्म लेने से सम्बंधित पौराणिक कहानी सुनाते है।

इन नागो से सम्बंधित यह कथा पृथ्वी के आदि काल से सम्बंधित है। इसका वर्णन वेदव्यास जी ने भी महाभारत के आदि पर्व में किया है। महाभारत के आदि पर्व में इसका वर्णन होने के कारण लोग इसे महाभारत काल की घटना समझते है, लेकिन ऐसा नहीं है। महाभारत के आदि काल में कई ऐसी घटनाओं का वर्णन है जो की महाभारत काल से बहुत पहले घटी थी लेकिन उन घटनाओ का संबंध किसी न किसी तरीके से महाभारत से जुड़ता है, इसलिए उनका वर्णन महाभारत के आदि पर्व में किया गया है।

नागो की उत्पत्ति कद्रू और विनता दक्ष प्रजापति की पुत्रियाँ थीं और दोनों कश्यप ऋषि को ब्याही थीं। एक बार कश्यप मुनि ने प्रसन्न होकर अपनी दोनों पत्नियों से वरदान माँगने को कहा। कद्रू ने एक सहस्र पराक्रमी सर्पों की माँ बनने की प्रार्थना की और विनता ने केवल दो पुत्रों की किन्तु दोनों पुत्र कद्रू के पुत्रों से अधिक शक्तिशाली पराक्रमी और सुन्दर हों। कद्रू ने 1000 अंडे दिए और विनता ने दो। समय आने पर कद्रू के अंडों से 1000 सर्पों का जन्म हुआ। पुराणों में कई नागो खासकर वासुकी, शेष, पद्म, कंबल, कार कोटक, नागेश्वर, धृतराष्ट्र, शंख पाल, कालाख्य, तक्षक, पिंगल, महा नाग आदि का काफी वर्णन मिलता है।

शेषनाग कद्रू के बेटों में सबसे पराक्रमी शेषनाग थे। इनका एक नाम अनन्त भी है। शेषनाग ने जब देखा कि उनकी माता व भाइयों ने मिलकर विनता के साथ छल किया है तो उन्होंने अपनी मां और भाइयों का साथ छोड़कर गंधमादन पर्वत पर तपस्या करनी आरंभ की। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने उन्हें वरदान दिया कि तुम्हारी बुद्धि कभी धर्म से विचलित नहीं होगी। ब्रह्मा ने शेषनाग को यह भी कहा कि यह पृथ्वी निरंतर हिलती-डुलती रहती है, अतः तुम इसे अपने फन पर इस प्रकार धारण करो कि यह स्थिर हो जाए। इस प्रकार शेषनाग ने संपूर्ण पृथ्वी को अपने फन पर धारण कर लिया। क्षीरसागर में भगवान विष्णु शेषनाग के आसन पर ही विराजित होते हैं। धर्म ग्रंथों के अनुसार भगवान श्रीराम के छोटे भाई लक्ष्मण व श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम शेषनाग के ही अवतार थे।

वासुकि नाग धर्म ग्रंथों में वासुकि को नागों का राजा बताया गया है। ये भी महर्षि कश्यप व कद्रू की संतान थे। इनकी पत्नी का नाम शतशीर्षा है। इनकी बुद्धि भी भगवान भक्ति में लगी रहती है। जब माता कद्रू ने नागों को सर्प यज्ञ में भस्म होने का श्राप दिया तब नाग जाति को बचाने के लिए वासुकि बहुत चिंतित हुए। तब एलापत्र नामक नाग ने इन्हें बताया कि आपकी बहन जरत्कारु से उत्पन्न पुत्र ही सर्प यज्ञ रोक पाएगा। तब नागराज वासुकि ने अपनी बहन जरत्कारु का विवाह ऋषि जरत्कारु से करवा दिया। समय आने पर जरत्कारु ने आस्तीक नामक विद्वान पुत्र को जन्म दिया। आस्तीक ने ही प्रिय वचन कह कर राजा जनमेजय के सर्प यज्ञ को बंद करवाया था। धर्म ग्रंथों के अनुसार समुद्रमंथन के समय नागराज वासुकी की नेती बनाई गई थी। त्रिपुरदाह के समय वासुकि शिव धनुष की डोर बने थे।

तक्षक नाग धर्म ग्रंथों के अनुसार तक्षक पातालवासी आठ नागों में से एक है। तक्षक के संदर्भ में महाभारत में वर्णन मिलता है। उसके अनुसार श्रृंगी ऋषि के शाप के कारण तक्षक ने राजा परीक्षित को डसा था, जिससे उनकी मृत्यु हो गयी थी। तक्षक से बदला लेने के उद्देश्य से राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय ने सर्प यज्ञ किया था। इस यज्ञ में अनेक सर्प आ-आकर गिरने लगे। यह देखकर तक्षक देवराज इंद्र की शरण में गया। जैसे ही ऋत्विजों (यज्ञ करने वाले ब्राह्मण) ने तक्षक का नाम लेकर यज्ञ में आहुति डाली, तक्षक देवलोक से यज्ञ कुंड में गिरने लगा। तभी आस्तीक ऋषि ने अपने मंत्रों से उन्हें आकाश में ही स्थिर कर दिया। उसी समय आस्तीक मुनि के कहने पर जनमेजय ने सर्प यज्ञ रोक दिया और तक्षक के प्राण बच गए। ग्रंथों के अनुसार तक्षक ही भगवान शिव के गले में लिपटा रहता है।

कर्कोटक नाग कर्कोटक शिव के एक गण हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार सर्पों की मां कद्रू ने जब नागों को सर्प यज्ञ में भस्म होने का श्राप दिया तब भयभीत होकर कंबल नाग ब्रह्माजी के लोक में, शंखचूड़ मणिपुर राज्य में, कालिया नाग यमुना में, धृतराष्ट्र नाग प्रयाग में, एलापत्र ब्रह्मलोक में और अन्य कुरुक्षेत्र में तप करने चले गए। ब्रह्माजी के कहने पर कर्कोटक नाग ने महाकाल वन में महामाया के सामने स्थित लिंग की स्तुति की। शिव ने प्रसन्न होकर कहा कि- जो नाग धर्म का आचरण करते हैं, उनका विनाश नहीं होगा। इसके उपरांत कर्कोटक नाग उसी शिवलिंग में प्रविष्ट हो गया। तब से उस लिंग को कर्कोटेश्वर कहते हैं। मान्यता है कि जो लोग पंचमी, चतुर्दशी और रविवार के दिन कर्कोटेश्वर शिवलिंग की पूजा करते हैं उन्हें सर्प पीड़ा नहीं होती।

धृतराष्ट्र नाग धर्म ग्रंथों के अनुसार धृतराष्ट्र नाग को वासुकि का पुत्र बताया गया है। महाभारत के युद्ध के बाद जब युधिष्ठिर ने अश्वमेध यज्ञ किया तब अर्जुन व उसके पुत्र ब्रभुवाहन (चित्रांगदा नामक पत्नी से उत्पन्न) के बीच भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में ब्रभुवाहन ने अर्जुन का वध कर दिया। ब्रभुवाहन को जब पता चला कि संजीवन मणि से उसके पिता पुनः जीवित हो जाएंगे तो वह उस मणि के खोज में निकला। वह मणि शेषनाग के पास थी। उसकी रक्षा का भार उन्होंने धृतराष्ट्र नाग को सौंप था। ब्रभुवाहन ने जब धृतराष्ट्र से वह मणि मागी तो उसने देने से इंकार कर दिया। तब धृतराष्ट्र एवं ब्रभुवाहन के बीच भयंकर युद्ध हुआ और ब्रभुवाहन ने धृतराष्ट्र से वह मणि छीन ली। इस मणि के उपयोग से अर्जुन पुनर्जीवित हो गए।

कालिया नाग श्रीमद्भागवत के अनुसार कालिया नाग यमुना नदी में अपनी पत्नियों के साथ निवास करता था। उसके जहर से यमुना नदी का पानी भी जहरीला हो गया था। श्रीकृष्ण ने जब यह देखा तो वे लीलावश यमुना नदी में कूद गए। यहां कालिया नाग व भगवान श्रीकृष्ण के बीच भयंकर युद्ध हुआ। अंत में श्रीकृष्ण ने कालिया नाग को पराजित कर दिया। तब कालिया नाग की पत्नियों ने श्रीकृष्ण से कालिया नाग को छोडने के लिए प्रार्थना की। तब श्रीकृष्ण ने उनसे कहा कि तुम सब यमुना नदी को छोड़कर कहीं ओर निवास करो। श्रीकृष्ण के कहने पर कालिया नाग परिवार सहित यमुना नदी छोड़कर कहीं ओर चला गया।

मुँह के छाले घरेलू उपचार

सौंफ को मुंह में रखकर चबाने से मुंह के छाले, पीब और दाने आदि खत्म हो जाते हैं।

भोजन करने के बाद थोड़ी सौंफ खाने से मुंह में नए छाले नहीं होते हैं।

सौंफ का चूर्ण बनाकर छालों पर लगाने से मुंह के छाले ठीक हो जाते हैं।

छोटी हरड़ को बारीक पीसकर छालों पर दिन में दो तीन बार लगाने से मुंह तथा जीभ दोनों के छाले ठीक हो जाते हैं।

तुलसी की चार पाँच पत्तियां रोजना सुबह और शाम को चबाकर ऊपर से थोड़ा पानी पी लें(ऐसा चार पांच दिनों तक करें)। करीब दो ग्राम सुहागे का पावडर बनाकर थोड़ी सी ग्लिसरीन में मिलाकर छालों पर दिन में दो तीन बार लगाएं छालों में जल्दी फायदा होगा।

ऐसा करें

दांतों में गंदगी से भी मुंह में छाले पैदा हो जाते हैं अतः दिन में 2 से 3 बार दांत साफ करना जरूरी है। भोजन में लालमरसा का साग खायें।

मुंह के छाले होने पर 2 केले रोजाना सुबह दही के साथ खायें।

छाले होने पर टमाटर अधिक खाने चाहिए। ठण्डी फल व सब्जियां खायें। पेट की कब्ज खत्म करने के लियें सुबह 1 गिलास पानी शौच जाने से पहले पीने से लाभ होता है।

ऐसा न करें

भोजन में अधिक तेल, मिर्च, मांस, तेज मसाले व गर्म पदार्थ न खायें।

पेट में कब्ज होने पर छाले बनते हैं।

पेट में कब्ज को बनाने वाले कोई भी पदार्थ न खाएं।

उत्तराखंड में एक नहीं पांच केदार मंदिर है, आप भी जानिए शिव के इन 5 मंदिरो के बारे में

पंच केदार का अर्थ भगवान शिव के उन पांच मंदिरों से है, जहां भोलेनाथ ने पांडवों को दर्शन दिए थे। ये पंच केदार मंदिर केदारनाथ, तुंगनाथ, रुद्रनाथ, मध्यमहेश्वर और कल्पेश्वर है...

पंच केदार यात्रा भारत में हिंदू धर्म की सबसे महत्वपूर्ण यात्राओं में आती है, जहां हर साल लाखों श्रद्धालुओं की भीड़ देखने को मिलती है। पंच-केदार का मतलब भगवान शिव के उन पांच मंदिरों से है, जिसमें केदारनाथ, तुंगनाथ, रुद्रनाथ, मध्यमहेश्वर और कल्पेश्वर का नाम शामिल है। भोलेनाथ को समर्पित ये पवित्र जगहें उत्तराखंड के गढ़वाल क्षेत्र में मौजूद है। ऐसा माना जाता है कि इन पांच मंदिरों को महाभारत से जोड़ा जाता है। जब पांडव लंबे समय से एक जगह से दूसरी जगह भगवान शिव की खोज कर रहे थे, तब उन्हें महादेव पांच अलग-अलग हिस्सों में दिखाई दिए थे। पांडवों ने शिव को मनाने और उनकी पूजा करने के लिए इन पांच मंदिरों, पंच केदारों का निर्माण किया था। तो चलिए आपको उन पांच मंदिरों के बारे में बताता हूँ

"पंच केदार मंदिर, उत्तराखण्ड"

1-केदारनाथ मंदिर हिंदुओं के लिए सबसे अधिक देखे जाने वाले और पूजनीय मंदिरों में से एक, केदारनाथ पंच केदार मंदिरों में आता है। भगवान शिव का ये मंदिर हिमालय में 3583 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और ऐसा माना जाता है कि इसे पांडव भाइयों द्वारा बनाया गया था। कहा जाता है कि केदारनाथ वो जगह है जहां भगवान शिव का कूबड़ प्रकट हुआ था। यह ऋषिकेश से करीब 225 किमी की दूरी पर स्थित है, पांडवों द्वारा स्थापित इस मंदिर को 8वीं या 9वीं शताब्दी में आदि शंकराचर्य द्वारा फिर से बनाया गया था...गौरीकुण्ड से करीब 18 km का ट्रेक करके यहाँ जाया जाता है.

2-तुंगनाथ मंदिर तुंगनाथ मंदिर दुनिया के सबसे ऊंचे शिव मंदिरों में से एक है, साथ ही ये पंच केदारों में भी सबसे ऊंचा है। यही नहीं, 3,680 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह मंदिर दुनिया का सबसे ऊंचा शिव मंदिर भी है। चोपता से करीब 3.5 km ट्रेक करके यहाँ जाया जाता है...आपको बता दें ये वो जगह है, जहां बैल के रूप में भगवान शिव के हाथ दिखाई दिए थे, जिसके बाद पांडवों ने तुंगनाथ मंदिर का निर्माण करवाया था। कहा जाता है कि राम ने चंद्रशिला शिखर पर ध्यान किया था, जो तुंगनाथ के करीब स्थित है। ट्रेकर्स और तीर्थयात्री आमतौर पर एक ही बार में दोनों स्थलों को कवर कर लेते हैं।*

3-रुद्रनाथ मंदिर. केदारनाथ और तुंगनाथ के बाद रुद्रनाथ को पंच केदार का तीसरा मंदिर है। ऐसा माना जाता है कि यह ये वो जगह है जहां पांडवों को शिव का चेहरा दिखाई दिया था। 3600 मीटर की ऊंचाई पर स्थित मंदिर में शिव की पूजा नीलकंठ के रूप में की जाती है। मंदिर से आप नंदा देवी, नाडा घुंटी और त्रिशूल चोटियों के शानदार नजारे देख सकते हैं। ट्रेक सागर नाम के एक गांव से शुरू होता है जो गोपेश्वर से लगभग 3 किमी की दूरी पर स्थित है, और करीब 20 km का ट्रेक है फिर भी, शिव के भक्त हर साल यहां जरूर आते हैं।

4. -मध्यमहेश्वर मंदिर मध्यमहेश्वर उत्तराखंड के गढ़वाल के हिमालय में 3497 मीटर की ऊंचाई पर गौंडर नामक गांव में स्थित है। यहीं पर शिव के मध्य भाग या नाभि भाग की पूजा की जाती है। मंदिर केदारनाथ, चौखम्बा और नीलकंठ के शानदार नजारों से घिरा हुआ है। उखीमठ से लगभग 25 किमी. है और ये ट्रेक रांसी से शुरू होता है... मंदिर एक हरे-भरे घास के मैदान के बीच में स्थित है, जिसमें चौखम्बा की चोटियां देखने में बेहद ही खूबसूरत लगती हैं। मंदिर के गर्भगृह में नाभि के आकार का शिवलिंग है।

5. -कल्पेश्वर माना जाता है कि कल्पेश्वर वह जगह है, जहां भगवान शिव का सिर और जटाएं दिखाई दी थी। यह उर्गम घाटी में हिमालय में 2200 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है, जहां का नजारा देखने में बेहद ही खूबसूरत लगता है। अगर आप पंच केदार की यात्रा पर निकलें हैं, तो ये मंदिर दर्शन करने के कर्म में सबसे आखिर में आता है। यह एकमात्र ऐसा मंदिर भी है, जहां पूरे साल जाया जा सकता है, क्योंकि पंच केदार के अन्य चार मंदिर बर्फबारी के कारण सर्दियों में बंद रहते हैं। यहां शिव को जटाधर या जतेश्वर के रूप में पूजा जाता है। यहाँ आप अपनी गाडी से जा सकते है यहाँ ट्रेक की जरुरत नहीं है

श्री सूर्यदेव एवम उनके सात दिव्य अश्वों की अद्भुत गाथा

वेदों में सूर्य न केवल एक खगोलीय पिंड है किन्तु सर्वोच्च चेतना तथा ऊर्जा का प्रतीक है।

सात घोड़ों के नाम संस्कृत छंद के सात छंदों के नाम पर रखे गए हैं:

गायत्री,
बृहती,
उष्णी,
जगती,
त्रिष्टुभा,
अनुष्टुभा
तथा पंक्ति।

यदि आप आधुनिक वैज्ञानिक व्याख्या पर विचार करते हैं, तो आप कह सकते हैं कि सूर्य देव द्वारा उत्सर्जित श्वेत प्रकाश में श्वेत प्रकाश के घटक रंगों में से 7 (सात) घटक सम्मिलित हैं। अर्थात् बैंगनी, इंडिगो, नीला, हरा, पीला, नारंगी तथा लाल।

सात रंग और सात चक्रों का सुंदर सामंजस्य : सूर्य का प्रकाश जब जल या प्रिज्म के माध्यम से गुजरता है, तो वह सात रंगों में विभाजित हो जाता है, इन सात रंगों का केवल भौतिक या वैज्ञानिक महत्व नहीं है, किन्तु इनका आध्यात्मिक तथा योगशास्त्र में गहरा स्थान है।

योग दर्शन के अनुसार, शरीर में सात चक्र होते हैं जो ऊर्जा संतुलन का कार्य करते हैं।

ये सातों चक्र इंद्रधनुष के सात रंगों से जुड़े होते हैं, जैसे सूर्यप्रकाश के रंग।

मूलाधार चक्र (Root Chakra) — लाल रंग से जुड़ा होता है, जो पृथ्वी तत्व और अस्तित्व की जड़ से संबंधित है। यह हमारे जीवन की नींव और सुरक्षा का केंद्र है।

स्वाधिष्ठान चक्र (Sacral Chakra) — नारंगी रंग से जुड़ा है और यह रचनात्मकता, कामना और भावनाओं को नियंत्रित करता है।

मणिपुर चक्र (Solar Plexus Chakra) — पीले रंग से संबंधित है, जो आत्मबल, इच्छाशक्ति और आत्म-विश्वास का प्रतीक है।

अनाहत चक्र (Heart Chakra) — हरे रंग का होता है, यह प्रेम, करुणा और संतुलन का केंद्र है।

विशुद्ध चक्र (Throat Chakra) — नीले रंग से जुड़ा है, जो अभिव्यक्ति, संवाद और सच्चाई से संबंधित है।

आज्ञा चक्र (Third Eye Chakra) — इंडिगो रंग से जुड़ा होता है, यह अंतर्ज्ञान, दृष्टि और मानसिक स्पष्टता का केंद्र है।

सहस्रार चक्र (Crown Chakra) — बैंगनी या श्वेत रंग से जुड़ा है, जो ब्रह्मज्ञान, आत्मा और परमात्मा से जुड़ाव का प्रतीक है।

सूर्यदेव की गति और ₹108₹ का ब्रह्मांडीय रहस्य : श्रीमद्भागवतम (5.21.19) में उल्लेख है कि सूर्यदेव भू-मंडल की परिक्रमा करते हुए अद्भुत गति से चलते हैं। वे 2,000 योजन और दो कोस अर्थात् लगभग 16,004 मील प्रति क्षण की गति से चलकर, 95,100,000 योजन (लगभग 760,800,000 मील) की दूरी एक ही क्षण में तय कर लेते हैं।

वैदिक ग्रंथों और उपनिषदों में ब्रह्मांडीय गणनाओं में ₹108₹ का विशेष महत्त्व है। यह संख्या मात्र संयोग नहीं, बल्कि एक गूढ़ और वैज्ञानिक सत्य को दर्शाती है।

1. दर्शाता है ₹एकत्वम् ₹ — सारा ब्रह्मांड एक ही मूल स्रोत (ब्रह्म) से उत्पन्न हुआ है।

2. 0 दर्शाता है अंडाकार ब्रह्मांड — यह निरंतर विस्तारशील है, जैसे ब्रह्माण्ड का फैलाव (expansion of universe)।

3. 8 प्रतीक है अनंतता और चक्रीयता का — यह उस चक्र को दर्शाता है जिसमें सृष्टि का विनाश होता है और वह पुनः एकत्व में विलीन हो जाती है। ₹सप्त त्वा हरितो रथे वहन्ति देव सूर्य। (ऋग्वेद 1.50) ₹

भगवान शिव (रुद्र) ने 11 अमर देवताओं (रुद्रों) की रचना कीः कपाली, पिंगला, भीम, विरुपाक्ष, विलोहिता, अजेश, शासन, शास्ता, शंभू, चंदा और ध्रुव।

संस्कृत छंदों का महत्वः संस्कृत छंदों का क्रम और अक्षर गणना हैः

गायत्री (24), उष्णी (28), अनुष्टुभा (32), बृहती (36), पंक्ति (40), त्रिष्टुभा (44), जगती (48)। ये छंद वैदिक मंत्रों की लय और दिव्य ऊर्जा के स्त्रोत हैं।

सूर्य को जल चढ़ाने का विज्ञानः तांबे के बर्तन से सूर्य को जल चढ़ाने पर सूर्य की किरणें जल से होकर शरीर में प्रवेश करती हैं, जिससे शरीर के सात रंग संतुलित होते हैं।

स्नान और स्वच्छता का महत्त्वः हमारे पूर्वजों ने सूर्य पूजा से पूर्व स्नान का नियम इसलिए बनाया ताकि शरीर नकारात्मक ऊर्जा से मुक्त होकर स्वास्थ्य लाभ करे।

बारह आदित्य (सौर देवता): बारह आदित्य हैंः विष्णु, शक्र, आर्यमन, धाता, विधाता, त्वष्टा, पूषा, विवस्वान, सविता, मित्रावरुण, अंश और भग।

जब सूर्यदेव की बात होती है, तो वह केवल खगोलीय पिंड नहीं, बल्कि वह 'चेतना के सजीव स्रोत' हैं। सूर्य को वेदों में सर्वज्ञ और दृश्य ब्रह्म कहा गया है। सूर्य की किरणें केवल प्रकाश नहीं, बल्कि दिव्य ज्ञान और चेतना का प्रवाह हैं।

वेद तीन स्तरों पर परम सत्य की बात करते हैंः

1. ब्रह्म – निराकार, अनंत, अखंड सत्य जो सबका आधार है।

2. परमात्मा – सबमें व्याप्त साक्षी रूप।

3. भगवान – पूर्ण व्यक्तित्व, जिसमें ज्ञान, बल और आनंद पूर्ण रूप से विद्यमान हैं।

।।ॐ घृणि सूर्याय नमः।। जय सूर्य देव।।

।। ""चरणामृत"" ।।

चरणामृत का अर्थ होता है भगवान के चरणों का अमृत।इसे पीने से व्यक्ति के भीतर जहां सकारात्मक भावों की उत्पत्ति होती है वहीं यह सेहत के लिए भी स्वास्थ वर्धक है।*

किसे कहते हैं चरणामृत ?

शास्त्रों में कहा गया है-:

'अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम्।
विष्णो पादोदकं पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते।।

अर्थात-: भगवान विष्णु के चरणों का अमृत रूपी जल सभी तरह के पापों का नाश करने वाला है। यह औषधि के समान है। जो चरणामृत का सेवन करता है उसका पुनर्जन्म नहीं होता है।।'

कैसे बनता चरणामृत-: तांबे के बर्तन में चरणामृत रूपी जल रखने से उसमें तांबे के औषधीय गुण आ जाते हैं। चरणामृत में तुलसी पत्ता और दूसरे औषधीय तत्व मिले होते हैं। मंदिर या घर में हमेशा तांबे के लोटे में तुलसी मिला जल रखा ही रहता है। इस जल में थोड़ा सा पवित्र गंगा नदी का जल भी जरूर मिला लेना चाहिए।

चरणामृत लेने के नियम-: चरणामृत ग्रहण करने के बाद बहुत से लोग सिर पर हाथ फेरते हैं, लेकिन शास्त्रीय मत है कि ऐसा नहीं करना चाहिए। चरणामृत हमेशा दाएं हाथ से लेना चाहिए और श्रद्धा भक्ति पूर्वक मन को शांत रखकर ग्रहण करना चाहिए। इससे चरणामृत अधिक लाभप्रद होता है।

दिन की शुरुआत चरणामृत से करें-: प्रातः काल स्नान-ध्यान के बाद दिन की शुरुआत हमेशा चरणामृत ग्रहण करके करनी चाहिए , ऐसा करना सनातन शास्त्रों में बहुत कल्याणकारी माना गया है/

ज्योतिष अनुसार चरणामृत के लाभ-: ज्योतिष मतानुसार चरणामृत ग्रहण करने से मन के कारक चंद्र ग्रह को बल मिलता है। यदि जन्म कुंडली में चंद्र ग्रह 6, 8, 12 में हो या अंशों में कमजोर हो तो ऐसे व्यक्ति को प्रतिदिन विधिवत रूप से चरणामृत ग्रहण करना चाहिए।

चरणामृत का लाभ-: आयुर्वेद की दृष्टि से चरणामृत स्वास्थ्य के लिए बहुत ही अच्छा माना गया है। आयुर्वेद के अनुसार तांबे में अनेक रोगों को नष्ट करने की क्षमता होती है। यह पौरूष शक्ति को बढ़ाने में भी गुणकारी माना जाता है। तुलसी के रस से कई रोग दूर हो जाते हैं और इसका जल मस्तिष्क को शांति और निश्चिंतता प्रदान करता हैं। स्वास्थ्य लाभ के साथ ही साथ चरणामृत बुद्धि, स्मरण शक्ति को बढ़ाने भी कारगर होता है।

श्रद्धा से ग्रहण करें चरणामृत-: चरणामृत को पूरे भाव के साथ ग्रहण करना चाहिए, अपने इष्ट का स्मरण करते हुए व अपने इष्ट के नाम व मंत्र जप करते हुए चरणामृत को ग्रहण करना चाहिए, ऐसा करने से कष्टों से मुक्ति मिलती है।

यदि दुश्मन की कमर तोड़नी है तो....

डॉ घनश्याम बादल

पहलगाम की बैसरन घाटी में 22अप्रेल को जिस तरह आतंकवादियों ने पर्यटकों की हत्या की, वह निसंदेह एक वीभत्स, निंदनीय एवं क्रूर कृत्य था । वैसे ऐसा पहली बार नहीं हुआ है । आतंकवाद का जब-जब और जहां-जहां बस चला है उसने ऐसे नृशंस हत्याकांड किए हैं । उसने न साधन संपन्न अमेरिका को बख्शा न ही सीरिया, अफगानिस्तान, इराक, ईरान, रूस या भारत जैसे देशों पर दया दिखाई।

26 नवंबर 2011 को मुंबई में ऐसा ही हमला हुआ था उसके बाद पुलवामा उड़ी जैसी जगहों पर समय-समय पर हमले व हत्याकांड होते रहे और हर बार हम आतंकवादियों और उनके सर परस्तों को नेस्तानाबूद करने के बयान देते रहे मगर ऐसा हो नहीं पाया । अब एक बार फिर से आतंकवाद और उसे प्रश्रय दे रहे पड़ोसी देश पाकिस्तान के खिलाफ आक्रोश उभर कर सामने आया है । हमले के बाद कुछ कूटनीतिक निर्णय भी लिए गए हैं जिनमें सिंधु का जल रोकना, पाकिस्तान के दूतावास के सदस्यों की संख्या कम करना, पाकिस्तानियों के यू एन वीजा के माध्यम से भारत आने पर रोक लगाना एवं देश में आए हुए सभी पाकिस्तानियों को एक में से पहले देश छोड़ने का आदेश देना । उधर पाकिस्तान ने भी लगभग ऐसे ही निर्णय लेकर इनका जवाब दिया है। इन निर्णयों का कितना असर पड़ता है यह समय के गर्भ में है और इस पर आलोचना प्रत्यालोचना का भी दौर चल रहा है ।

यदि शत्रु की सचमुच कमर तोड़नी हो तो कुछ सिद्धांत बहुत पहले से मौजूद हैं और कुछ उनमें जोड़े गए हैं यदि भारत सचमुच में आतंकवाद एवं अपने शत्रुओं की कमर तोड़ना चाहता है तो इन बिंदुओं पर काम करने से काफी हद तक सफलता मिल सकती है। चलिए, एक नज़र डालते हैं ऐसे ही कुछ बिंदुओं पर।

जिस शत्रु की कमर तोड़नी हो उसके आय के स्रोत बंद कर दो, उसके अपनों को उससे अलग कर दो, उसका हुक्का पानी, बंद कर दो यानी उसे इतना अकेला कर दो कि वह कहीं का ना रहे।

शत्रु को यदि जड़ से समाप्त करना हो तो आमने-सामने का युद्ध उतना कामयाब नहीं होता । उसके घर में चुपचाप घुसकर वहां के जयचंदों से मिल जाओ उसके अपनों को उसके विरुद्ध भड़का दो और उसके रहस्य जानकर उसके ऊपर अंतिम प्रहार करने से पहले उसे इतना बेजान कर दो कि वह अपने पैरों पर खड़ा ही न हो पाए।

यदि शत्रु को पूरी तरह काबू करना हो तो उसके लिए काम करने वाले वफादार लोगों की कमज़ोरी पता करो उसके आधार पर उन्हें काबू करो और उनका इस कदर ब्रेन वॉश करो कि उन्हें यह लगने लगे कि वे जिसके साथ खड़े हैं वह उनका दुश्मन है और उनका केवल उपयोग कर रहा है।

यदि शत्रु को समूल नष्ट करना हो तो उनके घर / देश की स्त्रियों को उनके कुकृत्यों ,अवैध संबंधों, नाजायज़ औलादों के बारे में बताओ । उन्हें बार-बार उनके अधिकारों की याद दिलाते हुए एहसास कराओ कि उनका शोषण किया जा रहा है उन्हें इतना उकसाओ कि वे जिनके साथ रह रही हैं उन्हीं के खाने और जीवन में इतना ज़हर घोल दें कि वे जिंदा रहकर भी मुर्दे के बराबर हो जाएं।

यदि शत्रु किसी भी तरह काबू में न आ रहा हो तो उसकी औलादों / नागरिकों को नशे का आदी बना दो, कुसंगति में फंसा दो और उन्हें अपने मां-बाप / देश के खिलाफ खड़ा कर दो इससे शत्रु की ताकत आधे से भी काम रह जाएगी।

शत्रु पर विजय प्राप्त करने के लिए उसके गहरे मित्रों को अपना मित्र बना लो और उन्हें एहसास कराओ कि वे जिनके साथ लगे हैं उनके साथ न उनकी खैर है और न उनके मित्रों का भविष्य उज्ज्वल है।

दुश्मन को हराने का एक तरीका उसे थका कर मारना भी है । उसे इतना उकसाओ कि वह आप पर स्वयं हमला कर दे और ऐसे क्षेत्र या पक्ष पर हमला करे जिसमें आपका नुकसान न के बराबर हो और वह और उसके सिपाही, हितेषी अथवा सेना उसमें किसी पिंजरे की तरह कैद होकर रह जाए।

यदि शत्रु के समक्ष आपकी ताकत बहुत ज़्यादा नहीं है तो शत्रु के शत्रु को भी अपनी और मिला लो यदि उन्हें अपने हिस्से में से भी कुछ देना पड़े तो दे दो लेकिन उन्हें अपने राज़ मत जानने दो।

शत्रु को हराने के लिए अपने हथियारों सेनाओं, गुप्तचरों, स्लीपिंग सेल एवं रणनीति को सदैव तैयार रखें और केवल एक योजना के आधार पर काम न करें अपितु प्लान ए, प्लान बी, प्लान सी जिसकी जहां जरूरत हो उसे वहां लागू करें।

अपनी सेना को अत्याधुनिक हथियारों, तकनीकी, प्रशिक्षण एवं नियमित व्यायाम, सक्रियता, उचित खान-पान, कसरत और उमंग एवं उत्साह तथा जुनून के माध्यम से इतना सशक्त बनाएं कि कोई उसके बराबर न आ पाए। समय-समय पर उसे छद्म युद्ध के माध्यम से अभ्यास कराएं। एक एक सैनिक को यह विश्वास दिलाएं कि वह दुनिया का सर्वश्रेष्ठ सैनिक है और उसकी सेना का कोई मुकाबला नहीं है।

छोटी-छोटी जीत हासिल करने पर भी अपने सैनिकों को प्रोत्साहन राशि, पुरस्कार मेडल एवं सम्मान देकर उनको उत्साह से लबरेज रखें । जो युद्ध के मैदान में, बाहर या अंदर, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से शहीद हों उनके परिवारों का पूरा ख़्याल रखा जाए ताकि जो जीवित है उन्हें इससे प्रेरणा एवं निश्चिंतता मिले।

इन सबसे बढ़कर अपने सैनिकों को समर्पित, निस्वार्थ, उच्च नैतिक मूल्य वाले एवं मातृभूमि की रक्षा हेतु सदैव तत्पर तथा प्राण उत्सर्ग करने हेतु उद्यत रखने की नीति उन्हें अपना सर्वस्व लुटाकर भी राष्ट्र की रक्षा करने हेतु सदैव प्रेरित रखती है।

शत्रु को खत्म करने का आखिरी हथियार है आमने-सामने का युद्ध लेकिन इस युद्ध में अपनी हार की भी बराबर संभावना होती है किसी देश को आमने-सामने के युद्ध में आर पार या अंतिम रूप से हराना आज के युग में बहुत मुश्किल है उदाहरण के रूप में वियतनाम, यूक्रेन जैसे युद्ध सामने हैं। अतः क्रोध, आवेग, उकसावे, अति उत्साह या स्वार्थवश प्रत्यक्ष युद्ध से बचा जाए तो बेहतर होता है । धैर्य, रणनीति एवं निर्ममता पूर्वक शत्रु पर प्रहार ही विजय का असली सूत्र है।

यदि शत्रु पर वार करें तो पहले सुनिश्चित कर लें कि किसी भी कीमत पर उसे ज़िंदा या अधमरा करके नहीं छोड़ना । उसके रोने गिड़गिड़ाने, पुनः ऐसी ग़लती न करने की शपथ लेने आदि जैसे छलावे में कदापि न आएं और उसे पूरी तरह नेस्तानाबूद कर दें. तभी आप शांति प्राप्त कर सकते हैं।

गोले मार्केट के लाल बहादुर सदन में दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज का स्वागत अभिनंदन किया गया

मुख्य संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज को आम आदमी पार्टी द्वारा पार्टी का प्रदेश अध्यक्ष नियुक्त किए जाने पर वाल्मीकि चौपाल गोल मार्केट संयोजक उदय गिल द्वारा अभिनंदन स्वागत सत्कार किया गया। वाल्मीकि चौपाल के प्रांगण के कार्यक्रम में आम आदमी पार्टी प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज, महापौर महेश खींची, प्रदेश अध्यक्ष, निगम पार्षद, पूर्व विधायक, एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट अन्य गण मान्य प्रमुख व्यक्ति सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में आगे कैसे एकजुट होकर के किसी भी समस्या का हल निकाला जा सके इसके बारे में भी चर्चा की गई। सभा में आये सभी लोगों ने आपस में एक दूसरे से परिचय किया। लाल बहादुर सदन के लोगों ने भी स्वागत समारोह में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया।

पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ फूटा हिंदुस्तान का जन आक्रोश! : राजेश भाटिया

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। आज मैंने, सर्व हिंदू समाज जागरण समिति के नेतृत्व में मशाल जलाकर जन आक्रोश मार्च का आयोजन किया।

पहलगाम में निर्दोष हिंदुओं की धर्म पूछकर हत्या — यह हमला सिर्फ कुछ परिवारों पर नहीं, बल्कि पूरे भारतवर्ष पर किया गया है।

अब खून का बदला सिर्फ आंसुओं से नहीं होगा !

भारत अब चुप नहीं रहेगा —
भारत अब दहाड़ेगा !
हमने संकल्प लिया है —
आतंकवादियों और उनके समर्थकों को मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा।
पाकिस्तान को उसकी नापाक हरकतों की भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।
भारत माता की जय !
वंदे मातरम्!

बिना वैकल्पिक व्यवस्था किए दो हजार बसों को सड़कों से हटाकर भाजपा सरकार ने ट्रांसपोर्ट सिस्टम को बहुत पीछे धकेल दिया है- प्रियंका कक्कड़

मुख्य संवाददाता सुषमा रानी

नई दिल्ली। भाजपा सरकार ने दिल्ली की सड़कों से अचानक दो हजार बसों को हटा दिया है। इससे भीषण गर्मी में दिल्लीवालों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। लोग एक-एक घंटे तक बस स्टैंड पर बसों का इंतजार कर रहे हैं और सभी बसें लोगों से खचाखच भरी हुई हैं। बसों में लोग खड़े होकर यात्रा करने पर मजबूर हैं। बिना वैकल्पिक व्यवस्था किए दो हजार बसों को हटाकर भाजपा सरकार ने ट्रांसपोर्ट सिस्टम को बहुत पीछे धकेल दिया है। आम आदमी पार्टी की मुख्य प्रवक्ता प्रियंका कक्कड़ रविवार को यह बातें कहीं। उन्होंने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली को अत्याधुनिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम दिया था और लोगों को एक मिनट में बस मिल जाया करती थी। अब भाजपा सारे टैंडर अपने पूंजीपति दोस्तों को देगी, ताकि घूसखोरी व कमीशनखोरी कर सके।

प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि भाजपा ने आम आदमी पार्टी की सरकार को काम करने से रोकने के लिए ढेरों अड़चनें पैदा की। कभी हमारे उपर झूठे आरोप लगाकर, कभी फाइलों पर बैठ कर तो कभी धरना देकर आम आदमी पार्टी की सरकार के कामों को रोकने की कोशिशें की। इसके बावजूद अरविंद केजरीवाल ने दिल्ली में अत्याधुनिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम स्थापित किया। इसके तहत दिल्ली में आज तक की सबसे अधिक 7582 डीटीसी बसों की फ्लीट थी। इसके अलावा 1650 इलेक्ट्रिक बसें थीं। मोहल्ला और क्लस्टर्स बसें भी शुरू हो चुकी थीं। आम आदमी पार्टी की सरकार लग्जरी बसें भी शुरू करने वाली थी। हमारा लक्ष्य था कि दिल्ली की सड़कों से ट्रैफिक कम हो और सड़कों पर जाम कम लगे। हमारा लक्ष्य था कि लोअर व मीडिल क्लास को बसों में सफर करने के साथ ही अपर क्लास भी दिल्ली के मॉडर्न ट्रांसपोर्ट सिस्टम का इस्तेमाल करे।

उन्होंने कहा कि देश की राजधानी होने की वजह से दिल्ली में आबादी और गाड़ियां बढ़ती रहती हैं। 2017 में आई एक रिपोर्ट के अनुसार ट्रैफिक के मामले में दिल्ली विश्व की चौथी सबसे घनी राजधानी बन गई थी। अरविंद केजरीवाल की सरकार ने 2024 तक ट्रैफिक के मामले में विश्व की चौथी सबसे घनी आबादी वाली दिल्ली को 44वें स्थान पर ला दिया। यानि दिल्ली चौथी सबसे अधिक कंजस्टेड सिटी से 44वीं कंजस्टेड सिटी बन गई थी। इसके पीछे मुख्य वजह सड़क इंफ्रास्ट्रक्चर और ट्रांसपोर्टेशन सिस्टम पर काम करना रहा। लेकिन आज भाजपा ने सिर्फ दो महीने में ही दिल्ली को बहुत पीछे धकेल दिया है। बिना कोई वैकल्पिक व्यवस्था किए सड़कों से 2 हजार बसों को हटा दिया।

प्रियंका कक्कड़ ने कहा कि भाजपा की सरकार ने दो हजार बसों को सड़कों से इसलिए हटाया, क्योंकि वह उपर से लेकर नीचे तक भ्रष्टाचार में लिप्ट है। भाजपा का प्रयास रहता है कि सारे टैंडर उसके पूंजीपति दोस्तों को दिया जाएं, ताकि वह घूसखोरी और कमीशनखोरी कर सके। इसका बोझ भी दिल्ली की जनता को ही झेलना पड़ेगा। घूसखोरी और कमीशनखोरी का बोझ दिल्ली की जनता पर ही पड़ने वाला है। भाजपा से आम आदमी पार्टी का आग्रह है कि वह वादा करके आई थी कि अरविंद केजरीवाल की शुरू की गई किसी भी स्कीम को रोकेगी नहीं, चलने देगी, भाजपा अपना वादा निभाए। भाजपा को इस तपतपाती गर्मी में लोगों को बस स्टैंड पर खड़े होने के लिए मजबूर करने से पहले कोई वैकल्पिक व्यवस्था कर लेनी चाहिए थी।

बौखलाहट में खुद का नुकसान कर रहा पाकिस्तान

राजेश जैन

पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत सरकार ने सख्त प्रतिक्रिया देते हुए सिंधु जल समझौता स्थगित करने सहित पांच बड़े कदम उठाए। इसके जवाब में पाकिस्तान ने भी बौखलाहट में कई तात्कालिक फैसले कर डाले। इनमें शिमला समझौते को रद्द करना, भारतीय उड़ानों के लिए अपने एयरस्पेस को बंद करना और वाघा सीमा चौकी को बंद करने जैसे कदम शामिल हैं लेकिन विशेषज्ञों की राय में पाकिस्तान के ये कदम उसे खुद ही अधिक नुकसान पहुंचाएंगे, जबकि भारत को इससे रणनीतिक और कूटनीतिक फायदे मिल सकते हैं।

शिमला समझौते को स्थगित करना पाकिस्तान का एक बड़ा निर्णय रहा। 1972 में भारत और पाकिस्तान के बीच हुए इस समझौते ने कश्मीर विवाद को द्विपक्षीय दायरे में सीमित रखा था लेकिन पाकिस्तान ने ऐतिहासिक रूप से इस समझौते का कई बार उल्लंघन किया है। अब जब पाकिस्तान खुद इसे रद्द कर रहा है तो भारत पर किसी समझौता-उल्लंघन का आरोप लगने की संभावना खत्म हो जाती है। भारत अब एलओसी पर अपनी रणनीति के तहत बदलाव कर सकता है और आतंकवाद से निपटने के लिए जरूरत पड़ने पर सैन्य कार्रवाई भी कर सकता है।

सबसे बड़ी बात यह है कि अब वैश्विक शक्तियां, जो पहले 'द्विपक्षीयता' के कारण सीमित थीं, भारत के कदमों का खुलकर समर्थन कर सकती हैं।

वहीं, पाकिस्तान द्वारा भारतीय विमानों के लिए एयरस्पेस बंद करना एक और भावनात्मक प्रतिक्रिया रही। यह सही है कि इससे भारतीय एयरलाइनों को अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ेगा, रूट लंबा होगा और टिकटें महंगी हो सकती हैं लेकिन दीर्घकालिक नजरिए से देखें तो भारत अपनी एविएशन रणनीति को और मजबूत कर सकता है और वैकल्पिक मार्ग विकसित करने की दिशा में कदम बढ़ा सकता है। पाकिस्तान को भी इस निर्णय का नुकसान झेलना होगा। पहले भी 2019 में एयरस्पेस बंदी के दौरान पाकिस्तान की एविएशन इंडस्ट्री को करोड़ों डॉलर का नुकसान हुआ था।

पाकिस्तान द्वारा वाघा-अटारी बॉर्डर को बंद करने का फैसला और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ (सार्क) वीजा छूट रद्द करना भी उसी आत्मघाती प्रतिक्रिया का हिस्सा है। वाघा बॉर्डर से भारत और पाकिस्तान के बीच व्यापारिक गतिविधियां संचालित होती थीं, जिससे पाकिस्तान को भी फायदा होता था। इस मार्ग के बंद होने से पाकिस्तान की पहले से जर्जर अर्थव्यवस्था पर और भार पड़ेगा। खासकर अफगानिस्तान के लिए ट्रांजिट ट्रेड प्रभावित होगा, जिससे पाकिस्तान की भूराजनैतिक स्थिति और भी कमजोर हो सकती है।

भारत और पाकिस्तान के उच्चायोगों से सैन्य सलाहकारों को हटाना तथा कर्मचारियों की संख्या घटाना भी दोनों देशों के बीच संवाद के न्यूनतम चैनल को खत्म करने जैसा है। इससे गलतफहमियां बढ़ने का खतरा है। हालांकि, भारत के लिए यह भी एक अवसर है कि वह पाकिस्तान के आतंकी नेटवर्क और गतिविधियों के खिलाफ कड़े कदम उठाए, बिना यह चिंता किए कि इसका कोई राजनयिक संवाद बाधित होगा।

भारत द्वारा सिंधु जल समझौते को स्थगित करने का असर पाकिस्तान पर सबसे गहरा होगा। पाकिस्तान का कृषि क्षेत्र काफी हद तक सिंधु नदी प्रणाली पर निर्भर है। इस पानी की आपूर्ति में कमी आने से कृषि उत्पादन घटेगा, बिजली संकट बढ़ेगा और आर्थिक संकट गहरा सकता है। सिंधु जल समझौता पाकिस्तान के लिए जीवनरेखा की तरह था, और इसका स्थगन पाकिस्तान की जनता पर प्रत्यक्ष प्रभाव डालेगा। भारत ने यह कदम उठाकर एक स्पष्ट संदेश दिया है कि आतंकवाद को प्रश्रय देने की कीमत चुकानी पड़ेगी।

स्पष्ट है कि पाकिस्तान ने बौखलाहट में ऐसे फैसले लिए हैं जो तात्कालिक रूप से उसके लोगों के आक्रोश को संतुष्ट कर सकते हैं, लेकिन दीर्घकाल में उसके खुद के लिए विनाशकारी साबित होंगे। भारत ने अपने फैसलों से पाकिस्तान पर कूटनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक दबाव बढ़ा दिया है। पाकिस्तान का हर कदम उसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर और अलग-थलग करेगा, जबकि भारत वैश्विक समर्थन के साथ अपने हितों की रक्षा करने की मजबूत स्थिति में आ जाएगा। इसलिए अब भारत को संयमित तरीके से आगे बढ़ते हुए इस परिस्थिति का लाभ उठाना चाहिए, ताकि क्षेत्रीय स्थिरता के लिए एक मजबूत संदेश जाए कि आतंकवाद और हिंसा को बढ़ावा देने वालों के लिए कोई जगह नहीं है।

आतंक का "हमास पैटर्न"

प्रदीप कुमार वर्मा

जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकवादियों द्वारा पर्यटकों का धर्म पूछ कर गोली मारी गई। इस पाप में इस्लामिक जेहादिओं द्वारा इस सामूहिक नरसंहार में आतंकवाद का "हमास पैटर्न" सामने आया है। सेना की वर्दी में आए चार आतंकवादियों ने हमास के लड़ाकों की स्टाइल में पर्यटकों से पहले धर्म पूछा फिर उनको घुटनों के बल बिठाकर सिर में गोली मार दी। इस आतंकी हमले के बाद अब कानून एवं राजनीति के जानकारी इस बात की आवश्यकता जाता रहे हैं कि जब आतंकी हमले का हमास पैटर्न सामने आ गया है तो आप भारत को भी इजरायल की तरह ही आतंक पर काबू पाने की रणनीति अपनानी होगी। इसके लिए कूटनीतिक प्रतिबंधों के साथ-साथ भारतीय सेवा को आतंक पर सीधा प्रहार करना होगा। इसके साथ ही आतंकवादियों को प्रशिक्षण एवं अन्य सा जो सामान उपलब्ध कराने वाली पाकिस्तान सुना के विरुद्ध भी अब निर्णायक जंग करनी होगी।

प्रारंभिक पड़ताल में यह बात सामने आई है कि जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकी हमला पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के इशारे पर आतंकवादी संगठन टीआरएफ़ ग्रुप ने किया है। जानकारों को कहना है कि आतंकी हमले के पीछे कई कारण हो सकते हैं। इनमें विश्व बिरादरी में पाकिस्तान के अलग-थलग पढ़ने से लेकर कश्मीर में धारा 370 हटाये जाने के बाद तेजी से सामान्य होते हालात भी शामिल है। इसके साथ ही कंगाली झेल रहा पाकिस्तान अब अपने घरेलू मुद्दों से अपने आवाम का ध्यान हटाने के लिए भी पहलगाम में आतंकवादी हमला कर सकता है। गौरतलब है कि 05 अगस्त 2019 में मोदी सरकार ने जम्मू-कश्मीर से आर्टिकल-370 हटा दिया था। इसके करीब 10 साल बाद 2024 में जम्मू-कश्मीर में विधानसभा चुनाव हुए। कश्मीरी आवाम द्वारा चुनी हुई नेशनल कॉन्फ्रेंस की अब्दुल्ला सरकार बनी तथा हालात सामान्य होने लगे।

जम्मू- कश्मीर में तेजी से बढ़ते पर्यटन और विकास रोकना भी पाकिस्तान नापाक कोशिश है। पहलगाम को भारत का मिनी स्विट्जरलैंड कहा जाता है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2023 में 2.11 करोड़ और 2024 में 2.35 करोड़ पर्यटक कश्मीर आए, जिससे स्थानीय कारोबार बढ़ा। पर्यटन के जरिए जम्मू-कश्मीर की इकोनॉमी बेहतर होने के चलते लोग वहां खुशहाल हैं और अब आतंक से तौबा कर रहे हैं। पाक आतंकी हमले में पर्यटकों को निशाना बनाकर इसी आर्थिक तरक्की ओर टूरिज्म को प्रभावित करना चाहता है। आतंकियों ने हमले के दौरान हिंदू-मुसलमान के बीच नफरत बढ़ाने के लिए सैलानियों नाम और धर्म पूछा, कलमा पढ़ने को कहा और हिंदू होने पर मार दिया। इस हमले को भारत में हिंदू-मुसलमान के बीच तनाव पैदा करने की कोशिश भी माना जा रहा है। इससे भारत की धर्मनिरपेक्ष छवि को नुकसान पहुंचाना भी एक कोशिश है।

यह हमला उस समय हुआ जब अमेरिकी उप-राष्ट्रपति जेडी वेंस भारत दौरे पर थे लेकिन उनकी लिस्ट में पाकिस्तान का नाम दूर-दूर तक नहीं है। अमेरिकी उप राष्ट्रपति की सिक्योरिटी प्रोटोकॉल, इंटेलिजेंस इनपुट्स के बावजूद आतंकियों ने कश्मीर पर हमला करके ये मैसेज देने की कोशिश की- 'हम कभी भी कुछ भी कर सकते हैं।' पाकिस्तान ने इस हमले से भारत को बदनाम करना चाहा और दिखाना चाहा कि कश्मीर में मानवाधिकारों का उल्लंघन हो रहा है। कश्मीर में आतंकी संगठनों को बढ़ावा देने की कोशिश में हमले की जिम्मेदारी टीआरएफ़ ने ली, जो लश्कर-ए-तैयबा का हिस्सा है। पाकिस्तान ने अपने समर्थन वाले आतंकी संगठनों के लड़ाकों से हमला करा कर कश्मीर में आतंकवाद को जिंदा रखने की कोशिश की है। पाकिस्तान के अंदरूनी हालात भी इस आतंकी हमले की वजह के रूप में देखे जा रहे हैं। पाकिस्तान में अलगाववादी हमले, महंगाई, कर्ज जैसे कई अंदरूनी मसलों से देश लड़ रहा है।

पाकिस्तान का एक प्रमुख प्रांत बलूचिस्तान इन दिनों पाकिस्तान की आंख की किरकिरी बना हुआ है। बलूचिस्तान के लोगों का पाकिस्तान सेना और सरकार के विरुद्ध संघर्ष जग जाहिर है। पाकिस्तान में कुछ दिन पूर्व अपनी आजादी की मांग कर रहे बलूच अलगाववादियों ने एक पूरी ट्रेन को बंधक बना लिया। इस वर्धा से विश्व पटल पर पाकिस्तान की बहुत थू-थू हुई थी। उधर, तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान आदिवासी इलाकों में हावी होने लगी है। देश पर कर्ज बढ़ता जा रहा है और लोग सरकार से इसका जवाब मांगने लगे हैं। पाकिस्तान की आंतरिक राजनीति की जानकार मानते हैं कि जब आंतरिक रूप से चीजें बिखर जाती हैं, तो सेना ऐसे किसी मुद्दे को उठाती है, जो देश को एकजुट कर सके। इसका सबसे अच्छा टूल है कश्मीर अस्थिर करके भारत को दुश्मन की तरफ पेश करना है। इसके साथ ही विश्व बिरादरी में पाकिस्तान का अलग-थलग पड़ जाना भी आतंकी हमले की एक वजह है।

भारत की अन्य मुस्लिम देशों से बढ़ती नजदीकियां भी पाकिस्तान को परेशान कर रहा है। वर्ष 1971 की जंग में सऊदी अरब ने पाकिस्तान का साथ दिया था। लेकिन अब सऊदी अरब समेत कई मुस्लिम देश पाकिस्तान से नाता तोड़ने लगे हैं।

दक्षिण जिला AATS ने दो शातिर तस्करों को गिरफ्तार किया

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

दक्षिण जिला AATS की टीम ने एफआईआर संख्या 202/25, दिनांक 23.04.2025, यू/एस 33/38 दिल्ली आबकारी अधिनियम एवं 112 बी.एन.एस. के तहत 02 शातिर तस्करों तपन भंडारी को गिरफ्तार करके सराहनीय कार्य किया है। पुलिस स्टेशन नेब सराय और सनी के खिलाफ एफआईआर संख्या 197/25, दिनांक 22.04.2025 यू/एस 33/38/58 दिल्ली आबकारी अधिनियम और 112 बीएनएस, पुलिस स्टेशन अंबेडकर नगर के तहत मामला दर्ज किया गया है। उनकी निशानदेही पर, शराब की बड़ी खेप कुल 62 कार्टन में 2742 क्वार्टर शराब, 48 बोतल बीयर, 48 हाफ, 12 बोतल शराब बरामद की गई और शराब की आपूर्ति में इस्तेमाल की जाने वाली 01 स्कूटी जब्त की गई।

दक्षिण जिले के कर्मचारियों को विशेष रूप से अपराध पर अंकुश लगाने और दक्षिण जिले के अधिकार क्षेत्र में शराब तस्करों/जुआरी के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने का काम सौंपा गया था। तदनुसार, कर्मचारियों ने स्थानीय मुखबिरों को जागरूक करके और मानव

खुफिया जानकारी एकत्र करके ईमानदारी से प्रयास शुरू किए। एक व्यापक अभियान के क्रम में, शराब की आपूर्ति में शामिल ऐसे हताश अपराधियों को पकड़ने के लिए रणनीतिक स्थानों पर नियमित रूप से जाल बिछाए गए। इसके अलावा, नियमित क्षेत्र गश्त और अपराधियों को आश्चर्यचकित करने के लिए विषम घंटों के दौरान भी यादृच्छिक पिकेट चेकिंग करके बीट क्षेत्रों में पुलिस की उपस्थिति बढ़ा दी गई है। पता लगाना और संचालन:- 23.04.2025 को, एचसी राघवेंद्र को गली नंबर 9 और गली नंबर 13, एल-1 संगम विहार, नई दिल्ली में 02 घरों / परिसरों में शराब के भंडारण और बिक्री के बारे में एक विश्वसनीय सूचना मिली थी। तुरंत, इंस्पेक्टर उमेश यादव, आई/सी एटीएस/एसडी के नेतृत्व में एटीएस दक्षिण जिले की एक टीम जिसमें एसआई दिनेश कुमार, एएसआई देशराज, एचसी जोगिंदर, एचसी अरविंद, एचसी राघवेंद्र, सीटी। रामदयाल, सीटी। ईश्वर शामिल थे, को तेजी से कार्रवाई करने के लिए श्री अरविंद कुमार, एसीपी/ऑपरेशंस, दक्षिण जिले की देखरेख में गठित किया गया था। सूचना को आगे बढ़ाया गया और क्षेत्र की स्थानीय जांच की गई। खुफिया जानकारी की विश्वसनीयता की पुष्टि करने के बाद टीम ने दोनों परिसरों पर एक साथ 02 छापे मारे, जहां एक व्यक्ति को पकड़ लिया गया। बाद में उसकी पहचान तपन भंडारी के रूप में हुई। उसकी निशानदेही पर 52 कार्टन की बड़ी खेप जिसमें 2392 क्वार्टर शराब और 48 बोतल बीयर बरामद की गई। इस संबंध में, एफआईआर संख्या 202/25, दिनांक 23.04.2025, यू/एस 33/38 दिल्ली आबकारी अधिनियम और 112 बीएनएस के तहत पुलिस स्टेशन नेब सराय में मामला दर्ज किया गया और जांच की गई। उसे गिरफ्तार कर लिया गया।

मशावरत के पूर्व अध्यक्ष नवेद हामिद 'क़ायद-ए-मिल्लत पुरस्कार' से सम्मानित

शम्स आगाज

नई दिल्ली: दक्षिण भारत के प्रतिष्ठित संस्थान, क़ायद-ए-मिल्लत एजुकेशनल एंड सोशल ट्रस्ट (चेन्नई) ने शनिवार को आयोजित एक भव्य समारोह में ऑल इंडिया मुस्लिम मजलिस-ए-मशावरत के पूर्व अध्यक्ष और मूवमेंट फॉर एम्पावरमेंट ऑफ़ इंडियन मुस्लिम्स के महासचिव नावेद हामिद, प्रसिद्ध मानवाधिकार कार्यकर्ता जॉन दयाल, तथा सद्भावना मिशन के संस्थापक, प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. विपिन कुमार त्रिपाठी को मद्रास हाई कोर्ट के पूर्व जज, जस्टिस के.एन. बाशा के हाथों ₹क़ायद-ए-मिल्लत पुरस्कार₹ से सम्मानित किया। जनजीवन में सत्यनिष्ठा के लिए दिया जाने वाला यह वार्षिक पुरस्कार एक प्रशस्ति पत्र, पाँच लाख रुपये और सम्मान चिन्ह व शाल पर आधारित है।

इस अवसर पर जस्टिस बाशा ने पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं को बधाई देते हुए कहा कि ऐसे महान व्यक्तित्वों को सम्मानित करने का अवसर पाकर वे स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं, क्योंकि ये वे लोग हैं जो अंधकारमय वातावरण में प्रकाशस्तंभ का कार्य करते हैं। ट्रस्ट के महासचिव श्री एम जी दाऊद मियाखान ने कहा, ₹पुरस्कार विजेताओं को भारत में राजनीतिक और व्यक्तिगत जीवन में ईमानदारी के उनके बेदाग ट्रैक रिकॉर्ड के आधार पर दिया जाता है ।₹ जबकि पूर्व बिशप डॉ वी देवसागयाम ने कहा कि ₹हम आपकी सेवाओं को सम्मान देने, आपकी पहल का समर्थन करने और यह कामना करने के लिए यहां हैं कि आप सभी बाधाओं के बावजूद अपनी लड़ाई जारी रखें।

समारोह की अध्यक्षता क़ायद-ए-मिल्लत ट्रस्ट के अध्यक्ष क़ाज़ी डॉ. सलाहुद्दीन मोहम्मद अय्यूब ने की, जबकि पुरस्कार की घोषणा और विजेताओं का परिचय ट्रस्ट के महासचिव एम.जी. दाऊद मियाँख़ान ने किया। इस अवसर पर मद्रास विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. एस. सादिक और चर्च ऑफ़ साउथ इंडिया के बिशप डॉ. देवसगायम का भी सम्मान किया गया। ट्रस्ट के महासचिव दाऊद मियाँ ख़ान, कोषाध्यक्ष एस. मुश्ताक़ अहमद और क़ायद-ए-मिल्लत कॉलेज के प्राचार्य डॉ. एम.ए. तवाब ने महानुभावों को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह और शॉल भेंट किए।

2024 के ₹क़ायद-ए-मिल्लत पुरस्कार₹ की घोषणा फरवरी 2025 में की गई थी।

पुरस्कार चयन समिति में डॉ. वसंती देवी (पूर्व कुलपति), डॉ. देवसगायम (पूर्व बिशप), श्री पनीरसेल्वम (रीडर्स एडिटर, द हिंदू) और दाऊद मियाँख़ान (महासचिव, क़ायद-ए-मिल्लत ट्रस्ट) शामिल थे।

इससे पूर्व ट्रस्ट ने यह पुरस्कार जिन प्रमुख हस्तियों को प्रदान किया है, उन में तीस्ता सीतलवाड़, और नीलाकणु (2015), एन. शंकरैया और सैयद शाहाबुद्दीन (2016), माणिक सरकार और मोहम्मद इस्माइल (2017), भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति डॉ. हामिद अंसारी और अरुणा रॉय (2018), ए.जी. नूरानी और थिरु मावलावन (2019), हर्ष मंदर और बिल्कीस बानो (2020), डॉ. इरफ़ान हबीब और संयुक्त किसान मोर्चा (2021), थिरु वी रामणी और द वायर न्यूज़ पोर्टल (2022), एन. राम (द हिंदू) और डॉ. अबू सालेह शरीफ़ शामिल हैं।

वीर बाजीराव प्रथम की पुण्यतिथि: इतिहास को स्वर्णिम करने वाला क्षण

वह क्षण जब इतिहास की धड़कनें थम सी जाती हैं, २८ अप्रैल का वह पवित्र दिन, मराठा साम्राज्य के शूरवीर पेशवा बाजीराव प्रथम की पुण्यतिथि, हमें उनके अद्वितीय शौर्य और अटल साहस का स्मरण कराता है। "युद्ध बादलों की गर्जना से नहीं, बिजली की कड़कती चोट से जीते जाते हैं" — और बाजीराव वह प्रचंड बिजली थे, जिनके पराक्रम ने मराठा साम्राज्य को न केवल अजेय बनाया, बल्कि भारतीय इतिहास के पन्नों पर स्वर्णिम अक्षरों में एक अमर गाथा अंकित की। उनकी पुण्यतिथि महज एक तारीख नहीं, बल्कि उस अटूट आत्मा का उत्सव है, जिसने अपनी तलवार की धार और अखंड भारत के स्वप्न से एक युग को प्रेरित किया।

18 अगस्त 1700 को, जब मराठा साम्राज्य छत्रपति शिवाजी महाराज की अटल नींव पर उभर रहा था, एक तेजस्वी नक्षत्र का उदय हुआ — पेशवा बाजीराव प्रथम। उनके पिता, पेशवा बालाजी विश्वनाथ, ने मराठा शक्ति को एक सूत्र में बाँधने का मार्ग रचा था, किंतु बाजीराव ने उस अग्नि को प्रचंड ज्वाला बनाकर आकाश छुआ। मात्र २० वर्ष की युवावस्था में, 1720 में, छत्रपति शाहूजी महाराज ने उन्हें पेशवा का दायित्व सौंपा। उस दौर में, जब मुगलों का सिंहासन डगमगा रहा था और निज़ाम जैसे क्षेत्रीय शासक अपनी महत्वाकांक्षाओं को पंख दे रहे थे, बाजीराव ने मराठा साम्राज्य को न केवल एकजुट किया, बल्कि उसे उत्तर भारत के क्षितिज पर एक अजेय सूर्य की भाँति स्थापित किया।

बाजीराव प्रथम का जीवन युद्धों का नहीं, बल्कि युद्धकला का एक अमर महाकाव्य है। वे न केवल तलवार के धनी थे, बल्कि एक ऐसे दूरदर्शी रणनीतिज्ञ थे, जिन्होंने युद्ध को कला का रूप दे दिया। उनकी रणनीति का मूलमंत्र था—बिजली-सी तेजी, आश्चर्य का प्रहार और अचूक सटीकता। घेराबंदी की सुस्त चाल को ठुकराते हुए, वे शत्रु पर वज्र की तरह टूट पड़ते थे। इतिहासकार उनकी तुलना नेपोलियन से करते हैं, और क्यों न करें? अपने २० वर्ष के शासन में, बाजीराव ने 41 युद्ध लड़े और हर बार विजय का परचम लहराया। 1728 की पालखेड़ की लड़ाई इसका प्रज्वलित प्रमाण है, जहाँ उन्होंने निज़ाम-उल-मुल्क को धूल चटाकर मराठा शक्ति का डंका बजाया। 1737 का दिल्ली अभियान तो उनके साहस का स्वर्णिम शिखर था, जब मराठा घुड़सवार मुगल दरबार के द्वार पर गर्व से गरजे। मालवा, गुजरात और बुंदेलखंड पर उनकी विजय ने मराठा साम्राज्य को एक राष्ट्रीय शक्ति के रूप में अटल स्थापित किया।

बाजीराव की युद्धनीति आज भी सैन्य अध्ययनों की धुरी है। उनकी घुड़सवार सेना गतिशीलता और आक्रमण की ऐसी तूफानी शक्ति थी कि शत्रु उनके सामने रेत के महल सा ढह जाते थे। उनकी सेना में अनुशासन और रणनीतिक कौशल का ऐसा संगम था, जो युद्ध के मैदान को उनका रंगमंच बना देता था। किंतु बाजीराव का व्यक्तित्व केवल युद्धों की आग में ही नहीं चमका। वे एक कुशल प्रशासक और संगठनकर्ता थे, जिन्होंने मराठा साम्राज्य की प्रशासनिक नींव को अटल बनाया और क्षेत्रीय सरदारों को एकजुट कर एक अजेय गठबंधन रचा। उनका सपना था—एक ऐसा भारत, जो विदेशी बेड़ियों से मुक्त हो, जहाँ "हिंदू-पद-पादशाही" का सूरज चमके। यह सपना छत्रपति शिवाजी महाराज के आदर्शों का प्रचंड विस्तार था, जिसे बाजीराव ने अपने रक्त और संकल्प से साकार किया।

बाजीराव का जीवन युद्ध, विजय और प्रेम का एक अनूठा संगम है, जो इतिहास के पन्नों में अमर है। उनकी प्रेम कहानी, जिसमें मस्तानी का नाम चमकता है, न केवल रोमांचक बल्कि गहन मार्मिक भी है। मस्तानी, एक निपुण योद्धा और कलाकार, बाजीराव की शक्ति और आत्मा की प्रेरणा थीं। यह प्रेम सामाजिक और पारिवारिक बाधाओं से जूझता रहा, फिर भी बाजीराव ने साहस और संकल्प के साथ प्रेम और कर्तव्य का संतुलन बनाए रखा। मस्तानी के साथ उनका रिश्ता उनकी निजी ज़िंदगी का आभूषण तो था ही, यह उनके उस अदम्य साहस का भी प्रतीक था, जो रूढ़ियों को चुनौती देने से नहीं डरता था।

२८ अप्रैल 1740 का दिन मराठा साम्राज्य के लिए एक त्रासदी बन गया। अनवरत अभियानों, शारीरिक थकावट और संभवतः बुखार ने बाजीराव को मध्य प्रदेश के रावेरखेड़ी में मात्र 40 वर्ष की आयु में छीन लिया। कुछ इतिहासकार कहते हैं कि बाजीराव का निधन दिल का दौरा पड़ने से हुआ था। इतने अल्प समय में उन्होंने जो अपार उपलब्धियाँ हासिल कीं, वे उन्हें इतिहास में अमर कर गईं। उनकी मृत्यु ने मराठा साम्राज्य को झकझोर दिया, पर उनकी स्थापित नींव इतनी सुदृढ़ थी कि उनके उत्तराधिकारियों ने इसे और ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनके पुत्र बालाजी बाजीराव (नाना साहेब) ने मराठा शक्ति को पानीपत तक ले जाने का साहस दिखाया, हालाँकि वहाँ मिली हार ने साम्राज्य को हिलाकर रख दिया। फिर भी, बाजीराव की विरासत आज भी उतनी ही प्रेरणादायी और अटल है।

बाजीराव की पुण्यतिथि हमें उनके जीवन के अमूल्य सबक सौंपती है, जो आज भी प्रासंगिक हैं। उनका अटूट संकल्प हमें सिखाता है कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी लक्ष्य के प्रति दृढ़ रहना चाहिए। उनकी रणनीतिक दूरदर्शिता यह संदेश देती है कि विजय के लिए केवल बल नहीं, बल्कि बुद्धि और सूझबूझ भी अनिवार्य है। उनका राष्ट्रप्रेम हर दिल में यह ज्वाला प्रज्वलित करता है कि देश के लिए कुछ कर गुज़रने की भावना सर्वोपरि होनी चाहिए। और उनका प्रेम मस्तानी के साथ हमें बताता है कि सच्चा प्यार सामाजिक बंधनों को लाँघकर अमर हो जाता है।

आज, जब हम बाजीराव का स्मरण करते हैं, तो यह केवल उनकी युद्ध-गाथाओं का उत्सव नहीं, बल्कि उस अदम्य आत्मा का सम्मान है, जिसने असंभव को संभव कर दिखाया। यह उस स्वप्न का जश्न है, जिसने भारत को एकता के सूत्र में बाँधने की प्रेरणा दी। बाजीराव की तलवार आज भी इतिहास के पन्नों में चमकती है, और उनकी कहानी हर उस व्यक्ति को प्रेरित करती है जो अपने जीवन में महानता की छाप छोड़ना चाहता है। उनकी पुण्यतिथि पर हम यह प्रण लें कि उनके साहस, समर्पण और दूरदृष्टि को आत्मसात कर अपने कर्तव्यों को निष्ठा से निभाएँगे।

"नमन उस अपराजेय वीर को, जिसने तलवार के साथ-साथ अपने अटल स्वप्नों से इतिहास के स्वर्णिम पन्ने लिखे।" बाजीराव प्रथम की गाथा केवल मराठा गौरव का प्रतीक नहीं, बल्कि भारत के उस शानदार अतीत की जीवंत कथा है, जो हर भारतीय के हृदय में प्रेरणा की ज्योत जलाती है। उनकी पुण्यतिथि पर हम उनके अतुलनीय बलिदान को सादर नमन करते हैं और उस सशक्त, एकजुट भारत के निर्माण का संकल्प लेते हैं, जिसका स्वप्न उनकी आँखों में बसता था।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

कानपुर में स्कूटी और बाइक की टक्कर को लेकर झगड़े के दौरान किशोर की हत्या

सुनील बाजपेई

कानपुर। तेज रफ्तार ने पहले स्कूटी और बाइक में टक्कर कराई और फिर इसी बहाने झगड़ा ,जिसके चलते एक किशोर की पीट - पीट कर हत्या कर दी गई। घटना के बाद उसके परिवार में कोहराम मचा हुआ है। वहीं पुलिस पोस्टमार्टम के लिए भेज फरार आरोपी की तलाश में भी जुटी हुई है। पूरा मामला कल्याणपुर थानाक्षेत्र का है जहां नानकारी बगिया के रहने वाले सुमित वाल्मीकि (17) छात्र था। घटना के समय वह स्कूटी से किसी काम से जा रहा था। इसी दौरान रास्ते में ही पड़ोसी गुड्डे के साले रवि की बाइक से टक्कर हो गई। टक्कर के बाद दोनों में विवाद हो गया। इस दौरान रवि ने सुमित की पिटाई कर दी। घटना के बाद सुमित ने अपने घर पहुंचकर पूरी बात परिजनों को बताई। सुमित की मां मंजू रवि के घर पर शिकायत करने गई।

इस दौरान गुड्डू की पत्नी ने शिकायत करने पर देख लेने की धमकी दी। इसी के बाद सुमित को रास्ते में गुड्डू के साले रवि, आनंद, गुन्नू व आठ से दस अज्ञात साथियों ने घेर लिया। दबंगों ने गाली-गलौज करने के बाद सुमित की लात-घूसे, लाठी-डंडे व हॉकी से बेरहमी से पिटाई कर दी। इसके बाद मौके से फरार हो गये। मौके पर पहुंचे

परिजनों ने सुमित को इलाज के लिए हैलट अस्पताल में भर्ती कराया। जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि रिपोर्ट दर्ज कर आरोपियों की तलाश की जा रही है।

एक संत के साथ मार-पीट गाली गलौज और जान से मारने की धमकी

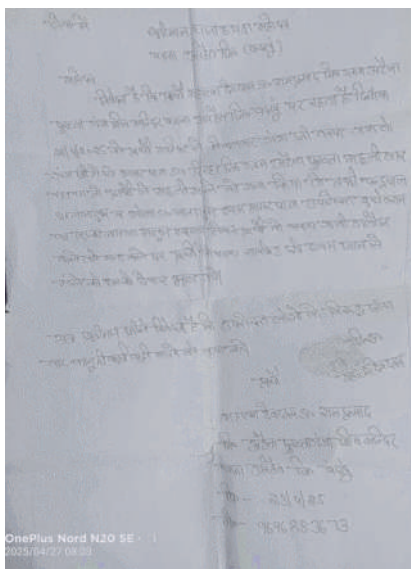

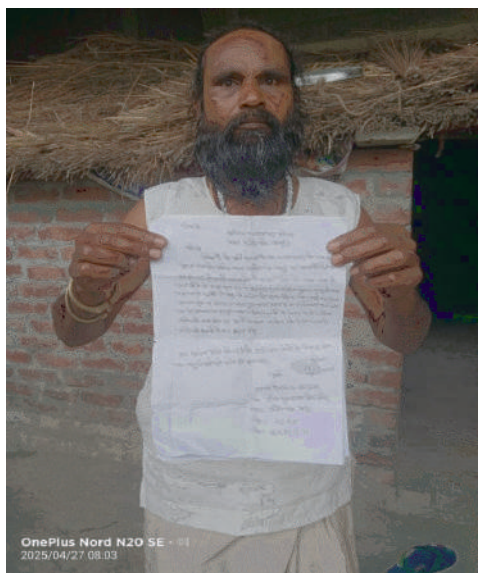

परिवहन विशेष न्यूज

बंदायु। संत को हाथ पैर पकड कर लटकाते हुए गाली देने का वीडियो आया सामने

घटना 22 अप्रैल रात की बताई जा वीडियो सोसल मीडिया पर बायरल हो रहा

संत ने पुलिस को तहरीर देकर मारपीट,गाली गलौज और जान से मारने की धमकी की धाराओं में मुकदमा दर्ज कराया है

वहीं पुलिस चौकी इंचार्ज का कहना है कि घटना की रिपोर्ट दर्ज कर ली है जांच-पड़ताल की जा रही है एक आरोपी को हिरासत में लिया गया है । संत का कहना है कि हिरासत में लिया आरोपी को पुलिस थाने से लौटा दिया है

पूरा मामला बदायूं जिले के उसैहत थाना क्षेत्र के अटेना पुख्ता गंगा घाट का है

संत ने रात में मछुआरों से मछली मारने से मना करने पर संत के साथ मार-पीट की है

बायरल वीडियो के आधार पर पुलिस कार्रवाई में लापरवाही प्रतीत होती है।

राष्ट्रीय बहादुर दिवस आज

हर साल 28 अप्रैल को हम बचपन में कैंसर से जूझ रहे परिवारों की बहादुरी का सम्मान करने के लिए नेशनल ब्रेवहार्ट्स डे मनाते हैं। इस दौरान, बच्चे के जीवन में शामिल लोगों के परिवारों और दोस्तों को श्रद्धांजलि दें और उनका समर्थन करें।

राष्ट्रीय बहादुर दिल दिवस कैंसर से जूझना कठिन और अक्सर डरावना होता है। जिन परिवारों के बच्चे कैंसर से पीड़ित हैं, उन्हें एक अच्छे सपोर्ट सिस्टम की ज़रूरत है, लेकिन उन्हें नहीं पता कि कहाँ जाएँ। हालाँकि, स्पॉटलाइट होप नामक सेल फ़ोन ऐप के ज़रिए बचपन के कैंसर से जूझ रहे परिवारों के लिए उम्मीद की किरण है। यह मुफ़्त ऐप स्थानीय संसाधनों, वित्तीय मदद और परिवहन के बारे में जानकारी देता है। इसके अलावा, स्पॉटलाइट होप ऐसे अन्य परिवारों से जुड़ने का भी काम करता है जो इसी तरह की स्थिति का सामना कर रहे हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि स्पॉटलाइट होप को बचपन के कैंसर से जूझ रहे लोगों को खोजने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिन पर वे मदद के लिए भरोसा कर सकते हैं।

राष्ट्रीय बहादुर दिवस मनाना आज के उत्सव को मनाने में आप कई तरीकों से भाग ले सकते हैं। आप यह कर सकते हैं:

स्पॉटलाइट होप के बारे में बात फैलाएं।

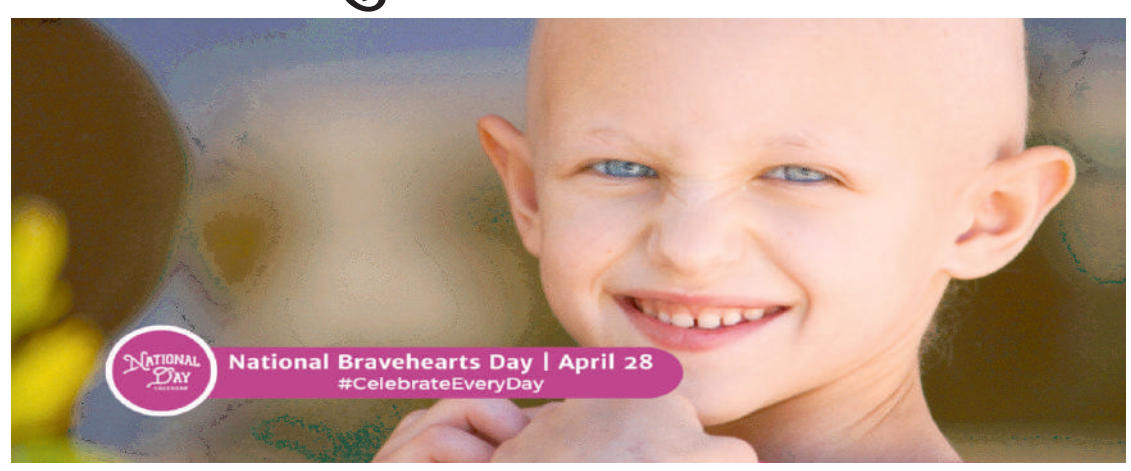

सोशल मीडिया पर पोस्ट करने के लिए #SpotlightHope और #NationalBraveHeartsDay का उपयोग करें। स्पॉटलाइट होप ऐप का सुझाव उस परिवार को दें जिसे आप जानते हैं कि वह बचपन में कैंसर से जूझ रहा है। बच्चों के लिए इस ब्रेवहार्ट्स को दान दें ताकि वे अपना काम जारी रख सकें।

राष्ट्रीय बहादुर दिवस का इतिहास जेरेमी और एमी जैकब्स ने 2008 में अपनी बेटी एवा के सम्मान में ब्रेवहार्ट्स फॉर किड्स की स्थापना की। 13 महीने की उम्र में, एवा और उसके माता-पिता को मेडुलोब्लास्टोमा ब्रेन ट्यूमर का निदान मिला। सौभाग्य से, एवा ने कैंसर से अपनी लड़ाई जीत ली। दंपति जानते थे कि एवा का जीवन एक उपहार था और ऐसी ही परिस्थितियों में अन्य परिवारों की मदद करने की तीव्र इच्छा थी।2015 में, ब्रेवहार्ट्स फॉर किड्स संगठन ने नेशनल ब्रेवहार्ट्स फॉर किड्स डे की स्थापना की। नेशनल डे कैलेंडर के रजिस्ट्रार ने घोषणा की कि यह दिन हर साल 28 अप्रैल को मनाया जाएगा।आज, ब्रेवहार्ट्स फॉर किड्स न केवल बच्चों की जान बचाने में मदद करता है, बल्कि बचपन में कैंसर के संकट से जूझ रहे परिवारों को जानकारी, उम्मीद, मार्गदर्शन और संसाधन भी प्रदान करता है। संगठन अपनी सेवाएँ निःशुल्क प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, व्यक्तिगत योगदान का 100% किसी के लिए भी उपलब्ध कार्यक्रमों का समर्थन करने के लिए जाता है। इसमें आपातकालीन धन उगाहना, साथ ही 1-ऑन-1 मेंटरिंग शामिल है। परिवारों को एक ऐसे मेंटर से मिलाया जाता है जो अपने बच्चे के साथ समान निदान और संकट का सामना कर रहा हो। ब्रेवहार्ट्स फॉर किड्स अब देश का अग्रणी बाल चिकित्सा कैंसर संगठन है जो परिवारों को बचपन के कैंसर के बुरे सपने से बाहर निकालने के लिए संसाधनों से जोड़ता है। आशा, प्रेरणा, मार्गदर्शन और संसाधनों से जुड़ाव प्रदान करके, वे बच्चों के जीवन को बचाने और बचपन के कैंसर से जूझ रहे परिवारों की सहायता करने में मदद करते हैं।

भारत-पाक़ के बीच तनाव चरम पर पहुंचा - सभी मीडिया प्लेटफॉर्म्स के लिए एडवाइज़री ज़ारी-जम्मू सरकारी मेडिकल, स्टाफ,दवाइयां,उपकरण तैयार रखने के आदेश ज़ारी

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर अब दुनियाँ के हर देश की ऐसी विचारधारा हो गई है कि,भारत अब दम रखता है, वैश्विक निर्णयों में हस्तक्षेप,अर्थव्यवस्था में दखल औरअंतरराष्ट्रीय मंचों पर दमक व विकसित देशोंमें पैठ के चलते पहलगाम हमले नें मानों सोए शेर को जगा दिया है, या यूं कहें कि दुश्मन ने मधुमक्खियां के छत्ते में हाथ डाला है तो अंजाम तो भुगतना पड़ेगा ही, हालांकि भारतीय फौजी नेता या विशेषज्ञों ने सीधे तौर पर कोई बयान नहीं दिया है परंतु मेरा मानना है कि बौद्धिक क्षमता में निपुण हर भारतीय अब समझ गया है कि सरकार अब पहलगाम हमले का जबरदस्त जवाब देने के मूड में है, क्योंकि हम देख रहे हैं कि सिंधु नदी जल, वीजा, वाघा बॉर्डर इत्यादि पर सख्त फैसलों के बाद जम्मू के अस्पतालों मेडिकल कॉलेजों को अलर्ट करना, भारतीय सुरक्षा बल हाई अलर्ट पर रहना तथा दिनांक 26 अप्रैल 2025 को देर शाम सभी मीडिया चैनलों प्लेटफॉर्मों के लिए एडवाइजरी जारी करना यह किसी बड़ी कार्रवाई की ओर इशारा करता है,जिसपर पूरा विश्व नजरे गड़ाए बैठा है,क्योंकि पूरे अंतरराष्ट्रीय जगत ने आतंकवाद के खिलाफ़ भारत के पक्ष में पुणे समर्थन दिया है, इसीलिए किसी ठोस कार्रवाई की उम्मीद लगाना वाजबी भी है। चूँकि अंतरराष्ट्रीय जगत में भारत द्वारा पाक पर किसी सैन्य कार्रवाई या सर्जिकल स्ट्राइक की सुबसुबाहट हो रही है,पहलगाम हमले की जवाबीकार्रवाई पर सबकी नज़रें टिकी हुई है, तथा भारत-पाक ने सीमा पर तैनाती बढ़ाई है एवं केंद्र सरकार, विपक्ष, जम्मू कश्मीर सरकार, कश्मीरी आवाम हम साथ साथ हैं, वाली लाइन पर आ गए हैं, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, भारत पाक के बीच तनाव चरम पर पहुंचा, सभी मीडिया प्लेटफॉर्म्स के लिए एडवाइजरी जारी, जम्मू सरकारी मेडिकल, स्टाफ, दवाइयां, उपकरण तैयार रखने के आदेश ज़ारी।

साथियों बात अगर हम सूचना प्रसारण मंत्रालय द्वारा सभी मीडिया प्लेटफॉर्म्स के लिए एडवाइजरी जारी करने की करें तो, राष्ट्रीय सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए सभी मीडिया चैनलों, समाचार एजेंसियों और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं के लिए एक महत्वपूर्ण सलाह जारी की है। मंत्रालय ने निर्देश दिया है कि रक्षा अभियानों और सुरक्षा बलों की आवाजाही से संबंधित किसी भी जानकारी का सीधा प्रसारण न किया जाए। दरअसल, इससे पहले भी कई बार ऐसी घटनाओं को कवर करने को लेकर मीडिया पर सवाल उठ चुके हैं। ऐसे में प्रसारण मंत्रालय ने पहले ही मीडिया को सतर्क कर दिया है और सलाह दी है। एडवाइजरी में कहा गया है, राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में, सभी मीडिया प्लेटफॉर्म, समाचार एजेंसियों और सोशल मीडिया उपयोगकर्ताओं से अनुरोध है कि वे सुरक्षा संबंधी अभियानों से जुड़े मामलों पर रिपोर्टिंग करते समय अत्यधिक जिम्मेदारी बरतें। मौजूदा कानूनों और विनियमों का सख्ती से पालन करें। मंत्रालय ने स्पष्ट किया कि संवेदनशील जानकारी का असावधानीपूर्वक प्रसारण राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डाल सकता है। पुलवामा हमले के दौरान कुछ मीडिया चैनलों द्वारा सुरक्षा बलों की तैनाती और उनके ठिकानों की विस्तृत जानकारी प्रसारित करने पर सवाल उठे थे। विशेषज्ञों और रक्षा विश्लेषकों ने तर्क दिया था कि ऐसी जानकारी आतंकवादी समूहों तक पहुंच सकती है, जिससे सुरक्षा बलों के लिए जोखिम बढ़ जाता है।एडवाइजरी में कारगिल युद्ध, मुंबई आतंकवादी हमले और कंधार विमान अपहरण जैसी पिछली घटनाओं का हलवा दिया गया है।मंत्रालय की यह सलाह इन घटनाओं से सबक लेते हुए उठाया गया कदम माना जा रहा है। यह दिशानिर्देश न केवल रक्षा अभियानों की गोपनीयता सुनिश्चित करेगा, बल्कि जनता में अनावश्यक भय और अफवाहों को भी रोकेगा।मंत्रालय नेमीडिया से अपील की है कि वे केवल सत्यापित और प्रामाणिक जानकारी ही साझा करें। यह सलाह सोशल मीडिया उपयोग कर्ताओं के लिए भी महत्वपूर्ण है, जो अक्सर अनजाने में संवेदनशील जानकारी साझा कर देते हैं। मंत्रालय ने सभी से जिम्मेदार और सुरक्षित सूचना प्रसार की अपील की है, ताकि राष्ट्रीय सुरक्षा से कोई समझौता न हो। देशहित में मीडिया चैनल लाइव कवरेज करते हुए सावधानी बरतें। एडवाइजरी में 8 निर्देश दिए गए हैं। (1) राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में, सभी मीडिया प्लेटफॉर्म्स, समाचार एजेंसियों और सोशल मीडिया यूजर्स को सलाह दी जाती है कि वे अत्यंत जिम्मेदारी के साथ काम करें और रक्षा व अन्य सुरक्षा से संबंधित अभियानों की रिपोर्टिंग करते समय मौजूदा कानूनों और नियमों का सख्ती से पालन करें। (2) विशेष रूप सेः रक्षा अभियानों या बलों की गतिविधियों से संबंधित किसी भी प्रकार का रियल-टाइम कवरेज,लाइव प्रसारण,या सूत्रों परआधारित जानकारी का प्रकाशन नहीं किया जाना चाहिए, संवेदनशील जानकारी का समय से पहले खुलासा करने से शत्रुतापूर्ण तत्वों को मदद मिल सकती है और इससे अभियानों की प्रभावशीलता और सुरक्षा बलों के कर्मियों की सुरक्षा को खतरा हो सकता है। (3) पिछले घटनाक्रमों ने जिम्मेदार रिपोर्टिंग के महत्व को रेखांकित किया है। कारगिल युद्ध, मुंबई आतंकवादी हमले (26/11), और कंधार अपहरण जैसी घटनाओं के दौरान,

अनियंत्रित कवरेज का राष्ट्रीय हितों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा था। (4) मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म और पर्सनल यूजर राष्ट्रीय सुरक्षा की रक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कानूनी दायित्वों के अलावा, यहहमारी सामूहिक नैतिक जिम्मेदारी भी है कि हम अपनी कार्रवाइयों से जारी अभियानों या सुरक्षा बलों की सुरक्षा से समझौता न करें। (5) सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय पहले ही सभी टीवी चैनलों को केबल टेलीविजन नेटवर्क (संशोधन) नियम, 2021 के नियम 6(1)(p) का पालन करने की सलाह दे चुका है। नियम 6(1)(p) कहता है कि, कोई भी कार्यक्रम केबल सेवा में प्रसारित नहीं किया जाएगा जिसमें किसी भी सुरक्षा बल द्वारा किए जा रहे किसी भी आतंकवाद विरोधी अभियान का लाइव कवरेज शामिल हो, जहां मीडिया कवरेज को केवल सरकार द्वारा नामित अधिकारी द्वारा समय-समय पर ब्रीफिंग तक सीमित रखा जाएगा, जब तक कि ऐसा अभियान समाप्त नहीं हो जाता (6) यह ऐसा प्रसारण केबल टेलीविजन नेटवर्क (संशोधन) नियम, 2021 का उल्लंघन है और इसके तहत कार्रवाई के लिए उत्तरदायी है। इसलिए, सभी टीवी चैनलों को सलाह दी जाती है कि वे राष्ट्रीय सुरक्षा के हित में किसी भी आतंकवाद विरोधी अभियान और सुरक्षा बलों की गतिविधियों का लाइव कवरेज न करें। मीडिया कवरेज को सरकार द्वारा नामित अधिकारी द्वारा समय-समय पर की गई ब्रीफिंग तक सीमित किया जा सकता है, जब तक कि अभियान समाप्त न हो जाए। (7) सभी हितधारकों से अनुरोध है कि वे सतर्कता, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी के साथ रिपोर्टिंग जारी रखें, और राष्ट्र की सेवा में उच्चतम मानकों को बनाए रखें। (8) यह आदेश मंत्रालय के सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति से जारी किया गया है।

साथियों बात अगर हम पर पहलगाम आतंकी हमले पर दोनों देशों की फौज़े हाई-अलर्ट पर होने की करें तो, बता दें, पहलगाम में हुए आतंकी हमले के बाद भारत और पाक दोनों की फौजें हाई अलर्ट पर हैं। गुरुवार रात पाक आर्मी ने लाइन ऑफ कंट्रोल पर स्मॉल आर्म फायरिंग की, जिसका भारतीय सेना ने माकूल जवाब दिया। दूसरी तरफ पूरी रात अलग अलग जगहों पर फायरिंग की आवाज गूंजती रही।भारतीय सेना पूरे एलओसी परअलर्ट है। सूत्रों के मुताबिक हाई अलर्ट में सभी अहम पदों पर तैनात लोग हर वक्त उपलब्ध रहते हैं। क्विक रिएक्शन टीम का रिस्पॉन्स टाइम कम हो जाता है। यानी कुछ भी होने पर तुरंत उसपर एक्शन होता है। सभी असेस्ट्स एकदम रेडी होते हैं। राशन का रिजर्व स्टॉक 7 से 15 दिन का पूरी तरह सुनिश्चित हो जाता है।यह अलग अलगयूनिट में अलग अलग होता है क्योंकि सबकी लोकेशन और भौगोलिक स्थिति अलग होती है।हर यूनिट के पासजितना गोला-बारूद होना चाहिए वह चेक होता है और सुनिश्चित होता है कि संभावित स्थितियों केहिसाब से सभी तैयारीहो, अंतरराष्ट्रीय जगत में आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भारत को मजबूती से समर्थन की घोषणा करता लगा हुआ है, इसलिए सर्जिकल स्ट्राइक की सुबसुबाहट बन रही है, हमले की निंदा करने वालों मैं खुद कश्मीर की आम जनता भी शामिल हो गई है, पहलगाम हमले के बाद भारत-पाक के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया है। जानकारी के मुताबिक पाकिस्तान ने जम्मू क्षेत्र में 200 किलोमीटर लंबी भारत-पाक अंतरराष्ट्रीय सीमा के सामने चिनाब रेंजर्स को तैनात किया है। पाकिस्तान की तरफ से सीमा पर तैनाती बढ़ाने के बाद भारतीय सुरक्षा बल भी हाई अलर्ट पर हैं। अधिकारियों ने खुफिया सूचना के आधार पर बताया है कि कश्मीरी पंडित और गैर कश्मीरी आतंकियों के निशाने पर हैं और इसीलिए चप्पे-चप्पे की तलाशी ली जा रही है। इस बीच किसी भी अप्रिय घटना के मद्देनजर जम्मू के अस्पतालों को दवाइयां का स्टॉक तैयार रखने का आदेश दिया गया है।

साथियों बात अगर हम जम्मू के सभी मेडिकल कॉलेजों अस्पतालों, अधिकारियों, स्टाफ को अलर्ट रहने के आदेश देने की करें तो, जम्मू के सरकारी मेडिकल कॉलेज और अस्पताल के अधिकारियों ने मेडिकल स्टाफ को सतर्क रहने और जरूरी दवाइयां और उपकरण तैयार रखने को कहा है।जीएमसीएच जम्मू के मेडिकल सुपरिंटेंडेंट की ओर से जारी आदेश में कहा गया है, जम्मू- कश्मीर में मौजूदा सीमा पार तनाव के मद्देनजर सभी स्टाफ सदस्यों को सतर्क रहने और किसी भी समय होने वाली किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए पूरी तैयारी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया जाता है।आदेश में आगे कहा गया है, जीएमसीएच के स्टोर ऑफिसर और स्टोर कीपर से अनुरोध है कि वे किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए तत्काल उपयोग के लिए सभी आवश्यक आपूर्ति, आपात कालीन दवाएं और महत्वपूर्ण उपकरण तैयार रखें। आदेश में सभी अस्पताल कर्मचारियों को अनावश्यक छुट्टियां ना लेने की सलाह भी दी गई है और उन्हें सक्रिय रूप से ड्यूटी पर रहने को कहा गया है।इसके अलावा जम्मू में आपात स्थिति के मद्देनजर एक 24x7 कंट्रोल रूम भी स्थापित किया गया है। यह कंट्रोल रूम चौबीसों घंटे काम करेगा और किसी भी तत्काल आवश्यकता या आपात स्थिति में यहां संपर्क किया जा सकता है। कंट्रोल रूम से इस नंबर पर संपर्क किया जा सकता हैः 0191-2582355 और 0191-2582356 यह जानकारी आदेश में दी गई है

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि भारत-पाक़ के बीच तनाव चरम पर पहुंचा- सभी मीडिया प्लेटफॉर्म्स के लिए एडवाइज़री ज़ारी-जम्मू सरकारी मेडिकल, स्टाफ, दवाइयां, उपकरण तैयार रखने के आदेश ज़ारीभारत-पाक़ ने सीमा पर तैनाती बढ़ाई- भारतीय सुरक्षा बल हाई अलर्ट पर- केंद्र सरकार,विपक्ष,जम्मू कश्मीर सरकार,कश्मीरी आवाँम, हम साथ साथ हैं।अंतरराष्ट्रीय ज़गत में भारत द्वारा पाक पर किसी सैन्य कार्रवाई यासर्जिकल स्ट्राइक की सुबसुबाहट है- पहलगाम हमले की ज़वाबी कार्यवाही पर सबकी नज़रें लगी।

मौजूदा किआ केरेन्स के मुकाबले नई गाड़ी में मिल सकते हैं ये बेहतरीन फीचर्स, 8 मई को होगी पेश

परिवहन विशेष न्यूज

वाहन निर्माता किआ की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही नई Kia Carens को बाजार में जल्द ही पेश कर दिया जाएगा। निर्माता की ओर से नई गाड़ी को किस तरह के फीचर्स के साथ अपडेट किया जा सकता है। कब तक इसे पेश करने की तैयारी की जा रही है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारतीय बाजार में किआ मोटर्स की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से जल्द ही नई गाड़ी के तौर पर 2025 Kia Carens को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। मौजूदा वर्जन के मुकाबले नई एमपीवी में किस तरह के फीचर्स को अपडेट के साथ ऑफर किया जा सकता है। कब तक इसे पेश किया जाएगा। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च होगी नई कैरेंस

किआ मोटर इंडिया की ओर से जल्द ही नई गाड़ी के तौर पर नई कैरेंस को लॉन्च करने की तैयारी की जा रही है। मौजूदा वर्जन के मुकाबले नई कैरेंस में कई बेहतरीन फीचर्स को ऑफर किया जा सकता है। साथ ही कुछ कॉस्मैटिक बदलाव भी किए जा सकते हैं।

मिल सकते हैं ये फीचर्स

निर्माता की ओर से अभी औपचारिक तौर पर नई गाड़ी के फीचर्स की जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन उम्मीद की जा रही है कि इसमें Level 2 ADAS, पैनोरमिक सनरूफ, नए डिजाइन के साथ इंटीरियर और डैशबोर्ड के साथ ही एक्सटीरियर में नए डिजाइन वाले बंपर और ग्रिल को दिया जा सकता है।

मिलते हैं ये फीचर्स

किआ की ओर से एमपीवी के तौर पर कैरेंस को ऑफर किया जाता है। इसमें 10.25 इंच इंफोटेनमेंट सिस्टम, फ्रंट वेंटिलेटिड सीट्स, सिंगल पेन सनरूफ, वायलेस चार्जिंग, एंबिएंट लाइट्स, स्मार्ट एयर प्यूरीफायर, बोस ऑडियो सिस्टम जैसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ ही छह और सात सीटों का विकल्प भी दिया जाता है।

कितना दमदार इंजन

एमपीवी में 1.5 लीटर नेचुरल एस्पिरेटिड पेट्रोल, 1.5 लीटर टर्बो पेट्रोल और 1.5 लीटर डीजल इंजन के विकल्प दिए जाते हैं। इन इंजन के साथ ही नई कैरेंस को भी ऑफर किया जा सकता है। जिसके साथ मैनुअल, डीसीटी जैसे ट्रांसमिशन के विकल्प भी दिए जाते हैं।

किनसे है मुकाबला

मौजूदा वर्जन वाली कैरेंस का सीधा मुकाबला Maruti Ertiga के साथ होता है। लेकिन नई कैरेंस का सीधा मुकाबला JSW MG Hector, Mahindra Scorpio, Mahindra XUV 700, Tata Safari, Toyota Innova Crysta जैसी एसयूवी और एमपीवी के साथ होगा।

एसयूवी के साथ अब ट्रक और बस सेगमेंट में भी बढ़ेगा महिंद्रा का दबदबा, एसएमएल आईसूजु में खरीदेगी हिस्सेदारी

परिवहन विशेष न्यूज

भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Mahindra की ओर से यात्री वाहन सेगमेंट के साथ ही कमर्शियल सेगमेंट में भी वाहन ऑफर किए जाते हैं। हाल में ही SML Isuzu का अधिग्रहण कर रही है। जिसके बाद अब निर्माता की ओर से कमर्शियल सेगमेंट में भी मजबूती मिलेगी। निर्माता की ओर से इस बारे में और क्या जानकारी सार्वजनिक की गई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। भारत की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Mahindra and Mahindra की ओर से यात्री वाहन सेगमेंट तो एसयूवी को ऑफर किया ही जाता है। अब निर्माता कमर्शियल सेगमेंट में भी अपनी मौजूदगी को बढ़ाने की तैयारी कर रही है। इसके लिए महिंद्रा ने SML ISUZU के अधिग्रहण को तय कर दिया है। निर्माता की ओर से और क्या जानकारी दी गई है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Mahindra करेगी SML ISUZU का अधिग्रहण

महिंद्रा की ओर से जानकारी दी गई है कि वह SML ISUZU का अधिग्रहण करने की तैयारी कर रही है। निर्माता की ओर से यह भी बताया गया है कि वह SML ISUZU में 58.96 फीसदी का हिस्सा खरीदेगी।

कितने की हुई डील

निर्माता की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक महिंद्रा एंड महिंद्रा एसएमएल इजुजू के प्रमोटरों में से एक सुमितोमो कॉर्पोरेशन से 63.62 लाख शेयर्स को खरीदेगी। इन शेयर्स को 650 रुपये प्रति शेयर की दर से खरीदा जाएगा। इस डील की कुल कीमत 413.55 करोड़ रुपये होगी जिसके बाद महिंद्रा की एसएमएल में हिस्सेदारी 43.96 फीसदी हो जाएगी।

इसके साथ ही निर्माता एसएमएल में इजुजू मोटर्स से भी 21.70 लाख शेयर्स को खरीदेगी। जिनको 650 रुपये प्रति शेयर की कीमत पर ही खरीदा जाएगा। इन शेयर्स की कीमत 141.10 करोड़ रुपये होगी और यह एसएमएल की इक्विटी का 15 फीसदी हिस्सा होगा।

किस सेगमेंट में मिलेगा फायदा

महिंद्रा एंड महिंद्रा को इस डील से कमर्शियल वाहनों के सेगमेंट में फायदा मिलेगा। इससे निर्माता को 3.5 टन और उससे ज्यादा के कमर्शियल वाहन सेगमेंट में अपनी पकड़ बनाने में आसानी होगी। इस सेगमेंट में महिंद्रा की अभी सिर्फ तीन फीसदी हिस्सेदारी है। इसके अलावा लाइट कमर्शियल वाहन सेगमेंट में महिंद्रा की हिस्सेदारी 52 फीसदी तक है।

अधिकारियों ने कही यह बात

डील पर महिंद्रा ग्रुप के सीईओ और एमडी डॉ अनीश शाह ने कहा कि यह अधिग्रहण एक महत्वपूर्ण कदम है। एसएमएल इसुजु का अधिग्रहण महिंद्रा समूह के उभरते व्यवसायों में 5 गुना वृद्धि प्रदान करने के दृष्टिकोण में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। यह अधिग्रहण उच्च संभावित विकास क्षेत्रों में निवेश करने के लिए हमारी पूंजी आवंटन रणनीति के अनुरूप है, जिसमें जीतने का मजबूत अधिकार है और जिन्होंने परिचालन उत्कृष्टता का प्रदर्शन किया है।

मारुति सुजुकी इग्निस के बेस वेरिएंट को एक लाख रुपये की अग्रिम भुगतान के बाद ले आएं घर

परिवहन विशेष न्यूज

कार फाइनेंस योजना मारुति सुजुकी की ओर से हैचबैक के तौर पर Maruti Ignis को बाजार में ऑफर किया जाता है। अगर आप भी इस कार के बेस वेरिएंट को खरीदकर घर लाने का मन बना रहे हैं। तो एक लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इस गाड़ी को घर लाया जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश की प्रमुख वाहन निर्माता Maruti Suzuki की ओर से कई सेगमेंट में वाहनों की बिक्री की जाती है। निर्माता की ओर से नेक्सा डीलरशिप के जरिए ऑफर की जाने वाली Maruti Ignis को हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। इस गाड़ी के बेस वेरिएंट को घर लाने का मन बना रहे हैं तो एक लाख रुपये की Down Payment करने के बाद हर महीने कितने रुपये की EMI देकर इसे घर लाया जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Maruti Ignis Price

Maruti की ओर से Ignis को हैचबैक सेगमेंट में ऑफर किया जाता है। कंपनी इस हैचबैक के बेस वेरिएंट को 5 .85 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर बिक्री के लिए उपलब्ध करवा रही है। अगर इसे दिल्ली में खरीदा जाता है तो 5.85 लाख रुपये की एक्स शोरूम कीमत के साथ ही इस पर रजिस्ट्रेशन, इंश्योरेंस भी देना होगा। इस गाड़ी को खरीदने के लिए करीब 50 हजार रुपये का रजिस्ट्रेशन टैक्स, करीब 529 रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। साथ ही 850 रुपये Fastag के भी देने होंगे। इसके बाद गाड़ी की दिल्ली में ऑन रोड कीमत 6.65 लाख रुपये हो जाती है।

एक लाख रुपये Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर Maruti Ignis के बेस वेरिएंट को आप खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में एक लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 5.65 लाख रुपये की राशि को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको नौ फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 5.65 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने सिर्फ 9096 रुपये की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी Car

अगर आप नौ फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 5.65 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 9096 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Maruti Ignis के बेस वेरिएंट के लिए करीब 1.98 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 8.64 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Maruti Suzuki की ओर से Ignis को हैचबैक सेगमेंट में लाया जाता है। इस सेगमेंट में इसका सीधा मुकाबला Maruti Alto K10, Maruti Celerio, Maruti Wagon R, Tata Tiago, Hyundai i10 के साथ होता है।

टाटा नेक्सॉन ईवी vs टाटा पंच ईवी: भारत NCAP क्रैश टेस्ट के मुताबिक कौन-सी SUV EV ज्यादा सेफ

परिवहन विशेष न्यूज

हाल ही में Tata Nexon EV के बड़े बैटरी पैक का भारत NCAP क्रैश टेस्ट किया गया है जिसमें इसे 5 स्टार सेफ्टी रेटिंग मिली है। यह जिस कीमत में आती उसी कीमत में Tata Punch EV को भी ऑफर किया जाता है जो जून 2024 में 5-स्टार सुरक्षा रेटिंग हासिल कर चुकी है। जिसे देखते हुए हम आपको बता रहे हैं कि दोनों में से कौन-सी सुरक्षित कार है?

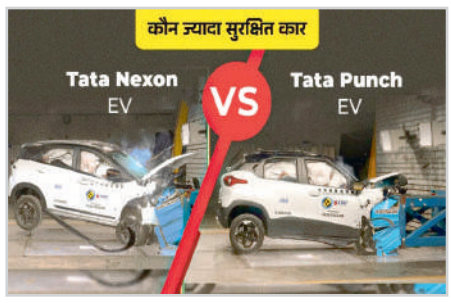

नई दिल्ली। टाटा नेक्सॉन ईवी का हाल ही में भारत NCAP क्रैश टेस्ट हुआ है। इसमें इस इलेक्ट्रिक कार को फिर से 5 स्टार सेफ्टी रेटिंग मिली है। यह जिस कीमत में आती उतनी ही कीमत में Tata Punch EV वेरिएंट भी आता है, जिसे जून 2024 में भारत NCAP क्रैश टेस्ट में 5-स्टार सुरक्षा रेटिंग मिली है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको बता रहे हैं कि Tata Nexon EV और Tata Punch EV में कौन-सा ऑप्शन आपके लिए ज्यादा सुरक्षित इलेक्ट्रिक कार है?

Tata Nexon EV भारत NCAP क्रैश टेस्ट

इसके फ्रंटल डिफॉर्मेबल बैरियर टेस्ट में ड्राइवर के सिर, गर्दन, श्रोणि, जांघों और पैरों को अच्छी सेफ्टी मिली है। हालांकि, छाती और टिबिया को 'पर्याप्त' सुरक्षा मिली है। सह-चालक को शारीरिक अंगों को अच्छी सुरक्षा मिली है, लेकिन दाएं टिबिया को पर्याप्त सुरक्षा मिली है।

इसके साइड डिफॉर्मेबल बैरियर टेस्ट में ड्राइवर को पर्याप्त सुरक्षा मिली है, जबकि शरीर के बाकी हिस्सों को अच्छी सेफ्टी रेटिंग मिली है। वहीं, साइड पोल इम्पैक्ट टेस्ट में ड्राइवर के सभी प्रमुख अंगों को अच्छी सुरक्षा मिली है।

चाइल्ड ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन (COP) टेस्ट में 18 महीने की और 3 साल की डमी दोनों ने साइड इम्पैक्ट प्रोटेक्शन के लिए 4 में से 4 पॉइंट मिले हैं। वहीं, फ्रंटल प्रोटेक्शन में 18 महीने की डमी के लिए 8 में से 7.95 पॉइंट और 3 साल की डमी के लिए पूरे पॉइंट मिले हैं।

Tata Punch EV भारत NCAP क्रैश टेस्ट

इसके फ्रंटल डिफॉर्मेबल बैरियर टेस्ट में ड्राइवर के सभी अंगो को अच्छी सुरक्षा मिली है, लेकिन टिबिया को पर्याप्त सुरक्षा मिली। वहीं, सह-चालक के लिए छाती को छोड़कर सभी शरीर के अंगों के लिए अच्छी सुरक्षा रेटिंग मिली है।

जब इसका साइड पोल इम्पैक्ट टेस्ट किया गया तो ड्राइवर के शरीर के सभी हिस्सों को अच्छी सुरक्षा मिली। वहीं, साइड मूवेबल डिफॉर्मेबल बैरियर टेस्ट में ड्राइवर को पर्याप्त सेफ्टी मिली है और बाकी सभी महत्वपूर्ण हिस्सों के लिए अच्छी सेफ्टी रेटिंग मिली है। चाइल्ड ऑक्यूपेंट प्रोटेक्शन (COP) टेस्ट में 18 महीने और 3 साल की डमी दोनों के लिए फ्रंटल इम्पैक्ट प्रोटेक्शन के लिए 8 में से 8 पॉइंट मिले हैं। वहीं, साइड इम्पैक्ट प्रोटेक्शन के लिए 4 में से 4 पॉइंट मिले हैं।

कीमत

Tata Nexon EV को भारतीय बाजार में 12.49 लाख रुपये से लेकर 17.19 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है।

Tata Punch EV को भारत में 9.99 लाख रुपये से लेकर 14.44 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में ऑफर किया जाता है।

लॉन्च से पहले भारत में दौड़ता दिखा टेस्ला साइबरट्रक, जानें कीमत और कब तक हो सकता है लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

अमेरिकी इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता Tesla की ओर से कई देशों में वाहनों की बिक्री की जाती है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक Tesla Cybertruck लॉन्च से पहले ही भारतीय सड़कों पर देखा गया है। कहां पर इसे देखा गया है। कब तक टेस्ला भारत में अपना सफर शुरू कर सकती है। साइबरट्रक की क्या कीमत है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। दुनिया के कई देशों में Tesla की कारों को काफी पसंद किया जाता है। निर्माता की ओर से ऑफर किए जाने वाले Cybertruck को हाल में ही भारत में भी देखा गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक किस राज्य में इस ट्रक को देखा गया है। किस तरह के फीचर्स के साथ इसे ऑफर किया जाता है। कब तक टेस्ला भारत में अपना सफर शुरू कर सकती है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

भारत आया Tesla Cybertruck

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक टेस्ला साइबरट्रक को भारत में देखा गया है। जानकारी के मुताबिक गुजरात के एक व्यापारी की ओर से इस ट्रक को दुबई से इंपोर्ट करवाया गया है। इसी ट्रक की कुछ फोटो और वीडियो सोशल मीडिया पर कुछ दिन पहले वायरल हो रही थीं। जिसमें यह ट्रक एक फ्लैटबेड ट्रक पर मुंबई के पास देखा गया था।

किसने मंगवाया ट्रक

रिपोर्ट्स के मुताबिक गुजरात के सूरत में एक व्यवसायी ने इस साइबरट्रक को दुबई से मंगवाया है। इस व्यवसायी का नाम लावजी बादशाह बताया जा रहा है। ट्रक पर दुबई की नंबर प्लेट है, जिससे यह पता चलता है कि इसे दुबई से भारत लाया गया है।

क्या विदेशों से ऐसे आ सकती हैं कारें

आमतौर पर जब भी किसी गाड़ी को विदेश से भारत लाया जाता है तो सरकार की ओर से उस पर टैक्स वसूल किया जाता है। जिसके बाद उसे भारत में रजिस्ट्रेशन करवाकर उपयोग में लाया जा सकता है। लेकिन अगर गाड़ी पर विदेशी नंबर प्लेट हो और वह भारत में चलाया जाए तो उसे लाने के बाद सिर्फ कुछ महीनों तक के लिए ही निजी उपयोग में लाया जा सकता है। इस तरह के वाहन को कार्नेट के जरिए भारत में कुछ समय तक के लिए लाया जा सकता है और अवधि पूरी होने के बाद उसे वापस उसी देश भेजना होता है जहां से वाहन को भारत लाया गया था।

क्या है खासियत

कंपनी की ओर से इसे स्टेलनेस स्टील से बनाया जाता है। जिससे हादसा होने पर काफी कम नुकसान होता है। फुली इलेक्ट्रिक तकनीक के साथ ऑफर किया जाता है। यह ट्रक 548 किलोमीटर की रेंज, 845 हॉर्स पावर के साथ आता है। मिड रेंज मॉडल के मुकाबले यह ट्रक 2.6 सेकेंड में जीरो से 100 किलोमीटर प्रति घंटे तक की स्पीड पकड़ लेता है। इसकी टॉप स्पीड 210 किलोमीटर प्रति घंटे की है। सिर्फ 15 मिनट की सुपरचार्जिंग में इस ट्रक को 218 किलोमीटर की रेंज मिलती है। इसमें आगे की ओर 18.5 इंच की टचस्क्रीन मिलती है, जबकि पीछे की ओर 9.4 इंच की स्क्रीन को दिया गया है। इस ट्रक में 15 स्पीकर, 2 सब वूफर, वायरलैस चार्जिंग, 20 इंच के व्हील्स, बैटरी और ड्राइव यूनिट पर आठ साल या 2.40 लाख किलोमीटर की वारंटी दी जाती है।

कब तक भारत में होगी लॉन्च

टेस्ला की ओर से भारत में लॉन्च को लेकर कोई औपचारिक जानकारी नहीं दी गई है। लेकिन हाल में ही कई खबरें आई थीं, जिसमें यह बताया गया था कि टेस्ला ने मुंबई में पहले शोरूम की जगह फाइनल कर दी है और कुछ समय बाद इसकी कुछ कारों की टेस्टिंग पुणे-मुंबई एक्सप्रेस पर करते हुए देखा जा चुका है। ऐसे में उम्मीद की जा रही है कि अगले कुछ महीनों में टेस्ला की ओर से भारत में लॉन्च को लेकर औपचारिक घोषणा की जा सकती है।

2025 स्कोडा कुशाक के टॉप वेरिएंट को है घर लाना, दो लाख रुपये की डाउन पेमेंट के बाद कितनी देनी होगी ईएमआई

परिवहन विशेष न्यूज

स्कोडा की ओर से भारतीय बाजार में सेडान और एसयूवी सेगमेंट के वाहनों को ऑफर किया जाता है। Skoda की कॉम्पैक्ट एसयूवी Kushaq के टॉप वेरिएंट Prestige को अगर आप भी खरीदने का मन बना रहे हैं तो दो लाख रुपये देने के बाद कितने रुपये (Skoda Kushaq Prestige EMI) हर महीने देकर इसे खरीदा जा सकता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। स्कोडा की ओर से कॉम्पैक्ट एसयूवी के तौर पर Skoda Kushaq को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से ऑफर की जाने वाली इस एसयूवी के टॉप वेरिएंट के तौर पर Prestige को लाया जाता है। अगर आप भी इस एसयूवी के टॉप वेरिएंट को खरीदने का मन बना रहे हैं तो दो लाख रुपये की Down Payment करने के बाद कितने रुपये की EMI पर इसे घर लाया (Skoda Kushaq Prestige Down Payment and EMI) जा सकता है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

Skoda Kushaq Prestige Price

Skoda की ओर से Kushaq को कॉम्पैक्ट एसयूवी के तौर पर भारतीय बाजार में बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। इस गाड़ी के टॉप वेरिएंट के तौर पर Prestige को लाया जाता है। जिसकी एक्स शोरूम (Skoda Kushaq Prestige Price) कीमत 16.31 लाख रुपये है। इस गाड़ी को अगर दिल्ली में खरीदा जाता है तो करीब 1.63 लाख रुपये आरटीओ और करीब 63 हजार रुपये इंश्योरेंस के देने होंगे। इसके अलावा एसयूवी पर टीसीएस चार्ज भी देना हो करीब 16310 रुपये होता है। जिसके बाद Skoda Kushaq Prestige on road price करीब 18.73 लाख रुपये के आस-पास हो जाती है।

दो लाख Down Payment के बाद कितनी EMI

अगर आप इस गाड़ी के टॉप वेरिएंट Prestige को खरीदते हैं, तो बैंक की ओर से एक्स शोरूम कीमत पर ही फाइनेंस किया जाएगा। ऐसे में दो लाख रुपये की डाउन पमेंट करने के बाद आपको करीब 16.73 लाख रुपये को बैंक से फाइनेंस करवाना होगा। बैंक की ओर से अगर आपको 9 फीसदी ब्याज के साथ सात साल के लिए 16.73 लाख रुपये दिए जाते हैं, तो हर महीने 26931 रुपये हर महीने की EMI आपको अगले सात साल के लिए देनी होगी।

कितनी महंगी पड़ेगी कार

अगर आप 9 फीसदी की ब्याज दर के साथ सात साल के लिए 16.73 लाख रुपये का बैंक से Car Loan लेते हैं, तो आपको सात साल तक 26931 रुपये की EMI हर महीने देनी होगी। ऐसे में सात साल में आप Skoda Kushaq के Prestige वेरिएंट के लिए करीब 5.88 लाख रुपये बतौर ब्याज देंगे। जिसके बाद आपकी कार की कुल कीमत एक्स शोरूम, ऑन रोड और ब्याज मिलाकर करीब 24.62 लाख रुपये हो जाएगी।

किनसे होता है मुकाबला

Skoda की ओर से Kushaq को कॉम्पैक्ट साइज एसयूवी के तौर पर ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से इस गाड़ी का बाजार में सीधा मुकाबला Maruti Brezza, Tata Nexon, Hyundai Veune, Volkswagen Taigun, Kia Syros, Kis Sonet, Mahindra XUV 3XO जैसी एसयूवी के साथ होता है।

कहानी: दैहिक भूख

विजय गर्ग

आज मनोज बहुत खुश था और पहुंच गया यादों में. 4 साल पहले वह नौकरी की तलाश में मुंबई आया था. पढ़लिख कर गांव में रहने का कोई फायदा नहीं था. वहां तो कोई छोटीमोटी नौकरी मिलती या अपनी छोटी सी दुकान खोल कर बैठना पड़ता. इस के अलावा वहां और कुछ था भी नहीं, जिस पर अपनी गुजरबसर की जा सके. यही सोच कर मनोज ने मुंबई जाने वाली ट्रेन पकड़ ली थी. पहले कुछ दिन तो मनोज को एक लौज में रहना पड़ा, फिर धीरेधीरे उसे उस के गांव के लोग मिल गए, जो 3-4 के समूह में साथसाथ रहते थे. मनोज भी उन्हीं के साथ चाल में रहने लगा था.।

चाल का मतलब है आधे कच्चेपक्के घरों की वे बस्तियां, जहां संकरी गलियों में छोटेछोटे कमरे होते हैं. पानी के लिए एक सरकारी नल का इंतजाम होता है, जहां बच्चेऔरतें और मर्द सुबह से ही अपनेअपने बरतन ले कर लाइन लगा देते हैं, ताकि वे पूरे दिन के लिए पीने व नहानेधोने का पानी भर सकें. अब मनोज बड़ी मेहनत से नौकरी कर के पैसा कमा रहा था और एकएक पैसा जोड़ रहा था, ताकि रहने के लिए अपना छोटा सा घर खरीद सके. आज मनोज इसीलिए खुश था, क्योंकि उस ने एक छोटा सा 8 बाई 8 फुट का कमरा खरीद लिया था. इधर उस के मातापिता भी काफी समय से जोर दे रहे थे कि शादी कर लो. रहने का ठिकाना हो गया था, सो अब मनोज ने भी इस के लिए हामी भर दी थी।

मां ने गांव में अपने ही रिश्ते में एक लड़की पसंद कर रखी थी, जिस का नाम शिल्पा था. शिल्पा भी राह देख रही थी कि कब मनोज आए और उसे ब्याह कर मुंबई ले जाए. मनोज गांव गया और फिर चट मंगनी पट ब्याह. वह एक महीने में शिल्पा को ले कर मुंबई आ गया. शिल्पा मुंबई के तौरतरीके सीख रही थी. वह भी रोज सुबह पानी की लाइन में लग जाती और वहां की मराठी औरतों के साथ बातें कर के थोड़ीथोड़ी मराठी भी सीखने लगी थी. जब शाम को मनोज दफ्तर से काम कर के खोली में लौटता और शिल्पा को अपनी बांहों में भर कर प्यार भरी बातें करता, तो वह कहती, ''धीरे बोलिए, सब के कमरे आसपास हैं. खिड़की भी तो सड़क पर खुलती है. कोई सुन लेगा तो''।

मनोज कहता, ''सुन ले तो सुन ले, हम अपनी बीवी से बात कर रहे हैं, कोई चोरी थोड़े ही कर रहे हैं.'' आसपास की जवान लड़कियां भी कभीकभार शिल्पा को छेड़ कर कहतीं, 'भाभी, कल भैया से क्या बातें हो रही थीं? हम ने सुना था सबकुछ'' शिल्पा जवाब में कहती, ''कोई और काम नहीं है तुम्हारे पास, हमारी बातें सुनने के अलावा?''

इस तरह 4 साल बीत गए और शिल्पा के 2 बच्चे भी हो गए. बड़ी बेटी संध्या और छोटा बेटा वीर. मनोज अपने परिवार में बहुत सुखी था. वह अब एक फ्लैट खरीदना चाहता था, ताकि जब उस के बच्चे बड़े हों तो थोड़े अच्छे माहौल में पलबढ़ सकें. इस के लिए वह एकएक पाई जोड़ रहा था. शिल्पा और मनोज सोने से पहले रोज नए फ्लैट के बारे में ही बात करते थे. मनोज कहता, ''एक वन बैडरूम का फ्लैट हो जाए बस.'' शिल्पा कहती, ''हां, तुम नया घर लेने की तैयारी करो. हम उसे सजा देंगे और बाहर नेम प्लेट पर मेरा भी नाम लिखना. घर के दरवाजे पर हम लिख देंगे 'आशियाना'.''

मनोज हर छुट्टी के दिन ब्रोकर से मिल कर फ्लैट देख कर आता. कोई बहुत अंदर गली में होता, जहां से मेन रोड पर आने में ही आधा घंटा लग जाए, तो कोई बच्चों के स्कूल से बहुत दूर होता. कोई बहुत पुरानी बिल्डिंग होती, जिस में लीकेज की समस्या होती, तो कोई बहुत अंधेरी सी बिल्डिंग होती और कीमत पूछते ही मकान मालिक भी बड़ा सा मुंह खोल देते. कीमत बड़ी और फ्लैट का साइज छोटा. लोग 30 लाख रुपए तक मांगते. कहां से लाता मनोज इतने पैसे?

सो, 20 लाख रुपए में अच्छी सी लोकेशन देख कर उस ने एक वन बैडरूम फ्लैट खरीद लिया, जिस के आसपास सारी सुविधाएं थीं और रेलवे स्टेशन भी नजदीक था. फ्लैट में रहने से शिल्पा और बच्चे भी मुंबई के रंग में रंगने लगे थे. मनोज की बेटी संध्या 13वें साल में थी. उस का शरीर अब गोलाई लेने लगा था और वह अब थोड़ा सजधज कर भी रहने लगी थी. ऊपर से टैलीविजन और मीडिया. आजकल के बच्चे वक्त से पहले ही सबकुछ समझने लग जाते हैं. फिर घर में जगह व एकांत की कमी. अब घर छोटा पड़ने लगा था.

मनोज अब बच्चों से नजरें बचा कर मौका ढूंढ़ता कि कब शिल्पा के करीब आए और उसे अपने आगोश में ले. वक्त तेजी से बीत रहा था. संध्या अब कालेज जाने लगी थी और रोजाना नए कपड़े, जूते, बैग वगैरह की मांग भी करने लगी थी. उस की ये सब जरूरतें पूरी करना मनोज के लिए मुश्किल होता जा रहा था. एक दिन संध्या बोली, ''पापा, मेरी सारी सहेलियां नई फिल्म देखने जा रही हैं, मुझे भी जाना है. मां से कहिए न कि मुझे कुछ रुपए देंगी.''

मनोज ने कहा, ''देखो संध्या बेटी, तुम्हारी बात बिलकुल सही है. तुम्हें भी घूमनेफिरने की आजादी होनी चाहिए. लेकिन बेटी, हम इतने पैसे वाले नहीं हैं. अभी तुम्हारी पढ़ाईलिखाई के तमाम खर्च हैं और बाद में तुम्हारी शादी के. फिर तुम्हारा छोटा भाई भी तो है. उस के बारे में भी तो सोचना है. आज तो मैं तुम्हें पैसे दे रहा हूं, लेकिन रोजरोज जिद मत करना.''

संध्या खुशीखुशी पैसे ले कर कालेज चली गई. शिल्पा मनोज से बोली, ''कैसी बातें करते हैं आप. आज पैसे दिए तो क्या वह रोज नहीं मांगेगी? लड़की को इतनी छूट देना ठीक नहीं है.'' मनोज बोला, ''बच्चों के लिए करना पड़ता है शिल्पा. ये भी तो बाहर की दुनिया देखते हैं, तो इन का भी मन मचलता है. और अगर हम न दें, तो इन का हम पर से भरोसा उठ जाएगा.'' अब संध्या तकरीबन हर रोज मनोज से पैसे मांगने लगी थी. कभीकभी मनोज मना कर देता, तो उस दिन संध्या मुंह फुला कर कालेज जाती. कालेज के बाद या कभीकभी कालेज से छुट्टी कर के लड़केलड़कियां हाथ में हाथ डाले मुंबई के बीच पर घूमते नजर आते. कई बार थोड़े अमीर परिवार के लड़के लड़कियों को अच्छे रैस्टोरैंट में ले जाते, तो कभी फिल्म दिखा कर भी लाते.

मनोज तो संध्या की जरूरत पूरी करने में नाकाम था, सो अब संध्या भी उन लड़कों के साथ घूमने लगी थी. किसी लड़की को बांहों में बांहें डाल कर घुमानाफिराना इस उम्र के लड़कों के लिए बड़े गर्व की बात होती है और लड़कियां सोचती हैं कि यह प्यार है और वह लड़का उन की खूबसूरती का दीवाना है. संध्या की दूसरी सहेलियां भी ऐसे ही लड़कों के साथ घूमती थीं. एक दिन सभी लड़के लड़कियां गोराई बीच चले गए. बोरीवली से छोटी नाव, जिसे 'फेरी' कहते हैं, चलती है, जो एक छोटी सी क्रीक को पार करा देती है और गोराई बीच आ जाता है. यह मछुआरों का गांव है. मछुआरे बहुत ही कम कीमत पर, यों समझिए 2 सौ, 3 सौ रुपयों में कमरे किराए पर दे देते हैं, ताकि लोग बीच से आ कर कपड़े बदल लें और आराम भी कर लें. सो, सारा ग्रुप पूरा दिन सैरसपाटा कर के आता और अलग अलग कमरों में बंद हो जाता. यह सारा खर्चा लड़के ही करते थे.

अब यह सब संध्या व उस की सहेलियों व लड़कों की रोजमर्रा की जिंदगी का हिस्सा बन गया था. कभीकभी वे लड़के अपने दूसरे दोस्तों को भी वहां ले जाते और संध्या व उस की सहेलियां उन लड़कों से भी हिलमिल गईं. यही तो खास बात है इस उम्र की कि कुछ बुरा तो नजर आता ही नहीं. सब अच्छा ही अच्छा लगता है और अगर मातापिता कुछ कहें, तो उन की बातें दकियानूसी लगती हैं. लड़केलड़कियां एकदूसरे की सारी जरूरतें पूरी करते, दैहिक भूख व मौजमस्ती. कुछ महीनों तक ऐसा ही चलता रहा, लेकिन एक दिन वहां पर पुलिस की रेड पड़ गई, जिस में संध्या भी पकड़ी गई. फिर क्या था' सभी लड़केलड़कियों को पुलिस स्टेशन ले जाया गया और फोन कर के उन के मातापिता को भी वहां बुलाया गया.

मनोज के पास भी पुलिस स्टेशन से फोन आया. वह तो फोन सुनते ही हक्काबक्का रह गया. जल्दी से वह दफ्तर से आधे दिन की छुट्टी ले कर पुलिस स्टेशन पहुंचा. वहां संध्या को देखा और सारी बात मालूम होते ही उस की आंखों में खून उतर आया. खैर, पुलिस के हाथपैर जोड़ कर वह संध्या को वहां से ले कर घर आया. जब संध्या की मां ने सारी बात सुनी, तो उस ने संध्या को जोरदार तमाचा जड़ कर कहा, ''शर्म नहीं आई तुझे उन लड़कों के साथ गुलछर्रे उड़ाते हुए?'' संध्या कहां चुप रहने वाली थी. वह कहने लगी, ''19 साल की हूं मैं और बालिग भी हूं. अगर आप और पापा सब कर सकते हैं, तो मैं क्यों नहीं? कितनी बार देखा है मैं ने आप और पापा को''

इतना सुनते ही शिल्पा ने संध्या के गाल पर दूसरा तमाचा जड़ दिया और गुस्से में बोली, ''अरे, हम तो पतिपत्नी हैं, पर तुम इस पढ़नेलिखने की उम्र में बिन ब्याहे ही'' संध्या ने सारी हदें पार कर दीं और बोली, ''तो क्या हुआ जो शादी नहीं हुई तो. तुम लोगों को देख कर बदन में उमंग नहीं जागती? कैसे शांत करूं मैं उसे बिन ब्याहे? अगर वे लड़के मुझे घुमातेफिराते हैं, मेरी जरूरतों का खयाल रखते हैं, तो बुराई भी क्या है इस दैहिक संबंध में? पापा और आप भी तो शादी कर के यही कर रहे हो. सिर्फ एकदूसरे की जरूरतों को पूरा करना. तो क्या इस पर शादी की मुहर लगाना जरूरी है?

''आप लोग तो मेरी जरूरतें पूरी कर नहीं पाते. सिर्फ मैं ही नहीं, आजकल तो अकसर सभी लड़कियां करती हैं यह सब. ''मां, अब तुम लोग पुराने जमाने के हो गए हो. आजकल सब चलता है. कुदरत ने देह दी है, तो उस को इस्तेमाल करने में क्या बुराई है?'' संध्या की ये बेशर्मी भरी बातें सुनी नहीं जा रही थीं. मनोज तो अपने कानों पर हाथ रख मुंह नीचे किए बैठा था और संध्या लगातार बोले जा रही थी. उस ने तो मौजमस्ती की चाह और अपनी दैहिक भूख को शांत करने के लिए सारी हदें पार कर ली थीं. नएनए लड़कों से दैहिक संबंध बनाने में उसे कोई बुराई नजर न आई. इस का कोई दुख या गिला भी न था उसे. शिल्पा कोने में दीवार पर सिर टिका कर आंसू बहाए जा रही थी. अब मनोज जुट गया था 2 कमरों का घर ढूंढ़ने में.

पंचायती राज को मजबूती देती नारी शक्ति

विजय गर्ग

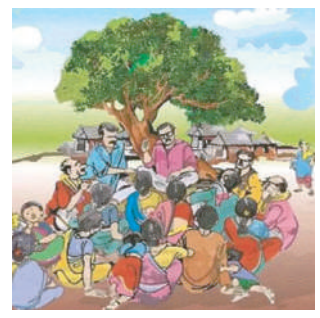

हर साल 24 अप्रैल को राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस मनाया जाता है। भारत की पंचायती राज व्यवस्था ग्रामीण स्वशासन और विकास की आधारशिला है। यह ग्रामीण भारत को सशक्त करने और लोकतंत्र को जमीनी स्तर तक पहुंचाने का प्रभावी माध्यम है। 73वें संवैधानिक संशोधन (1993) के तहत लागू पंचायती राज एक्ट ने पंचायतों को संवैधानिक दर्जा देकर ग्रामीण शासन में क्रांति लाई। इस एक्ट ने महिलाओं के लिए कम से कम 33 प्रतिशत आरक्षण सुनिश्चित किया, जिसे कई राज्यों ने बाद में 50 प्रतिशत तक बढ़ाया, जिससे लैंगिक समानता और समावेशिता की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठा। यह नारी सशक्तीकरण का मील का पत्थर साबित हुआ, जिसने ग्रामीण महिलाओं को नेतृत्व की मुख्यधारा में लाने का मार्ग प्रशस्त किया। हालांकि यह व्यवस्था संसाधनों की कमी, प्रशासनिक कमजोरियों और पितृसत्तात्मक मानसिकता जैसी चुनौतियों से जूझ रही है।

पंचायती राज मंत्रालय की रिपोर्ट के अनुसार, देशभर में 14 लाख से अधिक महिला प्रतिनिधि पंचायतों में सक्रिय हैं। यह आंकड़ा दर्शाता है कि ग्रामीण भारत में नारी शक्ति अब नेतृत्व में उभर रही है। 2024 के राष्ट्रीय पंचायत पुरस्कारों में 42 प्रतिशत विजेता पंचायतों का नेतृत्व महिलाओं ने किया, जो इस बात का प्रमाण है कि सही अवसर और समर्थन मिलने पर वे अपने गांवों में बदलाव ला सकती हैं और राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बना सकती हैं। यह उपलब्धि उन लाखों ग्रामीण महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत है जो अभी भी सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं से जूझ रही हैं। यह प्रगति नारी सशक्तिकरण के महत्व को रेखांकित करती है और दिखाती है कि पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी ग्रामीण विकास के लिए कितनी जरूरी है।

पंचायती राज एक्ट के बावजूद, 'प्रधानपति' प्रथा नारी सशक्तिकरण को कमजोर कर रही है। इसमें निर्वाचित महिला प्रतिनिधियों के पति या पुरुष रिश्तेदार उनकी जगह कार्य करते हैं, जिससे उनकी स्वायत्तता प्रभावित होती है। यह प्रथा पंचायती राज के मूल उद्देश्य- जमीनी स्तर पर सशक्त नेतृत्व को बढ़ावा देना को कमजोर करती है। सुप्रीम कोर्ट की निदेश पर गठित समिति ने सुझाव दिया कि महिला प्रतिनिधियों के काम में हस्तक्षेप करने वाले पुरुष रिश्तेदारों को दंडित करने का प्रविधान हो। इसके लिए कानून सख्त करने और सामाजिक बाधाएं दूर करने की जरूरत है। समिति ने पंचायती राज मंत्रालय से एक ढांचा तैयार करने को कहा, जिसमें ग्राम सभा में महिलाओं की भागीदारी, जागरूकता अभियान और कानूनी कार्रवाई शामिल हो। यह ग्रामीण समाज में जागरूकता बढ़ाएगा। इन उपायों से महिलाओं को अपनी भूमिका प्रभावी ढंग से निभाने का अवसर मिलेगा।

पारग्रही जीवन के संकेतों की तलाश में बड़ा कदम

विजय गर्ग

काफी समय से यह सवाल उठता रहा है कि क्या पृथ्वी के अलावा ब्रह्मांड के किसी दूसरे ग्रह पर जीवन मौजूद है? क्या किसी ग्रह पर एलियंस की मौजूदगी है-एलियंस का घर है? इन सवालों का जवाब जानने और नए-नए ग्रहों की खोज करने में हजारों वैज्ञानिक दिन-रात जुटे हुए हैं। मगर अब एक भारतीय वैज्ञानिक को अपनी खोज में ऐसी सफलता हाथ लगी है, जिसने पूरी दुनिया को चौंका दिया है।

भारतीय वैज्ञानिक डॉ. निक्कू मधुसूदन ने एक ऐसी खोज की है, जिससे दुनिया आश्चर्यचकित है। आईआईटी -बीएचयू और एमआईटी से पढ़े इस वैज्ञानिक ने कैमब्रिज यूनिवर्सिटी में अपनी टीम के साथ जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप से 120 प्रकाश वर्ष दूर एक खास ग्रह के2-18बी (K2-18b) को देखा-परखा।

डॉ. मधुसूदन की खोज में इस ग्रह पर जीवन के पुख्ता संकेत मिले हैं। इनमें डाइमिथाइल सल्फाइड (डीएमएस) नाम का एक खास अणु मिला है जो पृथ्वी पर सिर्फ जीव बनाते हैं- जैसे समुद्री पौधे। वहां मीथेन और कार्बन डाइऑक्साइड जैसी गैसें भी हैं, जो बताती हैं कि ग्रह हाइसीन वर्ल्ड है- यानी ऐसा ग्रह, जहां ढेर सारा पानी और हाइड्रोजन भरा वातावरण हो, जो जीवन के लिए उपयुक्त हो सकता है।

डॉ. मधुसूदन ने ही सबसे पहले हाइसीन ग्रहों की बात दुनिया को बताई थी। उनकी खोज 'द एस्ट्रोफिजिकल जर्नल' में छपी है और इसे अब तक का सबसे बड़ा जीवन का सबूत माना जा रहा है। यह खोज उस सवाल को भी हवा देती है कि अगर ब्रह्मांड में जीवन है, तो हमने अब तक एलियंस क्यों नहीं देखे? डॉ. मधुसूदन का जवाब है कि अगर इस ग्रह पर जीवन मिला, तो शायद हमारी आकाशगंगा में जीवन हर जगह हो!

डॉ. निक्कू मधुसूदन ने पहले के2-18बी ग्रह को खोजा, फिर रिसर्च में पता किया है कि इस ग्रह के वायुमंडल में हाइड्रोजन मौजूद है। इस ग्रह के वायुमंडल में भारी हाइड्रोजन पायी जाती है। रिसर्च

के दौरान ये भी पता चला है कि इस ग्रह पर महासागर है। ऐसे में यहां जीवन की संभावना काफी है। बता दें कि यह ग्रह पृथ्वी से 120 लाइट इयर दूर यानी 1.13 ट्रिलियन किलोमीटर दूर है। तारा के2-18 हमारे सूरज की तुलना में छोटा और नया है। इसकी मोटाई सूरज की 45 फीसदी और आयु लगभग पौने तीन अरब साल है। ध्यान रहे, हमारे सूरज की उम्र का हिसाब पांच अरब साल के आसपास लगाया गया है। के2-18 की सतह का तापमान भी सूरज के आधे से थोड़ा ही ज्यादा है। इसका तकनीकी नाम ब्राउन ड्वार्फ है लेकिन अभी हम 'लाल तारा' ही चलाते हैं।

इस तारे के इर्दगिर्द घूमने वाला भीतर से दूसरा ग्रह के2-18बी पृथ्वी से काफी बड़ा है। इसकी त्रिज्या पृथ्वी की ढाई-तीन गुनी है। इस हिसाब से इसका वजन पृथ्वी का 20-25 गुना होना चाहिए था, बशर्ते इसकी बनावट पृथ्वी जैसी ही होती। लेकिन वजन में यह पृथ्वी का साढ़े आठ से दस गुना ही है। इससे एक बात साफ है कि इसका घनत्व पृथ्वी से काफी कम है। ऐसा वहां लोहा कम होने के चलते भी हो सकता है और ग्रह में द्रव-गैस ज्यादा होने से भी।

एक अच्छी बात इस ग्रह के साथ यह है कि यह अपने तारे के गोल्डिलॉक जोन में पड़ता है। यानी पानी वहां द्रव अवस्था में मौजूद हो सकता है। ग्रह का औसत तापमान 23 डिग्री से 27 डिग्री सेल्सियस के बीच होने का अनुमान लगाया गया है। यह खुद में एक आश्चर्यजनक बात ही है क्योंकि अपने तारे के इर्दगिर्द इसकी कक्षा हमारे सौरमंडल में बुध ग्रह की तुलना में आधी से भी छोटी है। डॉ. मधुसूदन के अनुसार समुद्र की सबसे आम वनस्पति और समुद्री खाद्य शृंखला की बुनियाद समझे जाने वाले फाइटोप्लैंक्टन द्वारा उत्सर्जित कुछ गैसें पृथ्वी के वातावरण में जिस अनुपात में पाई जाती है, K2-18बी पर इनकी उपस्थिति उसकी कम से कम हजार गुना प्रेक्षित की गई है। तो क्या एक सुदूर तारे के इर्दगिर्द घूम रही इस दुनिया में समुद्रों की भरमार है, जहां समुद्री जीवन की नींव के रूप में फाइटोप्लैंक्टन की फसलें लहलहा रही हैं?

बता दें कि भारत में 1980 में जन्मे, डॉ. मधुसूदन ने वाराणसी स्थित आईआईटी, बीएचयू से बीटेक की डिग्री हासिल की। बाद में उन्होंने मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी से मास्टर डिग्री के साथ-साथ पीएचडी भी की। साल 2009 में उनकी पीएचडी थीसिस हमारे सौर मंडल के बाहर के ग्रहों के वायुमंडल का अध्ययन करने के बारे में थी, जिन्हें एक्स्ट्रासोलर ग्रह कहा जाता है।

कुल मिलाकर अब वैज्ञानिकों की नजर इस ग्रह पर आ टिकी है। इस ग्रह पर गहरा शोध किया जा रहा है। माना जा रहा है कि आने वाले समय में जैसे-जैसे इस ग्रह के रहस्य से पर्दा उठेगा, कई हैरान कर देने वाले खुलासे वैज्ञानिक कर सकते हैं।

सोशल मीडिया अपनी आकर्षक और रंगीन दुनिया से बच्चों को आकर्षित कर रहा है।

विजय गर्ग

सोशल मीडिया के प्रति बेलगाम आकर्षण ने आधुनिक जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है। हमारे समाज का हर वर्ग, विशेषकर नई पीढ़ी, इसकी चमक-दमक और आकर्षण का शिकार हो रही है। बचपन, खेलने, सीखने और सुखद यादें बनाने का समय, आज के सोशल मीडिया के युग में खोता जा रहा है। आजकल बच्चे अपने कमरे के एक कोने में कैद होकर अपने मोबाइल फोन या टैबलेट की स्क्रीन से चिपके रहते हैं।

सोशल मीडिया अपनी आकर्षक और रंगीन दुनिया से बच्चों को आकर्षित कर रहा है। फेसबुक, इंस्टाग्राम, स्नैपचैट जैसे प्लेटफॉर्म ने बच्चों को एक ऐसी दुनिया से जुड़ने के लिए उत्सुक बना दिया है, जहां वे वास्तविकता से बहुत दूर एक काल्पनिक जीवन जी रहे हैं। विभिन्न फोटो, वीडियो और अन्य सामग्री के चलन ने बच्चों के मन में आत्म-तुलना की आदत पैदा कर दी है। यह तुलना अक्सर मनोबल को कम करती है और मानसिक तनाव का कारण बनती है। सोशल मीडिया के अत्यधिक प्रभाव के कारण बच्चे खेलों में भाग नहीं लेते हैं।

गुल्ली-डंडा, पायथू और लुका-छिपी जैसे पुराने खेल, जो न केवल शारीरिक स्वास्थ्य बल्कि बच्चों के सामाजिक, बौद्धिक और भावनात्मक विकास में भी योगदान देते थे, अब पूरी तरह लुप्त हो चुके हैं। इससे बच्चों की शारीरिक गतिविधियां कम हो रही हैं, जिससे मोटापा और अन्य बीमारियां बढ़ रही हैं। सोशल मीडिया का बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है। वास्तविक और आभासी दुनिया के बीच का अंतर बच्चों को मनोवैज्ञानिक स्तर पर अस्थिर बना रहा है।

वे अक्सर स्वयं की तुलना अन्य लोगों के जीवन से करते हैं, जिसके कारण उनमें हीनता और अवसाद की भावना उत्पन्न होती है। बच्चों द्वारा सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग ने पारिवारिक और सामाजिक रिश्तों को भी प्रभावित किया है। परिवार के साथ बातचीत करने और एक साथ समय बिताने के बजाय, बच्चे स्क्रीन के सामने अधिक समय बिता रहे हैं। सोशल मीडिया के अत्यधिक उपयोग के कारण बच्चों का पढ़ाई पर ध्यान भी कम हो रहा है। अभ्यास के समय के अलावा, वे स्क्रीन पर भी समय बर्बाद करते हैं, जिससे उनका शैक्षणिक प्रदर्शन भी प्रभावित होता है।

नए रुझानों और चुनौतियों का सामना करने की दौड़ में बच्चे शिक्षा और प्रशिक्षण के महत्व को भूल रहे हैं। इस समस्या के समाधान के लिए माता-पिता, शिक्षकों और समाज के हर पहलू को संयम के साथ अपनी जिम्मेदारी निभानी होगी। माता-पिता को अपने बच्चों का स्क्रीन देखने का समय सीमित करना चाहिए तथा उन्हें बाहरी गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

प्रौद्योगिकी का उपयोग सकारात्मक तरीके से किया जाना चाहिए, ताकि बच्चे अपनी पढ़ाई और शारीरिक विकास पर ध्यान केंद्रित कर सकें। सोशल मीडिया की आभासी दुनिया ने बचपन को जंजीरों में जकड़ दिया है, लेकिन इसकी सुरक्षा करना हमारे हाथ में है। अभिभावकों, शिक्षकों और समुदाय के प्रतिनिधियों को मिलकर काम करना होगा ताकि बच्चों के बचपन को सोशल मीडिया की गुलामी से बचाया जा सके। यह पूरी तरह से हमारे कौशल और संयम पर निर्भर करता है कि हम आने वाली पीढ़ी को कैसे उज्ज्वल भविष्य दे सकते हैं।

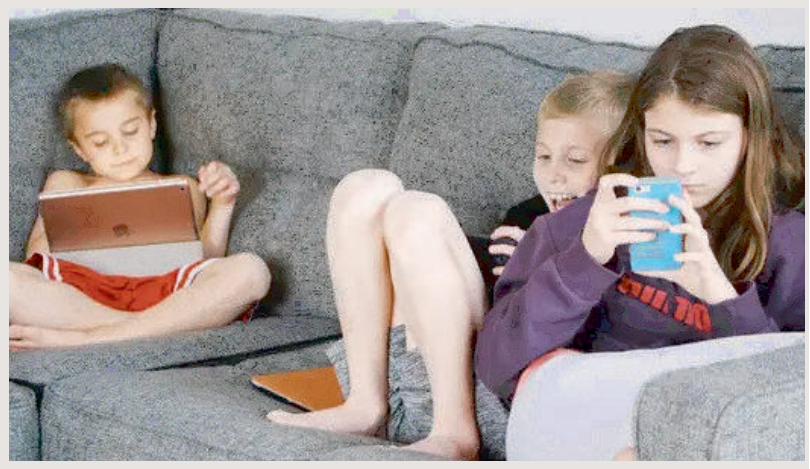

न्यू मून रेस: निजी क्षेत्र लीड लेता है

विजय गर्ग

यह वर्ष चंद्र अन्वेषण के लिए एक ऐतिहासिक वर्ष होगा, जिसमें त्वरित उत्तराधिकार में निर्धारित तीन चंद्रमा लैंडिंग होंगे जो हमारे निकटतम खगोलीय पड़ोसी के साथ मानवता के नए सिरे से करामाती को प्रदर्शित करते हैं। इस सप्ताह इनमें से पहले टचडाउन का प्रतीक है, जिसमें जुगनू एयरोस्पेस का ब्लू घोस्ट सफलतापूर्वक मारे क्रिसियम में चंद्र सतह पर उतर रहा है। इस मील के पत्थर के बाद जून से पहले जापान के M2 / लचीलापन मिशन और सहज मशीनों के IM-2 मिशन की योजना है। ये लैंडिंग निजी क्षेत्र के नवाचार, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और एक महत्वाकांक्षी अंतरिक्ष कार्यक्रम द्वारा संचालित चंद्र अन्वेषण के एक नए युग का संकेत देते हैं।

जुगनू एयरोस्पेस के ब्लू घोस्ट चंद्र लैंडर ने चंद्रमा के निकट की ओर एक विशाल बेसाल्टिक मैदान घोड़ी क्रिसियम पर एक नरम लैंडिंग हासिल की है। एक ईमानदार और स्थिर लैंडिंग जुगनू को दुर्घटनाग्रस्त या गिरने के बिना चंद्रमा पर अंतरिक्ष यान लगाने वाली पहली निजी कंपनी बनाती है - एक ऐसा उपलब्धि जहां केवल पांच देश सफल रहे हैं: रूस, अमेरिका, चीन, भारत और जापान। स्पेसएक्स फाल्कन 9 में सवार 15 जनवरी को लॉन्च किया गया, यह मिशन नासा के वाणिज्यिक चंद्र पेलोड सर्विसेज (सीएलपीएस) कार्यक्रम का हिस्सा है, जो निजी कंपनियों के साथ चंद्रमा पर वैज्ञानिक पेलोड देने के लिए भागीदार है। यह लैंडिंग जुगनू के पहले चंद्र मिशन और निजी क्षेत्र के

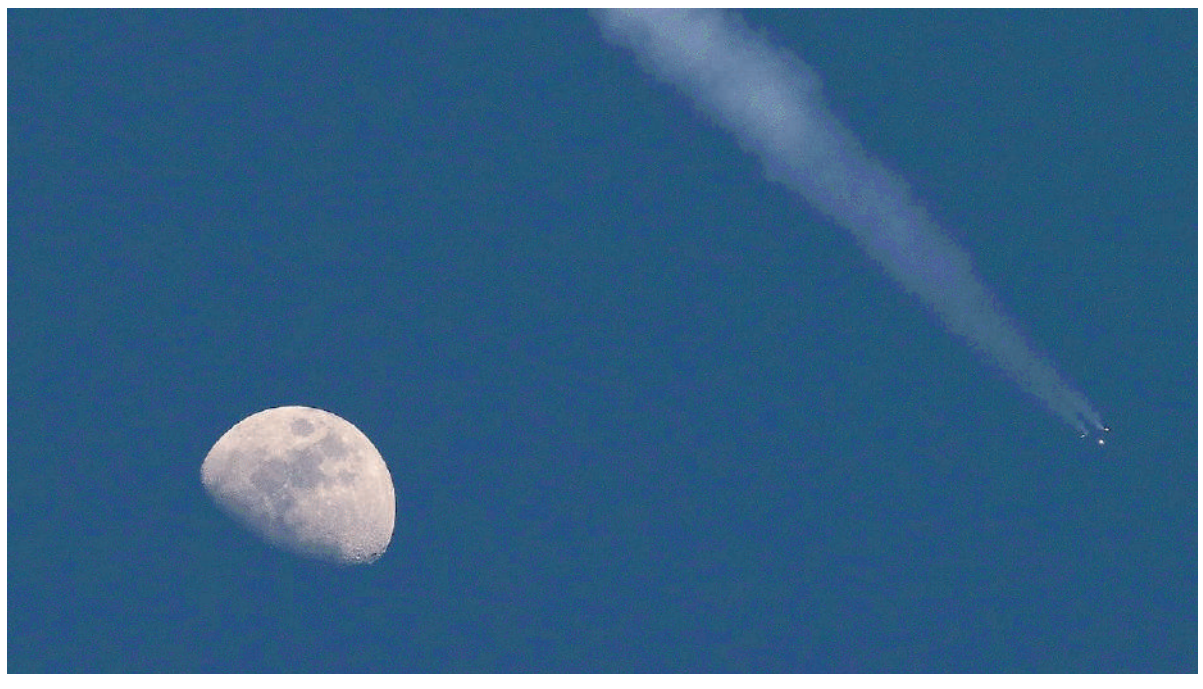

लिए एक महत्वपूर्ण जीत का प्रतीक है, क्योंकि लैंडर ने चंद्र भोर के ठीक बाद छुआ, जिससे इसे संचालित करने के लिए लगभग 14 पृथ्वी दिन सूरज की रोशनी मिली। यह मिशन 2025 की पहली अमेरिकी चंद्र लैंडिंग और वाणिज्यिक पेलोड के साथ 10 नासा प्रायोजित प्रयोगों को ले जाने के लिए उल्लेखनीय है। यह उपग्रह नेविगेशन और विकिरण प्रतिरोधी कंप्यूटरों का परीक्षण करेगा, जो चंद्र निवास के लिए लचीला प्रौद्योगिकी विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। जापान का M2 / लचीलापन मिशन, अंतरिक्ष के नेतृत्व में और मई / जून के लिए निर्धारित है, RESILIENCE लैंडर और TENACIOUS माइक्रो-रोवर को तैनात करेगा। यह 2023 की विफलता के बाद जापान के दूसरे निजी चंद्र लैंडिंग प्रयास को चिह्नित करेगा। माइक्रो-रोवर चंद्र मिट्टी से पानी निकालने और इसे हाइड्रोजन और ऑक्सीजन में विभाजित करने का प्रयास करेगा।

यह चंद्रमा पर जीवन को बनाए रखने वाले संसाधनों के उत्पादन का मार्ग प्रशस्त कर सकता है, जो दीर्घकालिक मानव उपस्थिति के लिए आवश्यक है। तीसरी लैंडिंग, सहज मशीनें 'IM-2 मिशन, पानी की बर्फ की जांच के लिए 1 - मीटर ड्रिल ले जाएगी। इस मिशन का उद्देश्य उप-सतह बर्फ जमा करना है, जो नासा के आर्टेमिस कार्यक्रम के लिए महत्वपूर्ण हैं, जो 2030 तक चंद्रमा पर एक स्थायी आधार रखने की योजना बना रहा है। चंद्रमा कई कारणों से मानवता की अगली सीमा के रूप में फिर से उभर रहा है। रणनीतिक रूप से, यह मंगल ग्रह के लिए एक कदम पत्थर है। यह विकिरण परिरक्षण और ऑक्सीजन जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों की सीटू पीढ़ी जैसी प्रौद्योगिकियों के लिए एक परीक्षण भूमि प्रदान करता है। खगोल विज्ञान के संदर्भ में, चंद्रमा सौर मंडल के इतिहास के सुराग रखता है। आर्थिक रूप से, चंद्रमा के संसाधन, जैसे ईंधन और ऑक्सीजन के लिए बर्फ, दुर्लभ पृथ्वी तत्व, आदि, एक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को ईंधन दे सकते हैं। भू-राजनीतिक रूप से, अमेरिका और चीन जैसे राष्ट्र चंद्र प्रभुत्व को तकनीकी श्रेष्ठता के प्रतीक के रूप में देखते हैं, अमेरिका और चीन 2030 से पहले मानव चंद्र आधार स्थापित करने की योजना बना रहे हैं।

निजी क्षेत्र की भागीदारी: एक नया प्रतिमान

जुगनू एयरोस्पेस, अंतरिक्ष और सहज मशीनों जैसे स्टार्टअप की सफलता सरकार के नेतृत्व वाले अन्वेषण से एक वाणिज्यिक मॉडल में बदलाव का प्रतीक है।

नासा का सीएलपीएस कार्यक्रम पारंपरिक लागतों के एक अंश के लिए फर्मों को चंद्र वितरण आउटसोर्सिंग करके इसकी छूट देता है। निजी क्षेत्र की चपलता मिशन की समयसीमा को तेज करती है, नवाचार को बढ़ावा देती है, और लागत को कम करती है। साथ ही, प्रतियोगिता ने ईस्पेस के पानी के बंटवारे के प्रयोग जैसे तकनीकी छलांग लगाई।

भारत भी अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के लिए स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के विकास के केंद्र में है। ध्रुव स्पेस, पिक्ससेल, अग्निकुल कॉस्मोस, बेलाट्रिक्स एयरोस्पेस, और स्काईरूट एयरोस्पेस जैसे स्टार्टअप एंड-टू-एंड सैटेलाइट सॉल्यूशंस, उच्च-रिज़ॉल्यूशन हाइपरस्पेक्ट्रल इमेजिंग उपग्रहों का एक नक्षत्र, उपग्रहों के लिए विद्युत थ्रस्टर्स सहित कई तकनीकों का विकास कर रहे हैं। एक छोटा उपग्रह प्रक्षेपण वाहन, आदि।

ये स्टार्टअप भारत के निजी क्षेत्र को चला रहे हैं, सरकारी समर्थन और वैश्विक हित का लाभ उठा रहे हैं। चंद्र लैंडिंग वैज्ञानिक अंतर्दृष्टि का खजाना प्रदान करेगी और भविष्य के चंद्र ठिकानों की नींव रखेगी।

पहली बार, निजी कंपनियां और स्टार्टअप इस आरोप का नेतृत्व कर रहे हैं, जिसमें पानी की निकासी और बर्फ ड्रिलिंग जैसे अग्रणी प्रयोग किए जा रहे हैं। ये मिशन हमें एक ऐसे भविष्य के करीब लाएंगे जहां मानवता न केवल चंद्रमा का दौरा करती है बल्कि वहां और उससे आगे भी पनपती है।

आरएसएस सरसंघचालक मोहन भागवत के विचारों से आलोकित भारत

[आरएसएस सरसंघचालक मोहन भागवत का आह्वान : कर्तव्यदीप से राष्ट्ररक्षा का संकल्प]

जब रात्रि का घनघोर अंधकार चारों ओर छा जाए, तब एक नन्हा सा दीपक भी विश्वास की तेजस्वी किरण बनकर अंधेरे को चीर देता है। ठीक वैसे ही, जब समाज में अशांति, विभाजन और अधर्म का काला साया फैलाने की साजिश रची जाती है, तब राष्ट्रप्रेमी नागरिकों का पवित्र कर्तव्य बनता है कि वे अपने हृदय में कर्तव्य का अखंड दीप जलाकर राष्ट्र की अस्मिता को अक्षुण्ण रखें। यह महज शब्द नहीं, बल्कि एक प्रचंड प्रेरणा है, जो हमें सजग, सशक्त और अटल संकल्प से ओतप्रोत करती है। हाल ही में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने अपने ओजस्वी संबोधन में यही सशक्त सन्देश दिया — ₹कुछ लोग कभी नहीं बदलेंगे, चाहे कुछ भी कर लो।₹ ये शब्द न केवल एक चेतावनी हैं, बल्कि कर्तव्य के मार्ग पर दृढ़ता से अग्रसर रहने का एक प्रबल आह्वान भी हैं।

भारत की आत्मा अहिंसा, करुणा और सहअस्तित्व के अमर तत्वों में सांस लेती है। हमारी सनातन संस्कृति ने विश्व को शांति का वह गहन पाठ पढ़ाया, जो युगों तक गूंजता रहेगा। जैसा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत ने ओजस्वी स्वर में कहा, हमारी अहिंसा केवल कमजोरी नहीं, बल्कि दूसरों को सन्मार्ग की ओर ले जाने की प्रबल शक्ति है। किंतु जब कुछ कुटिल तत्व बार-बार समाज को विखंडित करने, अशांति का विष बोने और हमारी पवित्र संस्कृति पर प्रहार करने का दुस्साहस करते हैं, तब सहिष्णुता की सीमाएं परखना अनिवार्य हो जाता है। इतिहास इसका सशक्त साक्षी है — भगवान श्रीराम ने रावण का संहार इसलिए किया, क्योंकि रावण ने धर्म और मर्यादा की पवित्र रेखा को लांघ दिया था। वह युद्ध मात्र शक्ति का प्रदर्शन नहीं, बल्कि सत्य, न्याय और धर्म की स्थापना का अडिग प्रतीक था। आज भी हमें इस अमर सीख को हृदय में धारण करना होगा — प्रेम और क्षमा हमारे संस्कारों का आभूषण हैं, किंतु अन्याय के विरुद्ध दृढ़ता और संकल्प हमारा परम धर्म है।

आज का भारत न केवल आर्थिक और वैश्विक पटल पर एक उदीयमान शक्ति के रूप में चमक रहा है, बल्कि अपनी सनातन सांस्कृतिक विरासत को भी नवजीवन दे रहा है। किंतु इस गौरवशाली प्रगति के बीच, कुछ कुटिल तत्व समाज में वैमनस्य, अराजकता और विघटन के विषैले बीज बोने का दुस्साहस कर रहे हैं। ऐसे में केवल शब्दों की निंदा या निष्क्रिय उदासीनता पर्याप्त नहीं है। हमें सजग और सशक्त नागरिक बनकर अपने संविधान, संस्कृति और अखंड एकता की रक्षा के लिए कटिबद्ध होना होगा। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत का यह कथन कि ₹राजा का कर्तव्य प्रजा की रक्षा करना है,₹ आज के युग में गहन प्रासंगिकता और प्रेरणा लिए हुए है। आज का राजा कोई एक शासक/ सरकार नहीं, बल्कि हम सभी हैं — प्रत्येक नागरिक, जो अपने कर्म और संकल्प से राष्ट्र निर्माण का सच्चा भागीदार है।

राष्ट्र निर्माण केवल नीतियों या योजनाओं का कागजी स्वप्न नहीं, बल्कि नागरिकों के अटल चरित्र, प्रबुद्ध जागरूकता और कर्तव्यनिष्ठा का जीवंत परिणाम है। यदि हम अपने अधिकारों की वकालत करते हैं, तो कर्तव्यों का पालन उससे कहीं अधिक पवित्र और अनिवार्य है। एक सशक्त राष्ट्र वही है, जहां प्रत्येक नागरिक अपने दायित्वों को हृदय से आत्मसात कर, निष्ठा के साथ उन्हें जीवंत करता है। हमें अपने विचारों, शब्दों और कर्मों से समाज में सकारात्मकता का प्रबल संचार करना होगा। जहां आवश्यक हो, वहां दृढ़ संकल्प के साथ अन्याय का प्रतिकार करना हमारा धर्म है। जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने अपने ओजस्वी उद्घोष में कहा था, ₹उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।₹ यह लक्ष्य है एक ऐसे भारत का निर्माण, जो विश्वगुरु के रूप में न केवल स्वयं गौरवान्वित हो, बल्कि समस्त विश्व को शांति और समृद्धि की दिशा प्रदान करे।

आज समस्त विश्व भारत की ओर आशा, आदर और विश्वास की दृष्टि से देख रहा है। हमारी प्राचीन सभ्यता, सनातन संस्कृति और गहन विचारधारा वैश्विक मंच पर नवीन ऊर्जा और प्रेरणा का संचार कर रही हैं। ऐसे में, हमें अपनी एकता और अखंडता को और अधिक अटल व सशक्त करना होगा। एक नन्हा दीपक अकेला भी घने अंधेरे को चीर सकता है, तो सोचिए, जब भारत के करोड़ों नागरिक अपने हृदय में कर्तव्य का प्रज्वलित दीप जलाकर एकजुट हो जाएं, तो कितना विराट और क्रांतिकारी परिवर्तन संभव है! यह अटूट एकजुटता ही वह महाशक्ति है, जो अज्ञानता, अन्याय और अशांति के हर काले बादल को परास्त कर, विश्व में सत्य और समृद्धि का सूर्योदय कर सकती है।

परिवर्तन की महान यात्रा हमेशा स्वयं के हृदय से आरंभ होती है। हमें अपने अंतःकरण में राष्ट्रप्रेम, कर्तव्यबोध और आत्मसम्मान की प्रचंड ज्योति प्रज्वलित करनी होगी। यह ज्योति न केवल हमें सन्मार्ग पर अडिग रखेगी, बल्कि समाज और राष्ट्र को भी आलोकित कर, एक नवीन युग का सूत्रपात करेगी। हमें यह गहन सत्य आत्मसात करना होगा कि राष्ट्र की रक्षा केवल सीमाओं पर तलवारों से नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र में—चाहे वह शिक्षा का उज्ज्वल प्रकाश हो, संस्कृति का गौरवमयी धरोहर हो, या सामाजिक एकता का अटूट बंधन—निरंतर सजगता और समर्पण से होती है। प्रत्येक नागरिक को अपने स्तर पर इस पवित्र संकल्प को जीवंत करना होगा, ताकि हम एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करें, जो विश्व में सत्य और शांति का ध्वजवाहक बने।

आइए, हम सब मिलकर अपने हृदय में कर्तव्य का अखंड दीप प्रज्वलित करें—एक ऐसा दीप, जो न केवल हमारे अंतःकरण को आलोकित करे, बल्कि समस्त राष्ट्र को सत्य, न्याय और अटूट एकता की प्रभात किरणों से उज्ज्वल कर दे। यह दीपक हमारी अमर संस्कृति का प्रतीक है, हमारी अडिग प्रतिबद्धता का संकल्प है, और भारत माता की सेवा में हमारे अटल विश्वास का प्रज्वलित आलोक है। जैसा कि कवि ने ओजस्वी स्वर में कहा, ₹नन्हा दीप भी जलता है, तो अंधेरा डरकर भाग जाता है।₹ तो सोचिए, जब भारत के करोड़ों नागरिक एकजुट होकर कर्तव्य की इस ज्योति को प्रचंड अग्नि में परिवर्तित कर दें, तो वह विराट शक्ति कितने युगों को आलोकित कर देगी! आओ, संकल्प लें—हम सजग रहेंगे, हर चुनौती का डटकर मुकाबला करेंगे, और अपने विचार, कर्म व संकल्प से विश्वगुरु भारत का स्वप्न साकार करेंगे। यह कर्तव्य का यज्ञ है, जिसमें प्रत्येक भारतीय की आहुति से सत्य और शांति का सूर्योदय होगा। यह दीपक हमारी आत्मा का प्रभामंडल है—इसे प्रज्वलित कर विश्व को दिखा दो कि भारत की जयजयकार सदा गूंजेगी। जय भारत।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी

धरती के क्रांतिदूत भगवान परशुराम: ब्राह्मणत्व और वीरता का प्रलयकारी संगम

जब अन्याय ने मर्यादाओं को लांघकर अपनी क्रूरता का परचम लहराया, जब अधर्म ने धर्म का उपहास उड़ाया, और जब वीरता व संयम की पवित्र परिभाषाएँ धूमिल होने लगीं, तब धरती के गर्भ से प्रकट हुए परशुराम—धर्म की प्रचंड ज्वाला को हृदय में धारण कर, अधर्म के सर्वनाशक योद्धा बनकर। वे न केवल अजेय रणबांकुरे थे, न ही मात्र तपस्वी सन्यासी; वे शक्ति और मर्यादा, तेजस्विता और करुणा, क्रोध और धर्म के अनुपम समन्वय थे। परशुराम जयंती केवल उनके अवतरण का उत्सव नहीं, बल्कि न्याय की अटल हुंकार, साहस का प्रबल उद्घोष और धर्म के अडिग संकल्प का महोत्सव है। उनका जीवन युगों-युगों तक मानवता को पथ प्रदर्शित करता रहेगा, क्योंकि परशुराम कोई काल्पनिक मिथक नहीं, अपितु सत्य, साहस और धर्म का जीवंत प्रतीक हैं।

सतयुग और त्रेतायुग के संधिकाल में, जब पृथ्वी क्षत्रिय अत्याचारों की ज्वाला में दग्ध हो रही थी, तब महर्षि जमदग्नि और माता रेणुका के पुत्र के रूप में परशुराम का अवतरण हुआ। ब्राह्मण कुल में जन्मे, किंतु योद्धा के प्रचंड हृदय और शस्त्रों की प्रखरता से सुसज्जित, परशुराम ने धर्म की रक्षा हेतु क्रांतिकारी मार्ग प्रशस्त किया। उन्होंने ब्राह्मणत्व की शांत गरिमा को शस्त्रों की प्रलयकारी साधना से जोड़कर अपने परशु को अधर्म के विनाश का अजेय अस्त्र बनाया। उनका फरसा मात्र धातु का शस्त्र नहीं, बल्कि धर्म की पुनर्स्थापना और अन्याय के सर्वनाश का प्रतीक था। आज भी, जब कोई साहसी अन्याय के विरुद्ध खड़ा होता है, वह परशुराम की तीक्ष्ण धार को साकार करता है, जो कालजयी प्रेरणा बनकर मानवता को दिशा देती है।

परशुराम की गाथा अद्वितीय साहस, तपस्या और अनुशासन का प्रतीक है। उन्होंने पितृ-आज्ञा का पालन करते हुए माता रेणुका का वध किया, जो उनकी कर्तव्यनिष्ठा और आत्मसंयम की कठोरता को दर्शाता है। किंतु जब पितृवर ने वर माँगने का अवसर दिया, तब परशुराम ने माता के पुनर्जनन की याचना की, जो उनके हृदय में मातृप्रेम और करुणा की गहराई को प्रकट करता है। यह प्रसंग सिखाता है कि परशुराम का क्रोध अनियंत्रित ज्वाला नहीं, बल्कि धर्म के आदर्शों से अनुप्राणित पवित्र अग्नि था। उनकी कठोरता अनुशासन की द्योतक थी, न कि क्रूरता की। प्रत्येक निर्णय—चाहे युद्ध का रणघोष हो या क्षमा का संदेश—धर्म के संतुलन को बनाए रखने हेतु लिया गया। परशुराम का जीवन कर्तव्य, करुणा और धर्म के संगम का मार्ग दिखाता है।

इतिहास में अंकित है कि परशुराम ने पृथ्वी से इक्कीस बार क्षत्रिय कुल का संहार किया। यह सुनकर मन में उग्र योद्धा की छवि उभर सकती है, किंतु सत्य यह है कि उनका युद्ध किसी वंश के विरुद्ध नहीं, बल्कि अत्याचार, अधर्म और सत्ता के दुरुपयोग के खिलाफ था। कई क्षत्रिय राजा और वीर उनके मित्र व शिष्य रहे, जो स्पष्ट करता है कि उनका ध्येय सत्ता का सर्वनाश नहीं, बल्कि उसके अहंकार और दुराचार का विनाश था। परशुराम का फरसा धर्म की रक्षा का प्रहरी था, न कि प्रतिशोध का आयुध। उनकी गाथाएँ सिखाती हैं कि साहस और शक्ति का प्रयोग केवल धर्म की स्थापना और सत्य की रक्षा हेतु होना चाहिए।

परशुराम केवल युद्धकला के महारथी ही नहीं, बल्कि ज्ञान और शिक्षा के संरक्षक भी थे। उन्होंने भीष्म, द्रोणाचार्य और कर्ण जैसे महायोद्धाओं को शस्त्र विद्या का प्रशिक्षण दिया, जो महाभारत में धर्म और सत्य के प्रतीक बने। उनका गुरु रूप सिखाता है कि सच्ची वीरता केवल शस्त्र की धार में नहीं, बल्कि शिष्यों के चरित्र और कौशल को संवारने में निहित है। वे अपने शिष्यों में न केवल युद्धकला का सामर्थ्य बोते थे, बल्कि धर्म, नैतिकता और सत्यनिष्ठा के बीज भी रोपते थे। उनकी शिक्षाएँ युद्ध की रणनीति तक सीमित नहीं थीं; वे जीवन को सम्मान के साथ जीने की कला सिखाती थीं।

परशुराम का चिरंजीवी स्वरूप भारतीय संस्कृति में अमर संदेश के रूप में गूंजता है। यह विश्वास कि वे आज भी सशरीर विद्यमान हैं, हमें आश्वस्त करता है कि जब-जब अधर्म अपनी सीमा लांघेगा, तब कोई परशुराम धर्म की पुनर्स्थापना करेगा। यह विचार आज के युग में भी प्रासंगिक है। जब नैतिकता का पतन हो, जब सत्य और न्याय को कुचला जाए, तब प्रत्येक हृदय में परशुराम की चेतना प्रज्वलित होनी चाहिए। उनका जीवन सिखाता है कि अन्याय के समक्ष मौन रहना घोर पाप है। धर्म का मार्ग दुरूह हो सकता है, किंतु उसका परिणाम सत्य और न्याय की विजय में प्रकट होता है।

परशुराम जयंती भारत के विविध भूभागों में उत्साह और आध्यात्मिक उमंग के साथ मनाई जाती है। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और महाराष्ट्र में मंदिरों में पूजा, यज्ञ, सामुदायिक भोज और शोभायात्राएं इस पर्व को जीवंत करती हैं। परशुराम के शौर्य और धर्मनिष्ठा की कथाएँ गीतों व कथनों के माध्यम से जीवंत हो उठती हैं, जो श्रोताओं में जोश और प्रेरणा का संचार करती हैं। यह पावन दिन केवल उत्सव नहीं, बल्कि आत्मावलोकन का अवसर भी है। यह हमें प्रेरित करता है कि हम स्वयं से प्रश्न करें—क्या हममें अन्याय के विरुद्ध निर्भीकता से खड़े होने का साहस है? क्या हममें धर्म और सत्य के लिए समर्पित होने की शक्ति है? यह पर्व हमें परशुराम के आदर्शों से जोड़ता है और साहसी जीवन की ओर अग्रसर होने का मार्ग प्रशस्त करता है।

परशुराम का जीवन सिखाता है कि बल, विद्या और धर्म का समागम ही एक परिपूर्ण व्यक्तित्व का सृजन करता है। केवल बल अहंकार को जन्म देता है, एकमात्र विद्या दम्भ को पोषित करती है, और केवल धर्म संकीर्णता को उकसाता है। किंतु जब ये तीनों शक्तियाँ एकरूप होती हैं, तब परशुराम-सा चरित्र प्रदीप्त होता है, जो युगों तक मानवता का पथ आलोकित करता है। उनका फरसा हर उस हृदय में धधकता है, जो अन्याय के सम्मुख अडिग रहता है। उनकी तपस्या हर उस मन में प्रज्ज्वलित है, जो धर्म के प्रति समर्पित है।

परशुराम जयंती हमें प्रचंड संकल्प की प्रेरणा देती है—हम अपने हृदय में साहस की ज्वाला प्रज्वलित करें, ज्ञान का सूर्य उदित करें, और धर्म के मार्ग पर दृढ़ता से अग्रसर हों। हमारा प्रण हो कि अन्याय के समक्ष हम न झुकेंगे, न डगमगाएंगे, बल्कि निर्भीक होकर उसका मुकाबला करेंगे। हम अपने ज्ञान को समाज के कल्याण का साधन बनाएंगे और धर्म के आदर्शों पर अविचल रहेंगे। यदि प्रत्येक हृदय में परशुराम का तेजस्वी अंश जागृत हो, तो कोई अत्याचार इस धरा पर ठहर नहीं पाएगा। परशुराम कोई प्राचीन कथा नहीं, बल्कि हर उस आत्मा की चेतना हैं, जो सत्य और धर्म के लिए जीता है। उनका फरसा आज भी काल को चीरकर गर्जना करता है—उठो, जागो, और धर्म का प्रहरी बनो! परशुराम जयंती स्मरण कराती है कि साहस और धर्म का पथ ही सच्ची विजय का मार्ग है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

ढाणी बीरन की चौपाल से उठी नई सुबह: हरियाणा के एक गांव ने बेटियों-बहुओं को घूंघट से दी आज़ादी

> ₹परंपरा तब तक सुंदर है, जब तक वह पंख न काटे। घूंघट हटा, तो सपनों ने उड़ान भरी।₹
> ₹जहां घूंघट गिरा, वहां सिर ऊंचे हुए। ढाणी बीरन से उठी हौसलों की एक नई फसल।₹

हरियाणा के ढाणी बीरन गांव ने एक ऐतिहासिक पहल करते हुए बहू-बेटियों को घूंघट प्रथा से मुक्ति दिलाने का संकल्प लिया है। गांव के बुजुर्ग धर्मपाल की अगुवाई में पंचायत ने यह निर्णय लिया कि अब किसी महिला पर घूंघट डालने का दबाव नहीं डाला जाएगा, और जो इसका विरोध करेगा, उसके खिलाफ पंचायत में कार्रवाई होगी। सरपंच कविता देवी ने खुद घूंघट हटाकर इस बदलाव की अगुवाई की। इस पहल ने गांव में महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी के लिए प्रेरित किया है। विरोध की कुछ आवाज़ों के बावजूद, ढाणी बीरन ने सोच और परंपरा के बीच संतुलन बनाते हुए एक मिसाल कायम की है। यह कदम न केवल गांव, बल्कि पूरे प्रदेश में महिला सशक्तिकरण की दिशा में उम्मीद की किरण बना है।

प्रियंका सौरभ

रात के आठ बजे का वक्त था। ढाणी बीरन गांव की चौपाल पर बड़ी संख्या में पुरुष, महिलाएं और बच्चे इकट्ठा थे। धीमी हवाओं के बीच चारों तरफ टिमटिमाते दीयों और लालटेन की रोशनी थी। माहौल में एक अजीब-सी उत्तेजना थी — जैसे कोई बड़ा बदलाव दस्तक दे रहा हो। तभी बुज़ुर्ग धर्मपाल, जिनकी बात को गांव में विशेष आदर मिलता है, उठे और भारी आवाज़ में बोले:

"बेटी वह है जो हमारे घर को बढ़ाती है। हमारी बेटी भी किसी और के आंगन में रोशनी फैलाएगी। आज से हम प्रण लेते हैं कि किसी बहू-बेटी को यह नहीं कहेंगे कि घूंघट क्यों उतार रखा है। अगर कोई इसका विरोध करेगा तो पंचायत में उसके खिलाफ उचित निर्णय लिया जाएगा।"

चौपाल में बैठे तमाम लोगों ने एक साथ दोनों हाथ उठाकर इस संकल्प का समर्थन किया। यह महज समर्थन नहीं था, यह सदियों पुरानी एक मानसिकता की बेड़ियों को तोड़ने का सामूहिक निर्णय था।

कविता देवी ने दिखाई राह

गांव की सरपंच कविता देवी, जो अब तक परंपरा के चलते घूंघट में थीं, धीमे-धीमे आगे बढ़ीं। फिर सबकी नजरों के सामने उन्होंने घूंघट को सिर से पीछे सरका दिया। वह सिर ऊंचा किए, गर्व से मुस्कुराती रहीं — मानो सदियों का एक बोझ उनकी मुस्कान के नीचे झरता जा रहा हो। कविता देवी के इस साहसिक कदम ने बाकी महिलाओं के भीतर भी एक नयी ऊर्जा फूंकी। धीरे-धीरे कई और महिलाएं, जो सिर से पल्लू हटाने से झिझकती थीं, चौपाल में खड़ी होकर बिना घूंघट के सामने आईं। ढाणी बीरन में एक नयी कहानी लिखी जा रही थी — घूंघट से आज़ादी की कहानी।

परंपरा या बंधन?

हरियाणा जैसे राज्य में, जहां घूंघट को लंबे समय तक सम्मान और संस्कार की निशानी माना गया, वहीं दूसरी तरफ इस परंपरा ने महिलाओं की स्वतंत्रता और आत्मविश्वास पर अक्सर अनदेखे पहरे भी लगाए। बहू-बेटियों को घरों में सीमित करना, सार्वजनिक जीवन में उनकी भागीदारी कम करना — ये सब पर्दा प्रथा के अदृश्य दुष्परिणाम रहे हैं। लेकिन ढाणी बीरन ने आज यह तय कर लिया था कि सम्मान का असली अर्थ नियंत्रण में नहीं, बल्कि बराबरी में है।

बदलाव एक दिन में नहीं आता

गांव के बुज़ुर्ग धर्मपाल मानते हैं कि बदलाव अचानक नहीं आता। "समझदारी से काम लेना होता है। अगर हम अपनी बहू-बेटियों को शिक्षा, रोजगार और निर्णय लेने का अवसर देना चाहते हैं, तो सबसे पहले हमें अपने सोच के पर्दे हटाने होंगे," वे कहते हैं। इसी सोच ने पूरे गांव को एक नई दिशा दी। आज ढाणी बीरन के लोग न सिर्फ घूंघट उतारने की बात कर रहे हैं, बल्कि लड़कियों की पढ़ाई, महिलाओं की पंचायत में भागीदारी और आर्थिक आज़ादी को भी प्राथमिकता दे रहे हैं।

छोटी-छोटी पहल, बड़ा असर

सरपंच कविता देवी बताती हैं, "पहले महिलाएं पंचायत की बैठक में भी परदे के पीछे से बोलती थीं। अब हम चाहती हैं कि बहनें-बहुएं खुलकर अपनी बात रखें। बेटी सिर्फ घर में चूल्हा जलाने के लिए नहीं है, वह गांव का भविष्य संवारने के लिए भी है।" गांव में लड़कियों की स्कूल उपस्थिति बढ़ाने के लिए भी प्रयास हो रहे हैं। साक्षरता अभियान, स्वास्थ्य शिविर, और महिला सशक्तिकरण पर जागरूकता कार्यक्रमों की योजना भी बनाई जा रही है।

विरोध की आहट भी

बेशक हर बदलाव के साथ कुछ विरोध भी होता है। गांव के कुछ पुराने विचारों के लोग आज भी पर्दा प्रथा को छोड़ने में हिचकिचा रहे हैं। लेकिन जब धर्मपाल जैसे बुज़ुर्ग, जिनकी आवाज गांव में सम्मान के साथ सुनी जाती है, खुले मंच से इस पहल का समर्थन करते हैं, तो विरोध स्वतः कमजोर पड़ने लगता है। धर्मपाल मुस्कुराते हुए कहते हैं, "अगर घर की लक्ष्मी खुद को बांधकर रखेगी तो घर कैसे समृद्ध होगा? उड़ने दीजिए बेटियों को, वे नए आकाश रचेंगी।"

एक गांव से शुरू, पूरे प्रदेश तक?

ढाणी बीरन की चौपाल पर जो दीप जलाया गया है, उसकी रोशनी सिर्फ इस गांव तक सीमित नहीं रहेगी। यह बदलाव दूसरे गांवों, कस्बों और ज़िलों के लिए भी एक मिसाल बनेगा।

यह कहानी बताती है कि जब गांव का एक बुज़ुर्ग अपनी सोच बदलता है, जब सरपंच घूंघट उतारती है, जब महिलाएं डर छोड़कर मुस्कुराती हैं — तब असली क्रांति होती है। और शायद आने वाले वर्षों में कोई बच्ची ढाणी बीरन के चौपाल पर खड़े होकर यह कहेगी: "मेरे गांव ने मुझे घूंघट नहीं, हौसला दिया था।"

"ढाणी बीरन का संकल्प"

> **"हम प्रण लेते हैं — किसी बहू-बेटी से घूंघट ना करने की आज़ादी छीनेंगे नहीं। महिलाओं को पंचायत, शिक्षा और रोजगार में बराबरी का अवसर देंगे। जो विरोध करेगा, उसके खिलाफ पंचायत में उचित निर्णय लिया जाएगा। ढाणी बीरन ने घूंघट नहीं, सोच का पर्दा हटाया है।"**

शनि देव के 9 वाहन हैं

कौआ, भैंसा, मोर, शेर, सियार, हाथी, घोड़ा, हंस, और गधा. शनि देव को सबसे अधिक कौए पर सवार दिखाया जाता है, लेकिन उनके 9 वाहन अलग-अलग शुभ-अशुभ फल देते हैं.

शनि देव के 9 वाहन और उनके धार्मिक महत्वः

1. कौआः शनि देव का सबसे प्रिय वाहन माना जाता है, जो न्याय और कर्म के प्रतीक हैं.
2. भैंसाः शनि देव के इस वाहन पर सवार होने का अर्थ है कि व्यक्ति को मिला-जुला परिणाम मिलेगा.
3. मोरः शनि देव का यह वाहन व्यक्ति को सुख और समृद्धि प्रदान करता है.
4. शेरः शनि देव के इस वाहन पर सवार होने का अर्थ है कि व्यक्ति को सफलता मिलेगी और वह अपने दुश्मनों पर विजय प्राप्त करेगा.
5. सियारः शनि देव के इस वाहन पर सवार होने का अर्थ है कि व्यक्ति को कुछ संघर्ष करना पड़ सकता है.
6. हाथीः शनि देव के इस वाहन पर सवार होने का अर्थ है कि व्यक्ति कभी शांत और कभी उग्र स्वभाव का होगा.
7. घोड़ाः शनि देव के इस वाहन पर सवार होने का अर्थ है कि व्यक्ति को उन्नति मिलेगी.
8. हंसः शनि देव के इस वाहन पर सवार होने का अर्थ है कि व्यक्ति को ज्ञान और बुद्धि प्राप्त होगी.
9. गधाः शनि देव के इस वाहन पर सवार होने का अर्थ है कि व्यक्ति को कड़ी मेहनत करनी होगी, लेकिन उसे सफलता मिलेगी.

UPSC टॉपर या जाति टॉपर?: प्रतिभा गुम, जाति और पृष्ठभूमि का बाज़ार गर्म।

देश की सबसे प्रतिष्ठित परीक्षा अब जातीय गौरव का तमाशा बन चुकी है। जैसे ही रिज़ल्ट आता है, प्रतिभा और मेहनत को धकिया कर जाति, धर्म और 'किसान की झोपड़ी' की स्क्रिप्ट सोशल मीडिया पर दौड़ने लगती है। एसी कमरों में पढ़ने वाले अब खुद को किसान का बेटा घोषित करते हैं, ताकि संघर्ष बिके। टॉपर बनने के बाद सेवा की बजाय सेल्फी और सेमिनार का मोह शुरू हो जाता है।
हर दल, हर विचारधारा, हर वर्ग अपने-अपने टॉपर को पकड़कर झंडा उठाता है — "देखो, ये हमारा है!"
किसी को सवर्ण गौरव चाहिए, किसी को दलित चमत्कार। और इस पूरे मेले में असली हीरो — यानी मेहनत और ईमानदारी — कहीं कोने में खड़ी, अकेली, उपेक्षित रह जाती है।
UPSC अब परीक्षा नहीं, जातीय राजनीति, इमोशनल मार्केटिंग और ब्रांडिंग का अखाड़ा बनता जा रहा है। और सवाल वही — ये अफसर समाज सेवा के लिए बन रहे हैं या सोशल मीडिया के लिए?

डॉ सत्यवान सौरभ

हर साल जब संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परिणाम आते हैं, तो देश का एक बड़ा वर्ग उत्साहित होता है — कहीं उम्मीदें टूटती हैं, कहीं सपने पूरे होते हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से एक नया और खतरनाक ट्रेंड भी देखने को मिल रहा है — सफल अभ्यर्थियों की प्रतिभा और मेहनत पर चर्चा करने के बजाय, उनकी जाति, धर्म और आर्थिक पृष्ठभूमि को माइक्रोस्कोप से जांचा जा रहा है। और फिर उसी के आधार पर उनके संघर्ष की कहानी गढ़ी जाती है, सोशल मीडिया पर महिमामंडन या विवाद खड़ा किया जाता है।

एक तरफ़ सफल अभ्यर्थी अपनी मेहनत को सेलिब्रेट करना चाहते हैं, दूसरी तरफ़ समाज उन्हें एक 'ट्रॉफी' बना देता है — या तो जातीय गौरव के नाम पर, या भावनात्मक बाज़ार के नाम पर।

जब प्रतिभा गौण हो जाए और पहचान प्राथमिक

क्या हम इतने खोखले हो गए हैं कि अब सफलता भी जाति की चश्मे से देखनी पड़ती है? एक छात्र जिसने वर्षों तक दिन-रात एक कर दिए, जो असफलताओं के बावजूद डटा रहा, जिसने निजी सुखों को छोड़ तपस्या की — उसकी कहानी अब उसकी प्रतिभा नहीं, उसकी जातीय पहचान से मापी जाएगी?

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और न्यूज़ चैनल्स अब सबसे पहले पूछते हैं: ₹यह topper किस जाति से है?₹

उसके बाद आता है सवालः ₹पिता क्या करते हैं?₹

फिर, अगर कहीं से भी किसान, मजदूर या निम्नवर्गीय पृष्ठभूमि जुड़ जाए, तो सफलता की कहानी में 'संघर्ष का मसाला' डालकर उसे और अधिक बिकाऊ बना दिया जाता है।

'किसान का बेटा' ब्रांडिंग का नया ट्रेंड

यह एक विचित्र विडंबना है कि अब बड़े-बड़े शहरों के पॉश इलाकों में एसी कमरों में पढ़ने वाले भी खुद को ₹किसान का बेटा₹ बताने लगे हैं। परिवार में कभी पुरखों ने खेती की हो, या मामूली ज़मीन हो, तो भी उसे किसान परिवार का बेटा घोषित कर दिया जाता है।

असलियत यह है कि जिन किसानों की हालत आज भी बैंकों के कर्ज में दबी है, जिनके बच्चे आज भी टूटी हुई पाठशालाओं में पढ़ रहे हैं, वे इस 'किसान परिवार' की ब्रांडिंग का हिस्सा नहीं बन पाते।

यह नया ₹संघर्ष बेचो₹ मॉडल दरअसल एक बड़े मध्यमवर्गीय या उच्चवर्गीय तबके का सोशल इमोशनल इंजीनियरिंग है।

सफलता का नया मकसद: सेवा या सेल्फ ब्रांडिंग?

जहां एक समय सिविल सेवा का मतलब होता था — समाज की बेहतरी के लिए समर्पित जीवन।

अब इसका अर्थ बदलता दिख रहा है। अब टॉपर्स बनने के बाद तुरंत यूट्यूब चैनल खोलना, इंस्टाग्राम पर 'Ask Me Anything' सेशन करना, कोचिंग ब्रांड्स के विज्ञापनों में चमकना, किताबें लिखना और मोटिवेशनल स्पीच देना, ट्रेंड बन गया है।

इसमें कोई बुराई नहीं है कि युवा अपनी सफलता का जश्न मनाएं या दूसरों को प्रेरित करें। लेकिन सवाल तब उठता है जब सेवा का भाव पीछे छूट जाए, और सेल्फ ब्रांडिंग ही प्राथमिक एजेंडा बन जाए।

जातीय राजनीति का नया अखाड़ा: UPSC

UPSC का स्वरूप अब राजनीतिक लाभ का भी माध्यम बनता दिख रहा है। अलग-अलग राजनीतिक विचारधाराएं, मीडिया हाउस और जातीय संगठन UPSC टॉपर्स को 'अपना' बताने की होड़ में लगे हैं।

कहीं ₹दलित गौरव₹ के नाम पर प्रचार हो रहा है, तो कहीं ₹सवर्ण शान₹ के नारे गढ़े जा रहे हैं। कोई ₹ओबीसी चमत्कार₹ कहता है, तो कोई ₹किसान पुत्री की उड़ान₹।

असल में इन सबमें एक साधारण सच्चाई गायब हो जाती है — मेहनत तो मेहनत होती है, न जाति देखती है, न मजहब, न वंश।

UPSC: एकमात्र ऐसी परीक्षा जो मूल्यों की कसौटी पर कसती है

UPSC भारतीय लोकतंत्र की एक दुर्लभ उपलब्धि है — जहां किसी जाति, धर्म, वर्ग से परे जाकर व्यक्ति के ज्ञान, समझ, सोच, तर्कशक्ति और निर्णय क्षमता को परखा जाता है। यह परीक्षा बार-बार साबित करती है कि देश के अंतिम छोर से भी प्रतिभाएं निकल सकती हैं।

लेकिन जब समाज खुद इस उपलब्धि को जातीय खांचों में तोड़ने लगे, तो यह लोकतंत्र की आत्मा पर एक आघात है।

असली संघर्ष और दिखावे का फर्क

असली संघर्ष वह है जो अनकहा रह जाता है। जो ग्रामीण बैकग्राउंड से आता है, लेकिन खुद को बेचने की कोशिश नहीं करता। जो सोशल मीडिया पर अपने फोटोशूट्स और 'कहानी' पोस्ट नहीं करता। जो अपनी सफलता को निजी संतोष समझता है, न कि व्यापारिक ब्रांड।

दूसरी ओर, जो संघर्ष को एक उत्पाद बना देता है, वही आज वायरल होता है। वही बड़ी-बड़ी कोचिंग कंपनियों के विज्ञापन में आता है। वही सोशल मीडिया स्टार बनता है।

आखिर सवाल वही — क्यों और किसके लिए?

क्या UPSC टॉपर्स बनने का मकसद अभी भी वही है — समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचना, न्याय का वितरण करना, प्रशासन में ईमानदारी लाना?

या फिर अब यह एक वैकल्पिक 'सेलिब्रिटी करियर' बन चुका है?

यह चिंतन आवश्यक है, वरना एक दिन सिविल सेवा भी पूरी तरह से एक ग्लैमर इंडस्ट्री में तब्दील हो जाएगी — जहां मूल्य नहीं, ब्रांडिंग चलेगी; जहां सेवा नहीं, सेल्फी चलेगी।

निष्कर्ष: सफलता को वर्गीकृत करने से बचें

देश को जरूरत है उन युवाओं की जो सफलता को अपने स्वार्थ से नहीं, अपने कर्तव्य से जोड़ें। जो जाति, धर्म या वर्ग से परे जाकर खुद को सिर्फ एक नागरिक के रूप में प्रस्तुत करें।

जो यह समझें कि UPSC परीक्षा से भी बड़ी परीक्षा आगे आने वाली है — जब प्रशासनिक पद पर बैठकर, बिना भेदभाव के, बिना प्रचार के, निष्पक्ष सेवा देनी होगी।

तभी इस देश का लोकतंत्र मजबूत रहेगा, और तब ही असली प्रतिभा का सम्मान होगा — बिना जाति, धर्म, पृष्ठभूमि के बंधन के।

भारत ने 17.1 मिलियन लोगों को ग़रीबी से बाहर निकाला (विश्व बैंक की ताज़ा रिपोर्ट -2025)

पहलगाम आतंकी हमले की बहुत ही दुखद खबर के बाद हाल ही में विश्व बैंक से एक अच्छी खबर आई है। यह खबर ग़रीबी उन्मूलन पर है। ग़रीबी वास्तव में एक बहुत बड़ी व ज्वलंत समस्या है। यदि हम यहां गरीबी की साधारण परिभाषा की बात करें तो बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त धन या संसाधनों की कमी होना, जैसे भोजन, कपड़े, और आवास ग़रीबी के अंतर्गत माना जाता है। ऐसी स्थितियों में एक आम आदमी को बुनियादी जरूरतों जैसे कि रोटी,कपड़ा, मकान, शिक्षा और स्वास्थ्य आदि को पूरा करने के लिए भी बहुत संघर्ष करना पड़ता है। दूसरे शब्दों में कहें तो गरीबी एक ऐसी स्थिति होती है जिसमें व्यक्ति, परिवार, या समुदाय के पास जीवनयापन के लिए या समृद्ध जीवन के लिए बुनियादी ज़रूरतें हासिल करने के पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं होते हैं। अमूमन गरीबी को तीन प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है, जिनमें क्रमशः निरपेक्ष, सापेक्ष और बहु-आयामी गरीबी को शामिल किया जा सकता है। यदि हम यहां निरपेक्ष गरीबी की बात करें तो एक निश्चित आय स्तर से नीचे होना इसमें आता है। वहीं सापेक्ष गरीबी समाज में अन्य लोगों की तुलना में गरीब होने को शामिल करती है तथा बहुआयामी गरीबी आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय पहलुओं के अभाव को शामिल करती है। बहरहाल, अच्छी खबर यह है कि 10 साल में भारत के 17 करोड़ लोग अत्यंत गरीबी से बाहर निकले हैं। पाठकों को बताता चलूं कि वर्ल्ड बैंक के मुताबिक, भारत ने वर्ष 2011-12 से वर्ष 2022-23 के बीच 17 करोड़ से ज्यादा लोगों को अत्यधिक गरीबी से बाहर निकाला है और इस दौरान अत्यधिक गरीबी की दर 16.2 प्रतिशत से घटकर मात्र 2.3 प्रतिशत ही रह गई है।इस दौरान, 171 मिलियन या 17.1 करोड़ लोगों को अत्यधिक गरीबी से बाहर निकाला गया है। तात्पर्य यह है कि भारत में 171 मिलियन लोग गरीबी रेखा से ऊपर हैं। ग्रामीण और शहरी इलाकों में गरीबी में भी बड़ी गिरावट देखी गई है। रिपोर्ट बताती है कि ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यधिक गरीबी दर 18.4 प्रतिशत से घटकर जहां 2.8 प्रतिशत रह गई है, वहीं दूसरी ओर शहरी क्षेत्रों में यह 10.7 प्रतिशत से घटकर 1.1 प्रतिशत रह गई है। इससे ग्रामीण और शहरी इलाकों के बीच का अंतर 7.7 प्रतिशत से घटाकर 1.7 प्रतिशत रह गया है, जो सालाना 16 प्रतिशत की गिरावट है। दरअसल, 37.8 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं, जो कि जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा है और यह काबिले-तारीफ है कि भारत ग़रीबी उन्मूलन की दिशा में लगातार आगे बढ़ रहा है। दरअसल,वर्ल्ड बैंक की हालिया 'पॉवर्टी एंड इक्विटी ब्रीफ' रिपोर्ट में इस बात का खुलासा

हुआ है। यहां पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि भारत ने इस दौरान निम्न-मध्यम आय वर्ग में भी प्रवेश किया है। 3.65 अमेरिकी डॉलर प्रति दिन आय के आधार पर गरीबी की दर 61.8 प्रतिशत से घटकर 28.1 प्रतिशत रह गई है, जिससे 378 मिलियन या 37.8 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं। यूएसडी (USD) 3.65 प्रति दिन की गरीबी रेखा के अनुसार, गरीबी 61.8% से घटकर 28.1% हो गई है, जिससे 37.8 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आ गए हैं। ग्रामीण गरीबी 69% से घटकर 32.5% हो गई, और शहरी गरीबी 43.5% से घटकर 17.2% हो गई, जिससे ग्रामीण-शहरी अंतर 25 से 15 प्रतिशत अंक तक कम हो गया, जिसमें 7% की वार्षिक गिरावट आई है।भारत के पांच सबसे अधिक जनसंख्या वाले राज्य—उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार, पश्चिम बंगाल, और मध्य प्रदेश—ने 2022-23 तक अत्यधिक गरीबी में दो-तिहाई की गिरावट में योगदान दिया है।हालांकि, अब भी इन राज्यों भारत की 54 प्रतिशत अत्यधिक गरीब आबादी है और 51% बहुआयामी गरीब आबादी का हिस्सा हैं।रिपोर्ट में यह बात सामने आई है कि वर्ष 2019-21 तक नॉन मोनेटरी गरीबी दर 53.8 प्रतिशत से घटकर 16.4 प्रतिशत रह गई है। इतना ही नहीं, रोजगार वृद्धि ने भी कामकाजी उम्र की जनसंख्या को पार कर लिया है तथा शहरों में बेरोजगारी 6.6 प्रतिशत पर पहुंच गई है, जो वर्ष 2017-18 के बाद से सबसे कम है। युवा बेरोजगारी दर 13.3 प्रतिशत है।कृषि सेक्टर में रोजगार अब भी अधिकांश रूप से असंगठित है।हालांकि, स्वरोजगार और महिलाओं की रोजगार दर में वृद्धि हो रही है। बहरहाल, यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आज भारत लगातार हर क्षेत्र में प्रगति कर रहा है। सच तो यह है कि ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में गरीबी में भारी कमी, रोजगार के नए अवसरों का सृजन, और भारत का निम्न-मध्यम आय वर्ग में कदम रखना—यह सब हमारे देश की प्रगति, इसके उन्नयन को ही दर्शाता है। यही कारण है कि आज भारत में 171 मिलियन लोग गरीबी रेखा से ऊपर पहुंच चुके हैं।हालांकि, कुछ राज्यों में अभी भी गरीबी एक बड़ी समस्या है तथा युवाओं में बेरोजगारी एक चिंता का विषय है, लेकिन महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं।यहां यह उल्लेखनीय है कि अत्यधिक गरीबी को प्रतिदिन 2.15 अमेरिकी डॉलर से कम आय के रूप में परिभाषित किया गया है। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि सुधारों के बावजूद, अभी भी कुछ चुनौतियां मौजूद हैं।मसलन, रिपोर्ट में यह बात कही गई है कि युवाओं में बेरोजगारी 13.3% है, और उच्च शिक्षा प्राप्त स्नातकों में यह दर 29% तक बढ़ जाती है। गैर-कृषि वेतनभोगी नौकरियों में से केवल 23% ही औपचारिक हैं और कृषि रोजगार का एक बड़ा हिस्सा अनौपचारिक है। इसके अलावा, स्व-रोजगार बढ़ रहा है, खासकर ग्रामीण श्रमिकों और महिलाओं में, लेकिन लैंगिक असमानताएं अभी भी मौजूद हैं, क्योंकि पुरुषों की तुलना में 23.4 करोड़ अधिक महिलाएं वेतनभोगी काम कर रही हैं। बहरहाल, यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि विश्व बैंक की गरीबी और इक्विटी ब्रीफ 100 से अधिक विकासशील देशों में गरीबी, साझा समृद्धि और असमानता के रुझानों के बारे में जानकारी प्रदान करती है तथा ये ब्रीफ साल में दो बार जारी किए जाते हैं और विश्व स्तर पर गरीबी कम करने के प्रयासों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण संसाधन हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो विश्व बैंक के गरीबी और समानता संबंधी संक्षिप्त विवरण 100 से अधिक विकासशील देशों में गरीबी, साझा समृद्धि और असमानता के रुझानों पर प्रकाश डालते हैं। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि गरीबी खराब स्वास्थ्य, कम जीवन प्रत्याशा, शिक्षा का अभाव, और भेदभाव को जन्म देती है। यदि हम यहां दुनिया के सबसे ग़रीब देशों की बात करें तो इनमें क्रमशः दक्षिण सूडान, बुरुंडी, मध्य अफ्रीकी गणराज्य, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य, मोज़ाम्बिक, नाइजर, मलावी, लाइबेरिया,मेडागास्कर और यमन को शामिल किया जा सकता है। वास्तव में ये देश राजनीतिक अस्थिरता, संघर्ष (युद्ध और हिंसा), बेरोजगारी, प्राकृतिक संसाधनों एवं शिक्षा-स्वास्थ्य की कमी के कारण गरीब हैं। वास्तव में कहना ग़लत नहीं होगा कि भ्रष्टाचार भी एक बहुत अमीर देश को गरीब बना सकता है और शोषणकारी उपनिवेशवाद, कमजोर कानून व्यवस्था, युद्ध और सामाजिक अशांति, गंभीर जलवायु परिस्थितियाँ या शत्रुतापूर्ण, आक्रामक पड़ोसियों का इतिहास भी ऐसा ही कर सकता है। हाल फिलहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि भारत में 171 मिलियन लोगों का अत्यधिक गरीबी से बाहर आना पिछले दशक की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक है। वास्तव में यह हमारे देश की समावेशी विकास के प्रति प्रतिबद्धता का प्रमाण है। आज सरकार ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों पर बराबर ध्यान दे रही है। आज हमारे देश ने विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं जैसे कि बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, स्वच्छ भारत मिशन, पीएम मुद्रा योजना, अटल पेंशन योजना, स्मार्ट सिटी योजना और मेक इन इंडिया आदि, आर्थिक सुधारों और आवश्यक सेवाओं तक पहुँच में वृद्धि के माध्यम से, गरीबी के स्तर को कम करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है। आज उदारीकरण से सरकारी नियंत्रण कम हुआ है और निजी क्षेत्र को बढ़ावा मिला है। भारत की वैश्वीकरण नितियों से भारत विश्व व्यापार में शामिल हुआ है और विदेशी निवेश को आकर्षित किया है, जिससे रोजगार सृजन हुआ है और ग़रीबी कम हुई है। सच तो यह है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में तेजी से विकास हुआ, फायदों की वृद्धि हुई, विदेशी निवेश बढ़ा, और भारतीय अर्थव्यवस्था वैश्विक अर्थव्यवस्था में एकीकृत हुई है। पिछले कुछ सालों से रोज़गार सृजन कार्यक्रम, आय समर्थन कार्यक्रम, रोज़गार गारंटी तथा आवास योजना, प्रधानमंत्री जन धन योजना जैसे कार्यक्रमों से भारत विकास के सोपानों को लगातार छू रहा है। भारत में लगातार शिक्षा, स्वास्थ्य की उपलब्धता हर गांव ढ़ाणी में सुनिश्चित हुई है। महिलाओं के सशक्तीकरण से आर्थिक असमानता दूर हुई है तथा पोषण और स्वच्छता कार्यक्रमों से हम प्रगति के पथ पर अग्रसर हैं। संसाधनों और सेवाओं तक समान पहुंच सुनिश्चित होने से विकास को पंख लगे हैं। वास्तव में उच्चतम और निम्न-मध्यम आय वाली गरीबी में तेज गिरावट, साथ ही ग्रामीण-शहरी गरीबी के अंतर में कमी, भारत सरकार के प्रभावी प्रयासों को दर्शाती है। इसके अतिरिक्त, रोजगार में वृद्धि, विशेष रूप से महिलाओं के बीच और बहुआयामी गरीबी में कमी जीवन स्तर में व्यापक सुधार की ओर इशारा करती है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार,

मारवाड़ी युवा मंच पर्ल महिला शाखा सिकंदराबाद द्वारा आमरस वितरण किया गया

जगदीश सीरवी

हैदराबाद। सिकंदराबाद शाखा मंत्री सुमन घोड़ेला द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार शाखा की अध्यक्षा शीतल जैन की अध्यक्षता में नियर महाकाली टेंपल के अपोजिट बटरफ्लाई बकरी के पास राष्ट्रीय प्रकल्प अमृतधारा के तहत आमरस का कार्यक्रम रखा गया ! इस कड़ी धूप में राहे चलते 2000 राहगीरों ने इसका आनंद लिया ! इस कार्यक्रम के लाभार्थी शाखा की सदस्या सीता गांधी, मंजू गांधी, मोना वर्मा, सोनू वर्मा, प्रीति सोनी ,ममता पीरगल, पायल मेहता,शीला धोखा और अर्चना बोरा की तरफ से रखा गया था ! इस कार्यक्रम को सफल बनाने में पूनम बोहरा, मंजू घोड़ेला,सुनीता डूंगरवाल, वीना जैन, पुष्पा कोठारी, ललिता लोहार, संतोष चौहान, संतोष कोठारी, खुशी कोठारी,उर्मिला धाला,माया राठौर, युवान जैन, हार्दिक जैन, देवांश सोनी, वंश सोनी, द्रव्य सोनी, ध्रुव सोनी और भव्य सोनी का विषय संयोग रहा।। शाखा की अमृत धारा संयोजिका शीतल मनोत ने सभी का तहे दिल से आभार व्यक्त किया ।। इस कार्यक्रम में सिकंदराबाद शाखा के वरिष्ठ सदस्य नारायण छावड़ा का सराहनीय सहयोग रहा।।

ज्ञान का अर्थ यह जान लेना हैं कि जगत/संसार स्वप्नवत हैं, मात्र आभास मात्र हैं

संसार मिटता नही, संसार स्वप्नवत हो जाता हैं, जैसे एक सीधी लकड़ी को पानी में डाल दें, तो वो लकड़ी तिरछी दिखाई देने लगती है। हम जानते हैं कि लकड़ी सीधी है, पानी से बाहर निकाल कर, पता चलता है कि सीधी है। फिर पानी में डालकर देखें तो फिर से तिरछी ही दिखाई पड़ती है। सब भांति भरोसा करके भी तिरछी दिखती है तो यह आभास/माया/भ्रम ही है। ध्यान रहे कि यह प्रकाश के नियमों के कारण तिरछी दिखाई पड़ती है, हवा के और पानी के विभेद के माध्यम में अंतर पड़ता है, इसलिए तिरछी दिखाई पड़ती है। बिल्कुल ऐसे ही यह जगत होते हुए भी आभास मात्र दिखाई देता हैं ज्ञानी को। और संसार है, ऐसा अज्ञान धुमिल हो जाता है।

लहू पुकार रहा नहीं मिलेगी खीर ...!

आज सुनाई दे रही हैं पहलगाम की चीख,
हाँ, दिन ऐसा आएगा आतंकी मांगे भीख।
निर्दोषो की बलि चढ़ी हैं बही लहू की धार,
हैवानों ने पर्यटकों की इज़्ज़त की तार-तार।
इन श्वानों ने ली हैं परीक्षा हमारी बार-बार,
कल्पना से ज्यादा सज़ा कर उठे चित्कार।

आज सुनाई दे रही हैं पहलगाम की चीख,
हाँ, दिन ऐसा आएगा आतंकी मांगे भीख।
उजड़े हुए सुहाग की कीमत मांगे हिंदुस्तान,
दाना-पानी को तरसेगा प्रतिदिन पाकिस्तान।
पुलवामा से नहीं शायद ली कोई भी सीख,
दुनियाभर से मांग रहा कटोरा लेकर भीख।

आज सुनाई दे रही हैं पहलगाम की चीख,
हाँ, दिन ऐसा आएगा आतंकी मांगे भीख।
ऐसा सबक सिखाओ मोदी-शाह-राजनाथ,
दरदर भटके न मिले पनाह मलते रहें हाथ।
हाँ, लेना है प्रतिशोध जन-जन हुआ अधीर,
आज तो लहू पुकार रहा नहीं मिलेगी खीर।

संजय एम तराणेकर

गौ माता की पूजा का कार्यक्रम

जगदीश सीरवी

सौभाग्य दुर्गा देवी मंदिर डी पोचमपल्ली डुंडीगल नगर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ गो सेवा विभाग के द्वारा भूमि पूजन एवं गौमाता पूजन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विधि विधान से धूप-दीप, अक्षत, रोली, गुड़ आदि वस्त्र तथा जल से गाय का पूजन किया गया है और धूप-दीप से आरती उतारी गई ,इसके बाद सभी ने गौ माता को घास, फल, मिठाई और गुड़ का भोग लगाया। इस कार्यक्रम में उपस्थित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ डुंडीगल नगर गो सेवा प्रमुख मंगलाराम मुलेवा मुख्य शिक्षक, मधु गौड, विभाग सेवा प्रमुख वेंकटेश साथ में मोहन रेड्डी, स्वामी नागेश्वर राव किशोर ,बरफा,प्रकाश प्रजापत, तानिस मुलेवा, सभी ने माता की रक्षा का संकल्प लिए गया,

पुलिस के पीछा करने पर दो पिकअप ट्रक पलटे, चालक की मौत, तीन गायें मरीं

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : दो अवैध मवेशियों को ले जा रहा एक पिकअप ट्रक, जिसका पुलिस पीछा कर रही थी, भद्रक-अखंडलमनी राज्य राजमार्ग पर असुराली में दुर्घटनाग्रस्त हो गया। एक चालक की मौत हो गई तथा तीन गायें घायल हो गईं। दो वाहनों से 27 गायों को बचाया गया है।धामनगर पुलिस को दो पिकअप वैन में मवेशियों को ले जाए जाने की सूचना मिली थी।जानकारी के अनुसार, धामनगर पुलिस को शनिवार देर रात सूचना मिली कि दो पिकअप वैन में मवेशी ले जाए जा रहे हैं। धामनगर और धुसुरी थाना पुलिस ने संयुक्त रूप से मवेशी गाड़ी का पीछा किया। पुलिस से बचकर भागने की कोशिश कर रहे चालक ने तेज गति से वाहन चलाते समय अपना नियंत्रण खो दिया और असुराली में वाहन एक पेड़ से टकरा गया। दुर्घटना में एक ड्राइवर और तीन गायों की मौत हो गई। एक चालक गिर गया और उसके साथी भाग गए। पुलिस और स्थानीय लोगों ने 27 गायों को बुरी हालत में बचाया और उन्हें स्थानीय गौशाला में छोड़ दिया। पुलिस ने दो पिकअप ट्रक जब्त कर लिए हैं। इस घटना को लेकर व्यापक आक्रोश है।

मारवाड़ी युवा मंच द्वारा गौमाता की सेवा की

सिकंदराबाद शाखा द्वारा अमावस्या के दिन गौमाता की सेवा का लाभ लिया गया ! शाखा मंत्री पन्नालाल भाटी द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार सिकंदराबाद शाखा अध्यक्ष पंकज राठौड़ कि अध्यक्षता में यह कार्यक्रम हुआ,इस सेवा में पधारे पूर्व अध्यक्ष नवरंगलाल सैनी, वरिष्ठ नारायण लाल चावड़ा, दिनेश गैहलोत, रोहित कुमार मायछ,रमेश प्रजापत, कैलाश वैष्णव, हरीश माली, गोतम भायल, राजेश व्यास, महेंद्र राव , गजेंद्र सिंह ,नरपतसिंह भाटी, सुरेश राव,मंगलाराम चौधरी, वगताराम, सरवन प्रजापत,आदि दान पुण्य का लाभ लिया।इस कार्यक्रम में सिकंदराबाद पर्ल शाखा संरक्षिका अन्नपुर्णा मायछ का भी योगदान रहा आज का प्रोग्राम शानदार रहा इसमें गायों के लिए हरी सब्जियां हरा गास और चापड़ कि व्यवस्था शाखा के सदस्यों द्वारा कि गई ।सेवा में पधारे हुए सभी गौभक्त। संयोजक संदीप घोडेला ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

झारखंड मे भाषाई अल्पसंख्य ओड़िया,70 वर्षों से उनके संवैधानिक पद का श्रृजन तक नही !

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

सिंहभूम, दो स्वतन्त्र ओड़िया देशी रियासत कालान्तर मे ओडिशा का राजस्व जिला फिर बिहार मे पिछड़ा अनुमंडल, जहां लोगों की भाषा संस्कृति लुट चुकी है ,ऐसे में मधुसूदन दास का जन्मदिन जो ओडिशा के ओड़िया जनमानस में अधिवक्ता दिवस के रूप में जाता आज न्याय से वंचित है। अल्पसंख्यक के रूप मे रह रहे झारखंड में ओडिया अधिकारी के उस पद का आजतक सृजन नहीं हो पाया है जो समय समय पर महामहिम राष्ट्रपति को उनकी समस्या ,हालात पर रिपोर्ट कर सकें, समस्या को निराकरण कर सकें।

यह आश्चर्य पर कटु सत्य विगत सत्तर वर्षों के बिहार- झारखंड माटी में बसे ओड़िया जनता के लिए जिनकी संवैधानिक अधिकार का हनन होता आया है।

उत्कल गौरव मधुबाबू यह नाम अतीत का ऐतिहासिक संघर्ष बहुत कुछ याद दिलाता पर आज अपने ही माटी सिंहभूम समेत अनेक जिलों में ओडिया उपेक्षित हैं झारखंड प्रदेश में। एस आर सी की उस रिपोर्ट जो बाद में संविधान संशोधन कर कानून तो बना पर तदनुरूप आज तक ओड़िआ आयुक्त/अधिकारी पद सृजित हो नहीं पाई नाही भाषाई अल्पसंख्यक रहे ओडिया लोगों की समस्या का रिपोर्टिंग महामहिम तक पहुंची। झारखंड की ओड़िया -जहां उनके हितों की धज्जियां उड़ाई जाती रही है हर आयी गयी सरकारों में।

फिर आगे देखे, झारखंड के इन ओडिया लोगों को भाषाई अल्पसंख्य का दर्जा उस दिन मिल जाना चाहिए था जिस दिन झारखंड का विधिवत गठन हुआ, २००० में । परन्तु ओड़िया को दुशरी राजभाषा का दर्जा मिलते मिलते एक दशक से भी अधिक समय यानी सितंबर, २०११लग गये झारखंड सरकार को।प्रथम मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी को क्या यह नहीं मालुम था कि झारखंड गठन के समय सरायकेला खरसावां को लेकर ओडिशा विधानसभा से लेकर लोकसभा में किस प्रकार गरम बहसबाजी चली थी। क्षेत्र को पुन: ओडिशा को लौटाने हेतु। फिर झारखंड गद्दी के लिए राजनीति उथल पुथल घमासान चलाई जाती है राजनेताओं द्वारा। विधानसभा तक ऐडजोन हो जाता।

तब आते है इसी खरसावां के विधायक अर्जुन मुंडा मुख्यमंत्री के कुर्सी पर। सत्तासीन तो हुए पर अपने लोगों की बात उनकी भाषा संस्कृति या ओडिया उत्थान की बात केवल फाईलों तक सीमित रह जाती है। ये केंद्र तुष्टीकरण नीति धारी राजनीति में अपनी वर्चस्व को सीमित रखने हेतु हर कार्य करते गये !

खरसावां के विधायक होते हुए अर्जुन मुंडा को झारखंड का दुशरा राजभाषा ओडिया को नोटिफिकेशन लाकर बताने में दशकों लगा गये थे तब। उन्होंने सितंबर २०११ मे इसे झारखंड

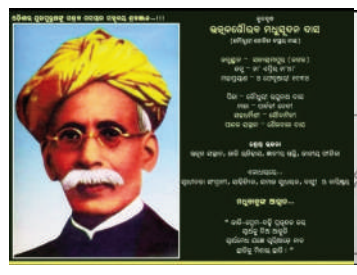

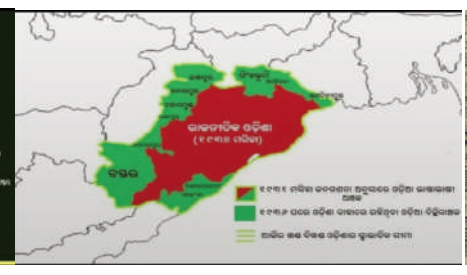

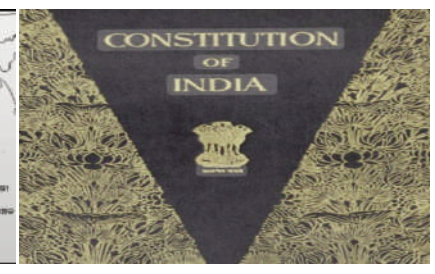

का राजभाषा तब बनाया जब अन्य कुछ भाषा झारखंड की राजभाषा बनी। पर आज मौजूदा सरकार में ओडिया अल्पसंख्यक पद खाली पड़ा है, बात आप हम सबसे अछूता नहीं है।

पर झारखंड सरकार को जानना चाहिए कि बिहार ने सरायकेला खरसावां को जबरन 18 म ई 1948 को एक वर्ष के लिए बिहार में लिया था जिसे उसने आजतक लौटाया नहीं है उसके मूल प्रदेश को। उससे पूर्व 1936 में जब बिहार से ओडिशा अलग हुआ तब बिहार ओडिशा व्यवस्थापक सभा में लगभग दर्जनों भर सदस्य थे ओडिया। फिर कैसे ओड़िया भाषियों का सिंहभूम को जबरन बिहार में लाया गया था, क्या षड्यंत्रकारी थी सरकार तब ? ये इलाका मूलत: ओडिशा का अंग रहा एवं ओड़िया बहुल क्षेत्र भी । पर आज किसी भी सरकारी कार्यालयों, विद्यालयों यहां तक की तीनों जिलों के जनसंपर्क कार्यालयों में कहीं भी ओडिया में एक शब्द तक नहीं है, यद्यपि जनता आज भी ओडिया ारही बात झारखंड मे दुशरी राजभाषा आगे राज्य पुनर्गठन आयोग के प्रावधानों के अनुसार कम है कम झारखंड में एक ओड़िआ उच्च अधिकारी होने चाहिए। ये प्रावधान 1956का जो संविधान संसोधन होकर कानुन है, पर उसकी भी आज तक बहाली नहीं हो पायी आखिर क्यों ? जिन्हें नियमत राष्ट्रपति को रिपोर्ट भेजना होता है। ओड़िया राष्ट्रपति पर ओडिया को उनका अधिकार से कौन वंचित किये हुए हैं। यह अति गंभीर मुद्दा है। आजके मधुबाबू जयंती पर ओड़िआ लोगों के लिए।

इससे भी गंभीर मुद्दा आज अल्पसंख्यक कल्याण उपाध्यक्ष ओड़िया पद भी वर्षों से खाली पड़ा है राज्य सरकार का। जबकि सन 1977तक बिहार विधानसभा में ओडिया विधायक गण हुआ करते थे इसी इलाके से। तो क्या झारखंड एक ऐसा राज्य है जहां उसके जमीन पर बसने वाली जनता की एक बिरादरी को उनके संवैधानिक अधिकार से संचित वंचित कर रखा जा रहा है ?

वैसे नियमावली में हम देखें तो भारत के क्षेत्र या उसके किसी भाग में रहने वाले व्यक्तियों के समूह या समूहों के रूप में माना जाता है, जिनकी अपनी एक अलग भाषा या लिपि होती है। यद्यपि भारत के संविधान में भाषाई अल्पसंख्यक शब्द को परिभाषित नहीं किया गया है, लेकिन अल्पसंख्यक समूह की भाषा संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित बाईस भाषाओं में से एक होना आवश्यक नहीं है। संक्षेप में, राज्य स्तर पर भाषाई अल्पसंख्यकों का अर्थ है ऐसे लोगों का समूह या समूह जिनकी मातृभाषा राज्य की मुख्य भाषा से भिन्न है, और जिला और तालुका/तहसील स्तर पर, संबंधित जिले या तालुका/तहसील की मुख्य भाषा से भिन्न है। इसलिए, राज्य पुनर्गठन आयोग (एसआरसी) 1956 ने भाषाई अल्पसंख्यकों की शिकायतों को दूर करने के लिए एक तंत्र बनाने की सिफारिश की। एसआरसी की सिफारिशों के आधार पर, 7वां संविधान (संशोधन) अधिनियम, 1957 अधिनियमित किया गया, जिसके तहत संविधान में अनुच्छेद 350 ए और बी को शामिल किया गया। अनुच्छेद 350-बी भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए एक विशेष अधिकारी का प्रावधान करता है, जिसे भारत में भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए आयुक्त (सीएलएम) के रूप में जाना जाता है, जो संविधान के तहत भारत में भाषाई अल्पसंख्यकों के लिए प्रदान किए गए सुरक्षा उपायों से संबंधित सभी मामलों की जांच करेगा और राष्ट्रपति को उन मामलों पर ऐसे अंतरालों पर रिपोर्ट करेगा जैसा कि राष्ट्रपति निर्देश दें और राष्ट्रपति ऐसी सभी रिपोर्टों को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखवाएगा और संबंधित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की सरकारों/प्रशासनों को भेजेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com (इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023